नगर जिल्हे के पुणतांबे गाँव मे मेरा जन्म हुआ था। श्री रामचंद्र इस व्यवसाय के कारण मुझे मराठी लोक तमिळनाडु समझते है। पर इसका मुझे विरोध नही है। लेकीन इसका मुझे दु:ख है। गाँव पुणतांबे और सरनेम चितळकर ये गौडबंगाल से दुर नही है। चितळी नाम का यह गाँव पुणतांबे गाँव के पास ही है। चितळी गाँव के ब्राम्हण पुणतांबे गाँव मे रहे होंगे, लेकीन गाँव बदल गया तो भी मुख्य गाँव का नाम सरनेम में रह गया. इतनाही।

पुणतांबे गाँव के ब्राम्हण प्रसिध्द थे। शास्त्रो में उन्हे पंडीत कहकर बडे लोंगो के घर बुलाया जाता था। मेरे पुरे परिवार मे यह निपुणता मुझे किसी मे नही दिखाई दी। मेरे पिताजी रेल्वे मे नौकरी करते थे। पूजा अर्चना करते मैने उन्हे कभी नही देखा।

मेरे पिताजी दुबले पतले और ऊँचे थे। भाषा भी अच्छी थी। मुझे लगता है वे इंग्लीश भी जानते थे। जब मेरा जन्म हुवा था तब वे करीब ४० साल के थे। उनका स्वभाव खुशमिजाज था। दो पत्नी होने का उन्हे कभी कोई टेन्शन नही था।

मेरा नाम राम है लेकीन कृष्ण के समान दो मात का बेटा हुं। एक ने मुझे जन्म दिया तो दुसरी ने मुझे पाला है। मेरी बडी माँ का नाम भागीरथी था। उसे तिन बेटे थे। लेकीन वह मेराही ला प्यार करती थी। मेरी जन्म देनीवाली माँ मुझे जन्म दिया तबही से मुझे छोड दिया क्या पता नही।

एक बात उसनेही मुझे बताई। मेरे पहले मेरी माँ को ४-५ बेटे हुए थे। लेकीन उसे बेटी का शौक था। घागरा ओढणी पहनकर गुडीया गुड्डी खेलनेवाली, घर के काम मे मदत करनेवाली बेटी उसे पसंद थी। हिंदु औरते बेटो केलिए मन्नत करती, पर मेरी माँ को बेटी चाहीए थी। राह देख रहे मनिऑर्डर की और हाथ में व्ही।पी।का लिफाफा ऐसा हाल था उसका। पौष महिने की अमावस्या को मेरा जन्म हुआ। चंद्रमुखी कन्या की आस थी, आँखे खोली सामने मै था। बेटी ही क्यो हुआ? यह मेरे जन्म होते ही शब्द मेरे कान पर सुनाये दिये होंगे। अच्छा हुआ जन्मत: इस बात की समझ नही रहती। नही तो मेरा बाकी सारा जिवन अफसोस मे बिताना पडता।

मेरा जन्म हुआ और दोन दिन के बाद संक्रंत थी। मुझे ऐसा लगता है, बुखार की सात भी तब शुरु थी। मेरा जन्म कोई शुभ घडी मे नही हुआ था।

'माँ ' इस विषय पर गौरवगित नही लिखनेवाला कवी मिलना कठीण है। माँ इस नाते से दुर रहनेवाला लेखक जग मे कोई भी भाषा में नही हुआ होगा। मै एक भारतीय ऐसा हुं जिसे माँ की ममता कभी भी समझी नही। मिली नही। ऐसा मै नही कह सकता। भाग्य लिखना सिर्फ भगवान के हाथ मे है।

यह सच है की माँ की ममता मुझे मेरी सौतेली माँ ने बहकर जाए इतना प्यार उन्होने मुझे दिया। मेरा जन्म हुआ था, तब बडी माँ की आँखे कमजोर हो गई थी। उसे दिखाई नही देता इसलिए पिताजी ने दुसरी शादी की थी। शायद सौतेली माँ को मिलनेवाला सुख बडी माँ को बिलकुल दिखाई नही देता था। इसलीए वह सुखी थी। मेरी माँ मेरी पिताजी की बडी प्यारी थी ऐसा नही था। उन्हे मेरी बडी माँ पर ज्यादा विश्वास था। घर मे कर्ताधर्ता मेरी बडी माँ ही थी। मेरी सगी माँ का उसने कभी दुर्भाव नही किया।

मेरे पिताजी का संसार बेसुरा था ऐसा नही था। लेकीन उनके जिंदगी के गाणे बेसुरे थे। इसमे कोई शंका नही थी। मैने भलेही माँ का सोया उसी की गोद मे। मेरी ताळु भी उसकी ममता भरी उंगली ने, मेरी गरदन संभली तो उसी के हाथो मे, मुझे संभालने की जबाबदारी बडी खुशी से निभायी। बडी माँ के साथ हमेशा रहना शायद मेरी नसीब मे नही था। जब मै ९ साल का था तब मेरी बडी माँ भगवान के पास चली गई। मेरी माँ होकर भी मुझे बिना माँ के जिना पडा। मुझे माँ की याद आई तो भी याद करु तो सौतेली माँ को। भगवान की दया से मेरी माँ आज भी जिंदा है। पर माँ की ममता तो सिर्फ मुझे बडी माँ से मिली है इसमे कोई शक नही।

मै एक महिने का था तब हमे पुणतांबा यह गाँव छोडना पडा और पिताजी की नौकरी थी उस गांव जाना पडा। उस गाँव का नाम था डोंगरगड। मेरा बचपन इस गाँव मे गुजरा। स्टेशनमास्टर के घर मे संगित थोडेही सुनायी देगा? रेलगाडी की आवाज और शिटी यही उनके घर का संगित।

निसर्ग की कृपा थी, उस डोंगरगडपर चारो ओर से हरेभरे पहाडो से घिरा हुआ यह गाँव जैसे निसर्ग के गोद मे ही बैठा है। वहा पर इन पहाडो मे बहनेवाली हवा में एक प्रकार का मिला संगीत है। असंख्य तितली और पशुपक्षी की आवाजे इन झाडीयाँ मे से आती।

मेरी बडी माँ हरदम मेरे पास रहती। ऐसा नही था वह कभी छोटे भाई नौकरी रही वहाँ जाती, कभी पुणतांबे को जाती कभी हमारे घर आती।

वह हमारे घर आई की हमारे घर मे रौनक आ जाती। बडी माँ आई तो रसोई घर उसी के हाथ मे आ जाती। उसे कम दिखाई देता इसका फायदा मै बहोत उठाता था।

मुझे घी बहोत अच्छा लगता। मै खाना खाने बैठा, तो वह मेरे सामने बैठती और ये ले बोले, ऐसा कहकर मुझे खाना खिलाती। घी यह उडेलकर लेनेवाली चीज नही, लेकीन मै पुरा डब्बा उडल लेता था।

माँ बोलती थी 'राम, भात लोगे तब लेना। मै बोलता, हाँ '

माँ बोलती, 'चम्मच भर ही घी लेना। उस पर उस आज्ञा का मै उसके कहने से पहले ही कर लेता। मुझे यह सब आज भी याद आता है और आँखे भर आती है। मेरी बडी माँ ने मुझे बडा होते हुए नही देखा। मेरी आज की परिस्थिती अगर बडी माँ रहती तो मै उसकी आँखे वापस लाकर देता। मेरी बडी माँ कहती आज राम कर्ज से मुक्त

हो गया। यह एक गीत क्या सच्चाई रहती। एखादी चि बनाना हो तो उसमे से संगीत का साक्षात्कार हो गया होता। आज मै कह सकता हुं की, बडी मॉ के रहनसहन मे एक संगीत था। बोलने मे एक संगीत था। मै भावना मे बहकर यह सब लिख रहा हुं। ऐसा नही है। जब कुछ बहोत अच्छा होता था, फीर बहोत बुरा होता, तब बडी मॉ की बहोत याद आती है। आँखे भर आती मेरे पिताजी को संगीत का शौक था। कभी कभी वे अपनी बेसुरी आवाज मे कुछ गाते थे। उनके मुंह मे गाने रहते थे। नाटक के। मुझे याद है, चंद्रकांता एक राजा की कन्या यह गित अकसर गाया करते थे। यह गाते समय वे दो शब्द ज्यादा लगाते थे। चंद्रकांता एक राजा की कन्या सुंदर रुपवान। ऐसा वो जोर-जोर से गाते थे। ऐसा वो क्यों गाते थे वह तो मुझे आज समझ में आया ना कल आएगाँ। नाटक के गाणे के साथ लावणी गाने का भी शौक था उन्हे। पुजा के समय सवला पहनने के बाद भी कभी-कभी वे गाते,

"तुम कौन हों?

मै तो डोंगरवाली।

यहाँ क्यों आई?"

कौनसे हिरो-हिरोईन का यह गाना है यह मुझे पता नही। स्तोत्र बोलना इतनी सरलता से वे यह बोलते थे।

पिताजी की नौकरी के कारण मेरे बचपन डोंगरगढ, नागपुर, विलासपुर, गोंदिया इत्यादी गाँव में बिता। फिरते-फिरते बचपन चला गया। बचपन के साथ थोडी समझदारी भि आ गई। सरपर जंगल की लकडी का बोझा रखकर शाम के समय डोंगरगढ की गोंडीन के गाने मन को भी लगे। वह गाने सुनने के लिए मै चुपचाप खडे रहना पिताजी को मानो के नापसंद है। मुझे नही समझते लेकीन गोंडीन का गाना मुझे बहुत पसंद आता।

मेरी माँ आज भी कहती है की, मुझे गाना बहुत पसंद है। किसी का भी गाने सुरु है तो मै रोना शुरु कर देता। दुनिया के बच्चे माँ की लोरी सुनकर सोते है, लेकीन मै लोरी सुनकर रोना शुरु कर देता था।

सच क्या और झुठ क्या यह तो भगवान को मालुम उम्र के पाँचवे-छटे साल में गोंडीन की जंगल में सुने हुए गाने मुझे आज भी कान में सुनाई दउेते है। उसमे का एक भी शब्द मुझे याद नही। कुछ कुछ याद है, लेकीन उसे गाने का मजा आज भी मुझे याद आता है। लोगों के गाने और फोनोग्राफीपर चुडीयों की आवाज सुनकर पता नही मै क्यों रोता था। या फीर मेरा रोना कुछ कारणवश है।

मै छ:-सात साल का था, तब फीर से मेरा परिवार डोंगरगढ में रहने आ गया। मेरे पिताजी ने मुझे प्राथमिक स्कुल में डाल दिया। मरी पढाई शुरु हो गई। सभी बच्चों की पढाई चलती वैसी मेरी भी पढाई चालु हो गई।

ईसी समय मेंरे पिताजी ने मुझे मजाकसे कहां 'चल राम!

कहाँ?

'देखने के लिए'

क्यां?

' चल तो सही'

बडी माँ नही रही तो उनकी जगहा पिताजी लेते थे। वो मुझ से बहोत प्यार करते थे। बाकी के भाई बहन की जलन होती थी की, पिताजी के साथ गया।

एक बडे मैदान में हजारों लोग जमा थे। बीच में तमाशा चालु था और तालशर के बडे बडे वाद्य वहाँ पर बज रहे थे। गॅस बत्ती के उजाले में एक औरत सज धज कर नांच रही थी। बाकी लोंग उसे साथ दे रहे थे। लोंगो ने मेंरे पिताजी को रस्ता दिया। हम सबसे आगे जा बैठे। मैने बहुत देर नांच देखा, लोग बहोत खुश थे। नाच देखते-देखते मुझे निंद आने लगी।

अचानक पिताजी ने मेरे पिठ पर हाथ रखकर मुझे उठाया।

'क्यों?' मै डर गया।

'यह रुपया ले पिताजी ने कहाँ',

किसलीए? मैने पुंछा।

'ले और यहा पर रख' ऐसा कहके उन्होंने वह रुपया मेरे हाथ और दंड के बिच की जगह पर रखा।

'बहुत अच्छा, अब आओ उठाओ रुपया' कोई जोर से बोला। वो बाई नांचते-नांचते मेरे पास आने लगी और मै निंदकी झपकी ले रहां था। बाजे की आंवाज और अधिक सुनाई दे रही थी। मेरी निंद खुल गई। बाजे और नजदीक आने लगे। वह नांचनेवाली बाई और मेरे पास आई। मेरे पिताजी खुश होकर हंस रहे थे। वह बाई झुकी और अपने होंठो से उसने रुपया उठाया। गर्दी ने जोरदार तांलीयाँ बजाई, सिंटी बजाई, दसती उपर फेंके। क्या हुआ मुझे कुछ पता नही। वह शोर-गर्दी लेकीन मुझे कुछ अच्छी नही लगी।

आवाज कम हो गई। वह औरत वापस चली गयी। फिर से घर में वांदे आने लगे। मेरी आँखे सोने के लिए बेताब होने लगी। बस झपकी आते ही मै पिताजी के पैरों पर लेट गया। सामने चलनेवाले गाने के ताल पर वह मेरी कनपट पर हांथो को थीरकाते। मुझी निंद आ गई।

पिताजी को लगता था की, अपना राम सौ लडकों में उभर आये। उसी दृष्टी से उसने मेरे हांथो से उस रात को दौलत जादा करवाया। आगे ऐसी ही एक समय हमारे गांव में कार्लेकर ग्रॅंड सर्कस आयी। बाकी भाईयों का विचार न करते हुये मुझे ही अकेले को पिताजी सर्कस देंखने ले गये।

सर्कस में कई हिंस्त्र पशु थे। चित्ता और शेर थे। सर्कसवाले कई प्रकार के चमत्कारीक खेल दिखाते थे। रिंग मास्तर चाबुक मारे तों शेर अपनी दहाड देता हुंआ अपना कुंह फाड देता था। रिंग मास्टर प्रेक्षक में से एखाद लडके को बुलाता और शेर के हाथ में मुंह डालता। कुंछ छोटे-छोटे लडके सामने आने की कोशीश करते।

पिताजी ने मुझसे कहां, राम!

क्यां?

तु जायेगा शेर के मुंह में?

हां-हां।

मैने जैसा कहां ही पिताजी ने कहां "शाब्बास" कल के प्रयोग के समय रिंग मास्टर को कहकर शेर के जबडे में जाने की संधी मुझे देने वचन उन्होने बेफीकीर मुझे दे डाला। मै थोडा डर गया था। लेकीन पिताजी को अच्छा लगे इसलिए कहा था। अच्छा हुआ पिताजी वह बात भुल गये और शेर के मुंह में खुद के जरीये जाने का प्रसंग बाल अवस्था में टल गया।

बिल्ली के पिल्लों के समान हम पिताजी के साथ गांव-गांव भटक रहे थे। मेरी पढाई चालु ही थी। चली थी याने क्या रुकती हुई नही थी। प्रगती की अवस्था स्कुली अध्ययन में कभी भी नही आने ही बाल कक्षा से मै कभी भी किसी भी कक्षा में पास नही हुआ।

एक घटना मुझे याद आती है। वैसा मै सभी विषयों में कमजोर था। सभी विषय मुझे कठीन लगते थे। अंक गणीत, अंग्रेजी, भुगोल, इतिहास, व्याकरण आदि सभी विषय। उसमें भी शब्दो की स्पेलींग मुझे बहुत कठीन जाती थी। जैसे की एक शब्द अंब्रेला [Umbrella] अंब्रेला शब्द का स्पेलींग कभी याद ही नही होता था। स्पेलींग याद करने पर से मैने मार भी बहुत खाया। एक बार, दो बार, कई बार। फिर भी स्पेलींग कही याद नही होता था।

फिर मुझे डोंगरगडका हमारे पडोसका नाना याद आया। वह रोज अपने नवासे से अध्ययन लेता। वह उस समय सिखता था।

भैस की सींग चार।

खडा आदमी पाँच।

इसी प्रकार व गाणे में से सिखाया था। फिर मुझे भी ऐसा लगा कि मै भी शब्दो का स्पेलींग गाणे की तर्ज पर कहां तो और अच्छा ख्याल में आयेगा। फिर मैने अंब्रेला शब्दो के स्पेलींग को चाल दी, वह इस प्रकार,

U M B R E L L A - अंब्रेला - छतरी

सारे ग सा रे ग सा सा - ध सा रे सा - रे ग रे

फिर तब से आज भी वह स्पेलींग मुझे याद है। तो क्या मै बालकक्षा से लेकर कहीं भी कौनसी भी पास नही हुवा। हरबार मुझे सामने ढकेला गया। यह ढकलने का काम पिताजीही परस्पर करते थे। वह असिस्टंट स्टेशन मास्तर थे। सायडींग को पडा हुवा डब्बा चलते हुए गाडी को जोडने का यह उनका हमेशाकाही काम था।

फिर से पिताजी की बदली नागपुर में हो गई। नागपुर जाने के पहले हम लोग हमारे गांव पुणतांबे को गये। अब वहां के घर का सौंदर्य मुझे महसुस हुवा। गाँव के बारे में अपनापन महसुस हुंवा। बडी माँ के नम आँखो से बहते हुए आंसुओं का आनंद कुछ अलगही लग रहा था।

गोदावरी के पानी की ओर देखने का विलक्षण आनंद होणे का साक्षात्कार हुवा। कल-कल बहते हुए पाणी का आवाज कानों में मधुरता लाती है इस क्षण का अहसास हुवा। कई गाँव के लडकों की दोस्ती भी उस समय देखने को मिली।

मेरे वह सभी मित्र ब्राम्हण वर्ग के थे। सभी के सर पर घेर और शेंडी। बदन पर डिझाईन के शर्ट तथा कमरपर लंगोट। मेरी अभी तक मुंज नही हुयी थी। मै नागर वेश में था। आधी चड्डी, आधा शर्ट ऐसा मेरा पेहराव था। उन ब्राम्हणों के लडकों ने एक उद्योग शुरु किया था। सुबहसे वह इकठ्ठा होकर गोदावरी के तटपर हाजीर होते। जानवी दिखना चाहीए इसलिए कपडे निकाल लेते थे। गंगा स्नान के लिए जो भी गांव के सिधेसाधे लोग आते उन्हे पकडकर कुछ उपदेश देकर उनसे पैसे एंडते थे।

सिर्फ इतनाही होता तो मुझे उस बंडु की इर्शा नही होती। वह सबके सब रेल्वे स्टेशनपर जाते थे। वहां के होटल में की प्याज की सब्जी अच्छी बनती थी। सभी के सभी जाकर उसपर तांव मारते थे। और उसके खमंग होणे की चर्चा करते थे।

मैने भी एक दिन ऐसाही किया। दोस्तों के झुठे मंत्रो का स्फुरण देकर, झुठे सपास्कार किया। एक बहुतही साधे भोलेभाले खेडुत को पकडा। गोदावरी के पाणी में रहकर उसे "सदा सर्वदा"यह मंत्र बहोतही थाट से सुनाया। उससे एक डब्बु पैसे की कमाई की।

उस शाम को भजीएं खानेवाले के संग में मुझे स्थान मिला। मैने भी वह न मिलनेवाली वस्तु खाई और खुद को धन्य समझा। एक डब्बु पैसे के लिए फिर से मुझे ब्राम्हण का सोंग लाने की जरुरत महसुस नही हुई। नागपुर में आने से पहले मुझे 'ब्रम्हचारी' कर डालना चाहीए ऐसा निश्चय किया। बडी माँ अब बहुत थक गई थी। उसकी आँखे अंधत्व की ओर बढ रही थी। हमारे कुल देवता के दर्शन लेने की इच्छा उनके मन में कई दिनों से थी। मेरी मुंज तिरुपती व्यंकटेश्वर के सामने हो ऐसा निर्णय हुवा और दक्षीण की ओर गये। श्री रामचंद्र इस मद्रास के

रुप में आज के मेरे नाम के उस समय जैसे घनिष्ट संबध मिला। मेरी मुंज शेषाचलपर हुयी। उस समय का योग भी ऐसा की उसी समय मेरी सगी माँ अस्पर्श बैठी और मातृ भोजन के लिये मुझे बडी माँ के ताट में ही में ही भोजन करना पडा। उसका और मेरा वह आंखीर का खाना। उसी दिन उसने मुझे आंखीर का खाना खिलाया। पुणतांबे को आकर उसने खांट पकड ली। हम नागपुर गये - बडी माँ बहुत गयी। जहां से कोई वापस नही आया उस गाँव को गयी।

हम नागपुर में रहने आ गये। पिताजी की बदली इतवारी स्टेशन को हुयी। पिताजी की मेरे बारे में कई अपेक्षायें थी। मै पढकर कुछ बनुंगा, घर का नाम रोशन करुंगा ऐसा उन्हे लगता था। साथ के दोस्तों को वह बोलकर बताते थे। मुझे गाना गाने का दिल होता था। और मै गाते रहता। वह अच्छा हुवा होगा।

नागपुर में हम संगमपर रहने लगे। यह संगम कौनसी नदी का था यह मुझे भी नही मालुम। शायद एक दो धाराही उस जगह एक दुसरे से मिली होगी। उस संगमपर एक शिव का मंदिर था। उस मंदिर के इर्द-गीर्द छोटेछोटे मंदिर थे। उस देव भक्तों के आंसपांस ही हमने निवास किया था।

नागपुर सरीके शहर में मेरी शिक्षा अच्छी होगी मेरे पिताजी को लगता था। मुझे पढाई के विषय में इतनी रुची नही थी। ढकल गाडी के चालसे मैने चौथी पास की थी। पांचवी से अंग्रेजी का याने 'शेरनी का दुध' का क्लास चालु होनेवाला था। मेरी मराठी माय का ही दुध मै नही पचा सकता था। अब शेनरी का दुध कैसे पचाया जांए? यह मेरे सरपर भारी दबाव था।

नागपुर में आते से ही बिचार करने के लिए एक जगह ढुंढी। वह जगह याने संगम के किनारे का पत्थर। एक शाम मैं संगमपर बैठा था। मै बहुतही चुपचाप था। बाहरसे गरम हो रहा था और मन में भी कुछ हलचल मची थी। मै अकेला होने की जान आयी और फालतु ही ऊफानपर आयी। आगे पिछे का कोई सुत न पकडकर एक घटना मुझे जैसे के तैसे याद आयी।

उस समय भी हम नागपुर में ही रहते थे। मेरी सगी माँ जाँच के लिये कोई तो भी दवाखाना गयी थी। अर्ध अंधी बडी माँ घर में थी। मै परिक्षा में नापास हो गया था। पिताजी अभी काम पर से वापसी की राह देख रहा था। वें आये, गुस्सा हुये, दो-चार थप्पड मारें माने वह परिक्षा पर्व खतम हो जाना था।

दिन डुबने को आया और पिताजी घर आये। मै चोर के भाँती खडा रहा। वह बहुतही गुस्सा हुयें दिखाई दिये। मेरी नापास की बात शायद उन्हे मालुम हो गयी हों। एखाद थप्पड मिलेगा इस तयारी से मै आंखो को झुकाये मेरे गालों की ओर देख लिया। पिताजी कुछ बोल नही रहे थे। एक टक मेरी ओर स्तब्ध्द से वह देखते ही रहे और फिर एक-एक आंवाज बढाकर बोलने लगे, 'बदनपर का शर्ट निकाल' मैने शर्ट निकाल दिया। 'गंजी फ्रॉग भी निकाल' पिताजी ने कहां, मैने वह भी निकाला। फिर पैजामा भी निकाल। नही कहने की कोई गुंजाईश नही थी। मै पैजामा उतारने लगा था। तब मुंज नही हुयी थी। पिताजी केवल क्रोध में भरे थे। मै बहुत डर गया था। बडी माँ दरवाजे के पास आकर खडी हो गयी। संध्या के उजाले में उसे कुछ भी नही दिखा होगा। मैने उसकी ओर देखा वह घबाराई हुयी दिखी।

निकाल वह फेंक दे।

मै पुर्ण नंगा खडा रहा। केवल कमर का कर्गोट ही बदन पर था। पिताजी दौडते हुये मुझपर आये। उन्होने मेरे कंधे के निचे के दंड को जोरदार खिंचा। किसी को फेंक देते है उसी तरह जोर से आंवाज कर निकल यहां से और फिर कभी भी इस घर में पैर मत रखना।

मैने किसी प्रकार की हलचल करने से पहले मुझे बिच घर से ढकेला भी। मै नंगाही रस्तेपर आ गया। नंगेपन के या सहज ही प्रवृत्ती क्यों न हों। पिताजी को अलिंगन की दृष्टी से आगे बढने की कोशीश की परंतु उन्होने ताड से दरवाजा बंद कर दिया।

कहां जाऊंगा मै । उस भयानक वक्त में थर्राता हुवा खडा रहा। गलती किये कुत्ते के लडके सरीका दिशाहीन गती से चलने लगा। लेकीन जाऊंगा कहा? एकाएक मुझे याद आया की, अपनी माँ घर के बाहर है। उसकी जाँच की हुई थी। वह दवाखाना बहुत दुर था लेकीन उसका पता मुझे मालुम था। मै उस ओर निकाला। माँ की ओर निकला। नंगा फकीर , पिताजी ने भगाया हुवा ऐसा एक लडका अपने जन्मदाता की ओर चल पडा। माँ की मेरी ओर ममता नही ऐसा मुझे लगता था। फिर भी उसकी ओर जाने लगा। रोते रोते जाने लगा। कितना चला मालुम नही। शहर के दिये लगे, रात हो गयी। मै चल ही रहा था की, इतने में किसीने मेरे पिछे से मेरे नंगे बदन के खंदे को स्पर्श किया। मैने झटके से मुडकर देखा और मै रोने लगा।

जिन्होंने घुस्से में आकर घर से निकाल दिया वह मेरे पिताजी सायकल से मेरा पिछा करते हुये मेरे पिछे आये थे। रो मत फिर से वह गुस्से से बोले। मै चुप हो गया। उन्होने मुझे अपने सामने सायकलपर बिठाया और हम घर आ गये। बडी माँ ने उस रात को मुझे बडे प्यार से चुपकारा। सोते समय अपने छाती से सुलाया। मुझ पर अपने पुत्र प्रेम का जैसे आंसुओ का एक अभिषेक ही किया हो।

वह बडी माँ अब इस संसार में नही थी। परिक्षा नापास का अपराध यह मेरे हांथो होनाही था। पिताजी को घुस्सा आनाही था। मुझे मार मिलेगी यह संभावनाही थी । मारनेवाले हाथ मुझे प्रेम से गले मिलनेवाले ही थे। लेकीन बडी माँ की ममता जो कभी मिलनेवाली नही थी वह कभी नही मिलनेवाला था। पिताजी ने मुझे एकही

समय दो स्कुलों में डाला। न्यु इंग्लीश स्कुल के पहीली कक्षा में और श्रीराम संगीत विद्यालय के प्रारंभ कक्षा में। पाठशाला की प्रगती गती कुछ खास अवस्था को नही आयी थी। लेकीन मेरे गाने की गती को जोरदार गती मिली। मेरी आवाज जन्म सेही सुरीली थी। ताल का समझ ना भी मालुम होते हुये भी प्राप्त हुवा। सप्रे गुरुजी मुझपर बहुत खुश हुये। उन्होने पिताजी से कहा, लडका नाम निकालेगा। गुरुजी की यह शाबासकी शालेय जिवन में कभी नहीं आया। लेकीन गाणे के स्कुल में प्रवेश मिलतेही मेरे पीठपर शाबासकी मिली।

सप्रे गुरुजी बहुतही प्रेमी स्वभाव के, हमेशा खुश मिजाज, पढाते-पढाते वे वा! राम वा! राम कहते। श्रीराम संगीत स्कुल मेरी गुनगुनाके गीत हो गये। उस गाणे पर विभीन्न प्रकार के रंग चढने लगे। लकीन अंग्रेजी पहिली मे का मुश्कील मुझे मुश्कील में ही रखता गया।

उस समय देशभक्ती के गीत अधिक बिकते थे। उसमें का मुल ही मैने भी सिख लिया। आगे सप्रे गुरुजी ने एक संच निकाला। उस संच के कार्यक्रम जगह जगहोपर होने लगे। इस संच और गाणे के कार्यक्रम में मुझे एक दोस्त मिला। उसका नाम वासू देशपांडे, वह मेरे ही उम्र का, उसे हार्मोनियम बजाने का शौक, उसकी जोडी बहुतही जल्दी जमी। विशेष याने वह बारह- तेरह साल का ब्राम्हण का लडका स्कुल में बिलकुल जाता नही था। केवल पेटीही पढता। मैने उसे कहां वासू तेरा यह जो है यह कुछ अच्छा नही। फिर बाद में एक बार वासू मुझे उसके घर ले गया। उसका घर हमारे घर के पास में ही था।

उसके माता पिता देवता समान थे। पिताजी नामी वकील, घर की स्थिती संपन्न, मेरा गीत सुनकर वासू की माँ वासू के समानही ममता करने लगी। बडी माँ के वात्सल्य की पुरी की पुरी गठरी मुझे उसके पास मिली।

पास-पास में ही रहने की वजह से वासू के पुरा परिवार ही हम चितळकर के प्रेमी या स्नेही हुये। वासू स्कुल नही जाता था। इस लिए मै उसे मेरी अपेक्षा कम समझता था। एक दिन वह अभिमान एक दम जमीनपर आ गीरा। वासू पिताजी उसे घर में ही पढाते थे। उसकी तैयारी उसी समय मॅट्रीक को बैठने की हो गयी थी। वासू की प्रगती मेरे पिताजी को मालूम हो गयी तब वह अपने कुंठभरे स्वर में वासू के पिताजी को बोले, 'हमारा राम स्कुल में बहुत ही पिछडा है' वासू के पिताजी भगीरथा से बोले, 'राम उस काम का नही है, गाणे के शास्त्र में वह बहुत बडा व्यक्ती बनेगा'

दो साल मै बहुत ही अच्छा गाणेवाल लडका कहके नागपुर में मेरा नाम हुआ। नागपुरकर बहुतही कसे हुये रसिक, उसमें हमारे सप्रे गुरुजी को जिज्ञासा अधिक। मुझे लोगों के सामने लाने का चान्स कभी भी नहीं खाते थे।

भाटे बुंवा की नाट्यकला प्रवर्तक नागपुर में अपने खेल किया करती थी। सप्रे और भाटेबुवा इनके संबंध बहुत ही घनिष्ट थे। एक बार सप्रे गुरुजी अपने उत्साही तथा जल्दी में होने के स्वर में मुझे बोले, 'राम काम करेगा'?

कैसा, कहां?

'नाटक में'

नाटक में काम। यह मौका मेरे लिए बहुतही महत्व की लगी। मैने हां कर दिया। मै रंगमंचपर खडा हुआ व भगवान का वेश धारण कर संत सखु नाटक में मैने विठ्ठल का अभिनय किया। सारे बदन निले रंग से रंगाया गया। मोर मुकुट, पितांबर साडी, आभुषण डाली गयी। मै भक्तश्रेष्ठ सखु को चक्की पिसाने में मदत करने लगा। एक गाना गाया और नागपुरकर श्रोता खुष हुये और तालीयों की गुंज हुई।

वह दिन और वह वर्ष कुछ याद नही आता है। लेकीन वह तालीयाँ आज भी मेरे कान में गुंजती है। स्कुल के जीवन में ऐसी तालीयों का प्रसंग तो छोडो साधे पास का शेरा कभी नही मिला पाया। पाठशाला में मै जाते रहा। गायन स्कुल में मै पढते रहा। मेरी तयारी अच्छी हुयी। इसी दरम्यान मुझे एक चमत्कारीक लत लगी। बहुतही छोटी उम्र में लगी। नागपुर शहर बडा होने के कारण उस लत को उजागरता मिली। पिताजी के आंखो को धोका देकर आदत का आस्वाद लेने की आदत हमेशा की हो गयी।

आदत थी सिनेमा देखने की। देशी-विदेशी तथा मुक सिनेमा देखते समय सबकुछ भुल जाता था। एक दिन सिनेमा देखने के लिए पैसे नही थे। तो पानवाले के दुकान से चोरी की। इस सिनेमा के शौक से मैने सप्रे गुरुजी के हाथ का मार खाया। लेकीन यह आदत नही छुटी। अब मन बना लिया था की, सिनेमा में काम करने का। नागपुर में सिनेमा बनानेवाली कोई कंपनी नही थी। नही तो मै कभी का ही इस व्यवसाय में होता।

१९३० के समय फिर से मुझे रंगमंचपर आने का मौका मिला। उस नाटक का नाम था, 'नया खेल' इस नये खेल में एक नया खेल करके खेल में मैने लडकी की भुमिका अदा की। उस स्वभाव चित्र का नाम 'छबी' था। लेकीन चालचलन तथा बालना कहां सुधरता पत्थर एक गाणा गाणे के प्रयास में सरपर के नकली बाल मेरे हाथ में आ गये। प्रेक्षक हंसना शुरु किया। लेकीन उसके बाद गाणे का रंग इस प्रकार जमाया की, प्रेक्षको ने मेरी भुमिका केवल कानो से देखी। मेरे गीत की तैयारी की सभी तरफ से तारीफ होने लगी।

सेवानिवृत्त पिताजी ने लडके की ओर जाना आवश्यक था। मै नांदगांव रहकर क्या करुंगा। वहां गायन स्कुल नही था। कभी भी पास न होते हुये मै पांचवी कक्षा तक पहुंच गया। आखीर तय किया गया की आगे की शिक्षा के लिए पुना जाना जाहिए। पिताजी तथा दोनो बडे भाईयो ने मेरी पढाई के लिए पैसे भेजना चाहिए।

पांचवी कक्षा में पढने के लिए मै पुना आया। रमनबाग के हायस्कुल में नाम दर्ज कराया गया और पढाई करने लगा। पं।विनायक बुआ पटवर्धन इसके गांधर्व विद्यालय की खोली भाडे से ली। वह अप्पा बळवंत चौक में गाने के स्कुल के पास। स्कुल में आखीर का एक बेंच लेकीन गायन स्कुल में पहिली लाईन में। इसी प्रकार का शिक्षा क्रम पुना में भी चालु रहा। सिनेमा का शौक अधिक तिव्र हुआ।

वार्षीक परिक्षा एक दो दीन पर आयी थी। किसी ने कहां की पार्वती के नीचे एक चित्रपट का शुटींग शुरु है। अभी तक चित्रपट का शुटींग देखने का सौभाग्य मुझे कभी मिला नही था। मै एक दम अधीर हो गया। दोस्त लोक अध्ययन छोडकर आने के लिए तयार नही थे। मुझसे रहा न गया मै अकेला चला गया।

शाहु मोडक नाम का लडका सिनेमा में काम कर रहा था। मुझसे रहा न गया। वह रिफ्लेक्टर्स, वह फटमार्क, वह मायक्रोफोन, वह कॅमेरा, वह रेकॉर्डींग का ट्रक वह सारा का सारा माहौल स्वप्न नगरी सा लगा। मै पागल सा देखता रहा।

के।पी।भावे नाम के प्रसिध्द मराठी दिग्दर्शक उस सिनेमा का दिग्दर्शन कर रहे थे। मेरे सरीखे देखनेवाले लोंगो से उन्होने कहां, देखो आप में से कोई सिर्फ इधर से उधर जायेंगे क्या?

मैने ही मुझे आगे किया। दिग्दर्शक ने कहेनुसार एक दो बार इधर से उधर गया। मेरा चलना, मेरी छवी उस सिनेमा में रंग लायी। मेरे खुशी का ठिकाणा नही रहा। मेरे सरिखे और भी दो चार मेरे साथ आये। शाम तक मै पर्वती के निचे ही रहा। काम खतम होने के बाद दिग्दर्शक ने कहा , आज जो लोग आये थे, कल भी आवो। शुटींग चार छे दिन चलनेवाली है।

हां हां कहते मैने उत्साह दिखाया। परिक्षा चालु हुई। एक दो पेपर किसी तरह दिये। मन नही था पढाई में। उधर पार्वती के नीचे चित्रण चल रहा था। दिग्दर्शक ने कहां रोज आने के लिये कहां था। मैने बडे मुंह से उसे सकारात्मक उत्तर दिया। मुझे जाना जरुरी था। इतिहास, भुगोल की प्रश्नपत्रिका सामने थी। सभी विद्यर्थी निचे गर्दन कर प्रश्न छुडाने के लिये बैठ गये। मेरा मन कुछ लग नही रहा था। पार्वती की सीडी दिखने लगी। रिफ्लेक्टर्स नजर के सामने आने लगा, दिग्दर्शक आज्ञा दे रहा था। मायक्रोफोन बोलणेवाले हीरो का पीछा करने लगा, कॅमेरा, सभी दृश्य अन्दर ही अन्दर चित्रीत हो रहे थे। चलो जानेवाले लोग इधर से उधर दिग्दर्शक चिल्लाया। मै परिक्षा के हॉल से उठा, साहित्य जमाया, उत्तर पत्रिका कोरी थी। हॉल के बाहर निकलता की, इतने में देखरेख करनेवाले मास्तर ने पुछा,

हो गया पेपर?

हो-गया।

मैने कोरा पेपर आगे किया। मास्तर ने वह पलट के देखा। पुरा कोरा था। मै निकला।

अरे! ए! इसपर नाम लिखना चाहिए!

मास्तर ने कहां करमे मैने उस उत्तरपत्रिका के पहले पन्नेपर मेरा नाम लिखा। और भागा तो सिधा पार्वती के नीचे।

उस सिनेमा में कोई कारण न रहते हुये भी पदचारी की भुमिका की। वह करते समय मै रंग गया था। आगे भी मुझे इस सिनेमा क्षेत्र में ही रहना है इसकी मुझे थोडी भी कल्पना उस समय मुझे नही थी।

धुप काले की छुट्टी में मै भाई की तरफ नांदगांव गया। परिक्षा का फैसला वहां आया। कोरा पेपर देने पर निकाल क्या लगनेवाला था? स्कुलके अधिकारी ने पिताजी को उद्देश कर लिखा था, एक इतिहास भुगोल की परिक्षा के लिए यह विद्यार्थी बैठेगा तो उसे उपरी कक्षा के लिये कक्षा में लिया जायेगा।

मुझे कहां जाना था, उपरी कक्षा में? मुझे जाना था, सिनेमा में। तो किस प्रकार जाया जाय इसका रस्ता मुझे मालुम नही था। कुछ करके भी मील नही रहा था। पिताजी भी मेरी पढाई के बारे में नाराज थे।

उन्होने कहां, राम!

क्या भाई?

पुना को नही जायेगा तु?

नही,

फिर?

मै चुप हो गया।

पिताजी ने कहां फिर मेरे साथ चल।

कहां?

पुणतांबे को।

किसलिए? ऐसा पुंछने के पहले ही पिताजी ने कहां वहां अपनी खेती है और कुछ जमीन लेने का चान्स है। उसपर भी मैने कुछ नही कहां।

ग्वालेर को रहनेवाली एक दुर की रिश्तेदार वृध्द स्त्रि की जमीन पुणतांबे को थी। जिसपर हमारे ही रिश्तेदारों ने जबरन कब्जा कर लिया था। उस जमीनपर सही अधिकार मेरे पिताजी का था। उस वृध्द का उद्देश भी वह जमीन मेरे पिताजी को मिले यही था।

मुझे इस प्रकरण में कोई भी दिलचस्पी नही थी। और कही न जाना है यह तय न करने की वजहसे भाऊ मै आता हुं तुम्हारे साथ।

पुणतांबे को आया तो था। लेकीन दिल नही लग रहा था। पिताजी दिनरात कर उस इस्टेट को हासील करने के लिए लगे रहे।

यहां गाणे का रियाज भी नही होता था। उस गांव में गाणे को कही भी साथ उपलब्ध नहीं था। शाम के समय पिताजी के साथ कोई तो भी मेहमान आये। और छपरी में बैठ गये। पिताजी ने मुझे बाहर बुलाया, पहचान करा दी। वह मेहमान मेरी और बहुत पैनी नजर से देखने लगे।

लडका सुंदर है, मेहमान ने कहां।

गाता भी अच्छा है, पिताजी ने उत्तेजीत होकर कहां।

अच्छा है।

देखो गर आपको अच्छा लगा।

मुझे कोई बोझ नही हो रहा था।

लडकी देखने के लिए जैसे मेहमान आते है वैसे लडका देखने के लिए यह आये है की क्या यह मै समझ नही सका। पिताजी ने उसी समय मुझे कहा, राम! एक गीत गाकर बताओ!

गाणा मैने नाईलाज से गाया। लेकीन नाईलाज से किसीने किसी को दिया हुआ पेढा लगता तो है मीठा ही। मेहमान बहुत खुष हुये। उन्होने मुझे नजदीक बुलाया, पीठपर से हाथ लिया।

पिताजी के अकेले में मैने पुंछा,

भाई, मेरी शादी करनेवाले हो क्या?

नही रे, अभि कहां तेरी शादी।

फिर यह मेहमान?

बैठ तुझे बताता हुं, मै बैठा। पिताजी भी बैठे।

तुझे खुप गीत सिंखना चाहीए। मै अब थकान की ओर बढ रहा हूं। नांदगांव का भाई याने कुछ भी हुआ तो सौतेला। तेरा भाई है सोलापुर को उसकी मिलकीयत क्या है? तुझे तेरे सरीखे लडके को जिंदगीभर कोई कमतरता महसुस न हो। यह व्यक्ती जागीरदार है। लाखों की दौलत है उनके पास।

लडकी है उनकी?

अंह उन्हे सन्तान नही है।

फिर?

वह दत्तक लेने के लिए लडका ढुंड रहे है। तुझे पसंद किया उन्होने। तु जायेगा दत्तक उन्हे?

भाऊ का आवाज कंपन हुआ।

दत्तक जाना याने?

उनके ओह में जाना, उनका ही होकर रहना।

मेरा नाम?

राम ही रहेगा, बाप का नाम, सरनेम बदलेगा। लेकीन इतने बडे इस्टेट का मालीक होगा। जिंदगी भर सुख और समाधान।

सरनेम क्या उनका?

गोसावी। यह सुनतेही मेरे शरीर में उत्साह निर्माण हुआ। दाढी, मुंछ, जटा, छडी, चिमटा, राख इस निकृष्ट वस्तु से अपनेही बदन को लगे यह मुझे इसका भास। प्यारभरे स्वर में मै चिल्लाया भाऊ मुझे नही जाना है दत्तक।

भाऊ की आंखे भी नम हुई थी। लडका दत्तक देणे का प्रकार उनके मन को भी अच्छा नहीं लग रहा था। मुझे पास में लेकर बोले नही, राम मै नही दुंगा तुझे किसी की जांघ पर।

वह लखोपती गोसावी आये वैसे वापस लौट गये। पिताजी ने उन्हे स्पष्ट नही कह दिया। मुझे यहां अच्छा नही लगा तब पिताजी ने कहां तु सोलापूर को जा नाना की ओर।

नाना मेरा बडा भैय्या। उसके मेरे उम्र में आठ-दस साल का फरक है। सह सोलापूर में एक लिथो प्रेस में काम करता था। मै उसके यहां गया उसका ब्रम्हचर्य आश्रम था।

वह मुझे रोज पुंछता था, राम कौणसे कारखाने में काम देंखु?

मुझे गिरणी मे काम करने की बिलकुल इच्छा नही थी। मै स्तब्ध बैठे रहता। नाना जो भी पकायेंगे वही खाता था। वह काम पर गया तो मै जोर-जोर से गाणा गातात था। वह गाणा सुनने के लिये आसपास के लोग भीड किया करते।

मै कौनसा व्यवसाय करणा चाहीए इसलिए कुछ निश्चय किया होगा। वह एक दिन मेरे पास आया, उसने समाचारपत्र में आया हुआ विज्ञापन बताया। कोल्हापुर में ललीत पिक्चर्स नाम की एक संस्था है। वहा उन्हे अभिनय के लिये तरुण चाहीए थे।

नाना को फोटै निकालने का शौक था। उसने मेरे बहुत से फोटो खिंचे। उसमें से कुछ चुनकर उन्होने अर्जी के साथ ललीत पिक्चर्स, कोल्हापुर की ओर भेजा।

दो-चार दिन में ही अर्जी का उत्तर आया। ललीत पिक्चर्स ने तीसरे क्लास का भाडा देने का कबुल किया और मुलाकात के लिये बुलाया।

मुझे जहां जाना था उसका रास्ता मिल गया।

सोलापूर छोडकर मै कोल्हापूर की ओर निकला।

कोल्हापूर, कलापूर -- सिनेमा नगरी --

सोलापुर में निष्क्रीय आयु की समाप्ती हुई। मै बिस्तरा बांधकर कोल्हापुर में आया। चित्रपट की नगरी यह कोल्हापूर की प्रसिध्दी मेरे कानों में गुंज रही थी। इस शहर में अपना मन तो रमेगा ही और जिंदगी का रास्ता भी यही मिलेगा ऐसा दिल से लगता था। सिनेमा स्टुडीओं इसके पहले मैने कभी देखा नही था। ललित पिक्चर्स का स्टुडीओ में प्रवेश करतेही थरथरी महसुस हुई।

ललित पिक्चर्स यह संस्था अण्णा साहब राजोपाध्ये इन्होने सोहनी और बागडे की सहकार्य से शुरु किया था। मेरी मुलाकात अणासाहब से हुई। तनख्वाँ महिना च्यालीस रुपये मुकरर हुआ। यह तनख्वाँ उस समय के मानसे ठीक था। कोल्हापूर सस्ताई के लिये मशहुर था। कोल्हापूर का दूध तथा कोल्हपूर की सब्जी का पुना में नाम लिया जाता था। चालीस रुपये की नौकरी मिलने के साथ ही चित्रपट में प्रवेश करते ही भूमिका मिली इसका आनंद और भी था।

ललित पिक्चर्सने 'प्रतिमा' इस नामका बोलपट भी लिया था। मुझे लगता है भासा के प्रतिमा नाटक के कथानक की सिध्दता महसूस होती है। कहानी रामायण से जुडी थी। मै नाम से राम था। लेकिन मेरा चुनाव लक्ष्मण के लिए हुआ था। राम की भूमिका के लिए सुरेश परदेसी नाम का सुंदर युवा पहिले ही मुकरर किया गया था। सीता की भूमिका के लिए अमीना इस अभिनेत्री का चुना किया गया। सावकारी पाश में जकडी किसान की पत्नी के रुप में प्रसिध्द थी।

भेंडे गल्ली के चिकट बस्ती में मुझे रहने को रुम मिली। मै च्यालीस रुपयो का कामगार मान्य हुआ। वैसेभी नाना सोलापूर छोडकर कोल्हूर आया। मेरी देखभाल करने के लिये आना बडा भाई होने की वजह से उसे लगा। घर संभालना खरेदी करना यह सब उसने अपने हाथ में लिया। शेटी पकाने का काम भी नाना करने लगा। मुझे वह सब कुछ आता नही था। हमारे भाईयों का पुरुषीरुपी संसार शुरु हुआ।

उस समय चित्रपट की तरह नाटक की तालीम चलती थी। अण्णा साहब प्रॅक्टीस लेने लगे। मै लक्ष्मण के डायलॉग याद करने लगा। उसे कैसे करना, हाथवारों का उपयोग, आंखो में भाव कैसे लाया जाय यह सिखने लगा।

एक समय श्याम को मै थककर आया, संवाद की इतनी आवर्तने कान से गुजरी की उसमें के कुछ शब्द कान में ही रहे है ऐसा लगता था। राम लक्ष्मण इत्यादी बडे नाम भी कान पर नही ऐसा लगता था। घर जाकर आराम करना, जमा तो कुछ गरम गरम खाना ऐसा लगता था। मेरी खोली उपर पर थी। मै जिना चढकर आया तो खोली बंद और अंदर संवाद चल रहे थे। नाना तो अकेला ही था खोली में फिर यह स्वर किसका? मै बंद दरवाजे के पास रुक गया। दरवाजेपर दस्तक नही दी। घुस्से के स्वर में एक प्रश्न कान पर आया।

अरे वह मिलता है लेकीन खर्च करनेपर तेरे बाप का क्या जाता है?

करता हुं ना खर्च उत्तर का स्वर बहुतही बारी का था। करता है? क्या करता सर, यही है ना तेरी जमाखर्च की पत्री, दुध पांच रुपये, पांच रुपये दुध से उंगली तो भी डुबेगी क्या। माह में पांच रुपये का दुध उसमें का पानी कितना? खाना कितना? दही कहां का और छाच कहां का, घी का तो नाम ही नही।

निकालता है ना घी भाऊ।

अरे निलकलेगा कैसा?

निकलता है।

मैने आवाज पहचाना। भाऊ पुणतांबे से आये थे और अपने कमाते पूत को बडा भाई कैसे संभालता है उसकी परिक्षा ले रहे थे। दरवाजा खोलकर मै अंदर गया। भाऊ को देखकर मुझे प्रसन्नता हुई, बडा व्यक्ती जब घर में होती है तो उनका प्रभाव भी मान्य नही होता। और वह ऐसे कुछ समय के बाद मिलनेपर अपने बचपन पर फुलों का वर्षाव कर रहे ऐसा लगता है।

मैने हंसते ही भाऊ को समझाकर बताया की कोल्हापूर में दुध छः रुपये में शेर भर मिलता है। वह भी निरस। तुम्हारे सामने भैस दोहकर दुध के बर्तन फेसके साथ भारत में यहां के गवली। फिर भाऊ को बात पट गयी। नाना की बेहिसाब की डायरी सहिसलामत छुट गयी।

दो-चार दिन रहकर भाऊ वापस गये। और न जाने क्यों मेरी माँ को कोल्हापूर भोजा। लडके के खाने के ताले पडे है यह एहसास हुआ होगा। पुरुषों ने कितना किया होगा लेकिन अन्नपुर्णा यह देवता नही है। माँ आगई औ मेरी खोली (रुम) को घर का दर्जा प्राप्त हुआ। भगवान के घर जाकर रहनेवाले मां का स्मरण हुआ। नाना का चार्ज मां ने लिया। वैसे नाना को फ्री लगने लगा। वह निकल गया। मुझे लगा नाशिक को जाकर उसने भी वहां नौकरी की होगी।

मेरी अभी प्रॅक्टीस शुरु थी। चित्रण को अभी तक शुरुवात होने को थी। मुंहपर रंग लगाने तथा मुकुट पहनने के लिये मै बेताब था। पीठपर का बाण और हात में धनुष्यबाण अच्छा संभलने लगा। लेकीन वह छायाचित्र होणे का मौका नही आया था।

उसी समय मै बिमार गीरा। साधा बुखार टाईफाईडपर गया। मां ने मेरी बहुत सेवा की। इक्कीस दिन बिमारी से अंदाजपत्रक का दिवाला निकला। डॉक्टर का बिल, फलों का खर्च इससे प्रकरण बहुतही गंभीर हो गया। मां ने बाप को कुछ भी नही लिखा और ना नाना को संदेश दिया। मां ने अपने हात में के सोने की बांगडी को तोडा और समय को अंजाम् दिया। हिन्दु स्त्रियों को त्याग के बारे में सिखाने की किसी की जरुरत नहीं। प्रसंगानुसार परंपरागत उन्हे रास्ता दिखाई देता है।

मै अच्छा खासा ठीक हुआ। गायब हुई शक्ती फिर से हाथपांव मे आने लगी। फिर एक दिन मां पुणतांबे को गई। भाऊ उधर अकेले थे। सौभाग्य और सन्तान दोनो की नोकरी करणी चाहीए।

स्त्री जाती की जबाबदारी बहुतही कठीण थी। मां गयी फिर मै अकेला रह गया। सिर्फ अकेला। डॉ। कहते थे फल खाते जाओ, अन्डे खाते जावो। कोल्हापूर के सस्ताई को दरमाह च्यालीस बहुत थे। लेकीन अपने धनवानी के चोचले के लिये उस पैसे का क्या मोल।

इसी समय मेरी बेरलेकर नाम के परिवार से परिचय हुआ। लक्ष्मण बेरलेकर नाम का छोटा दसबारा सालका लडका भालजी के कंपनी में था। 'कालीया मर्दन' में उसने श्रीकृष्ण की भूमिका की थी। उसकी मेरी पहचान हुई। उसकी वजह से उसका भाई रघुनाथ की पहचान हुई। मेरा अकेलापण उन भाईयों को देखा नही गया। उन्होने सुझाव दिया, 'राम तुम हमारे यहां रहने के लिये आवो'

मुझे भी वही होना थ। मैने मेरा बोरिया बिस्तर उठाया और रंकाला वेशी में बेरलेकर के बाडे में रख दिया।

इस बेरलेकर के घर में गोदू ताई मिली। बुजुर्गो के नाम के पिछे जो रिती रिवाज है तिर्थरुप लिखते है। यह औरत सही में तिथरुप थी। बहुतही बडे दिलवाली, बहुत ही प्यारी। उसे भगवान ने हाति दिये थे वह केवल मेरे सरिखे अन्य लोंगो के भरमाईके लिये ही।

गोदूताई बेरलेकर की चाची। रघुनाथ लक्ष्मण उसी प्रकार राम यह उनको देखने की तन्हा थी। मोठ्या आईनंतर उस योग्यता की माया मुझे गोदूताई के पास मिली।

बिलकुल घर के सरिखा मै उसके परिवार में रहने लगा।

बिमारी के बाद शक्ती वापस लाने के लिए मैने बनपाव का रतिब लगाया। सुबह शाम मै उस पाव वाले की राह देखता था।

इसी प्रकार उस पाववाले का इंतजार करते समय एक शाम मको, दरवाजे पर रुक गया और कुछ गुणगुणाने लगा। थंडी हवा बह रही थी। सुर्य का डुबता प्रकाश बहुत ही शानदार लग रहा था। मै पाववाले की राह देखर रहा था और किसी की तोबी राह देख रहा था। कोल्हापूर में आकर बारा माह हो चुके थे। चित्रसृष्टी के दरबार में आकर मै रुक गया था। नियती मुझे अभी भी अंदर नही ले रही थी। एक बार अन्दर जाने के बाद मान करस्थान बनाऊंगा ऐसी मेरी मुझे विश्वास था। राजोपाध्याय की 'प्रतिमा' आकार नही ले रही थी। भट्टी के ही नरम करने की उनका धोरण मेरे लिये निर्जीव हो गया था। और कही संधी मिलती क्या इस की राह देख रहा था। वह संधी खुद बखुद नही आती है। वह बेटा पायवाला भी नही आता था। बहुत देरतक मै दरवाजे पर खडा था। अंधेरा हो गया। वहां जमनेवाले दुध बाजार के घंटो की आवाज कानों में आने लगी।

पडोसी ने पडोसी से कुछ पुंछा, 'हमारा राम है क्या?' पहले तो मुझे एहसास हुआ, 'हमारा राम' इस नाम से कौन पुंछेगा? रघुनाथ पुंछेगा नही तो गोदूताई पुंछेगी। लेकीन उनमें से किसी की आवाज नही थी वह। मै तो उसके ही दरवाजे पर खडा था।

मेरा राम रहता है क्या यहा? फिर से वही आवाज। घोगरा।

कौन किसको पुंछ रहा था।

कौन राम किसीने तो भी पुंछा।

'रामचंद्र नरहर चितळकर'

मेरा पुरा नाम कोल्हापूर में किसे मालूम था? मै सोचने लगा तंद्री छोडी। बाजू के ही घर मे दरवाजे पर मेरी चौकशी कर रहे थे।

कौन है, मैं हुं यहा। मै जरा सामने सरका अंधेरे में एक आकृती सामनेआयी। लडखडाती हुई सामने आयी उसे देखकर मै गदगद हो उठा वे भाऊ थे। पिताजी मुझे नंगा करके घर के बाहर निकालनेवाले, लेकीन फिर मेरे पिंछे सायकल पर आनेवाले।

भाऊ कहकर मै जोर से चिल्लाया।

हां राम मै ही अब मुझे अधिक दिखाई नही देता। बापरे एक साल में कितने थे हुये दिखते थे। मैने उनका हाथ पकडा। उन्होने मुझे गले से लगाया। थरथराते हांथे मेरा चेहरा देखा मै उन्हे लेकर घर में गया।

दो-तिन दिन पिताजी मेरे साथ रहे। वह बिमार थे। गोदूताई ने उनके पथ्य-पाणी की सब तरह से ख्याल रखा। मेरा काम अभि भी स्तर पर नही आया। वह भाऊ ने पहचाना इसीलिये यह जाने को निकले तो बडे प्यार से कहा, अच्छा राम चल अभी।

कुठ?

अपने गांव पुणतांबे को।

मै नही आऊंगा। मैने निर्धा से कहा। पिताजी कुछ बोले नही। फिर से मुझे गले लगाकर पुणतांबे को गये।

अण्णासाहब की कल्पना केवल कल्पना बनकर रह गयी। मेरा भविष्य चिखल की तरह मट्टी में ही स्थिर रहा। नयें मार्ग की राह देखता रहा, मुझे बहुत समय तक नही रुकना पडा। शालीनी सिनेटोन इस राजकृपा प्राप्त संस्था में प्रवेश मिल गया।

लक्ष्मण की भूमिका के लिए मै कोल्हापूर मे आया था। शालिनी ने मुझे हिरो कहकर स्विकार नही किया। फालतू के एक्स्ट्राओं मे मेरी भरती की। काम को जाने लायक जगह मिल गयी और मै कोल्हापूर में ही बस गया।

शालिनी सिनेटोन के प्रमुख बाबूराव पेंटर केसमान ख्याली प्राप्त कलाकार थे। वहा का संगीत विभाग गोविंदराव टेंभे के समान विव्दान गायक के हाथो में था। कम से कम गोविंदराव का गाणा सुनने को मिलेगा यही विश्वास था।

हमे फालतू बुनगेकी रुम गोविंदराव के विश्राम खोली के ठीक पिछे थी। फालतू लोग फालतू बातो में ही दिन गंवाते थे। गोविंदराव हर समय हम पर बरसते थे। चिडकर कहते कितना बोलते हो, एक बार कहनेपर समझते क्यों नही हो।

गोविंदराव और मेरा अन्तर इतना ही थ। फिर मै उनके पास कैसे बैठता और कैसे उनके संगीत का मर्म सिखता? गायको के गर्दी में कभी कभी अपना अवाज निकला होगा इतना ही। निकट आने का मौका मिला ही नही।

गोविंदराव की प्रतिभा बडी थी। उनके साथ बोलने की हिम्मत मझमें नही थी। उसी समय ऐसा हुवा की, 'उषा स्वप्न' नाम का बोलपट उस समय शुरु था। उसमें के किसी तो भी गीत के ध्वनीमुद्रन चालु थे। बाबुराव पेंटर चित्र के दिग्दर्शक। उन्होने गोविंदराव को कुछ सुचना की। गोविंदराव भडके। वे हमारे सामने बोले, अं सिधे बोलते भी नहीं आता और गाने में सुधार चाहते है।

बाबुराव के आंवाज में दोष तो था ही लेकीन वे संस्था के सर्वेसर्वा थे। गोविंदराव टेके ने उनकी संभावना र्थी। फिर मेरे सरीखे की क्या?

शालीनी ताई के दरबार में मेरी तो दाल नही गली। लेकीन वहा मुझे एक मित्र मिला। खुब बातें की। स्वच्छंद स्वभाव का प्यारा वह पुना से यहां फालतु के मेले में आया था। वह उँचा पुरा था। देखने में भी ठीक था। उसे भी मेरे समान बड अभिनेता बनने की अभिलाषा थी। उसका नाम विनायक काळे। हम उसे अप्पा कहते थे। अप्पा काळे और मै गहरे दोस्त हो गये। इतना की, वह भी गोदूताई के बाडे में रहने के लिये आया। रघुनाथ, लक्ष्मण, राम उसी प्रकार विनायक भी गोदुताई सभी का करने लगी।

दिवाली दसरे के समय गोदूताई अपने लडकों के साथमें हमें भी नहलाती थी। ब्रडा पक्वान खिलाती थी। इतने बडे मन की स्त्री शायदही देखी होगी। मै तो उसे मेरी तिसरी माँ समझता हूं। शालीनीसे जी उबने लगा। कोल्हापूर में आते समय मै माह के चालीस रुपये पगारपर आया। अब मुझे फिरंगी बढती मिली थी। महिने में केवल पंधरा रुपये मिलते थे। इसीलीये दोबार खाना खाता था। अप्पा थे इसीलीये उनसे बातचीत करते हुये दिन बिताया करता था। आगे के जिंदगी में भयानक अंधेरा नजर आ रहा था।

एक एक इस अंधेरे को एक दिन दरी मिली। एक व्यक्ती मेरी चौकशी करते हुये शालीनी में आया। उससे मेरी मुलाकात हुयी। पहचान होने के बाद उसने पुंछा, तुम गाते हों ना?

हां, तो?

पढे हों?

अर्थात।

फिर जमेगा।

क्या?

सम्राट सिनेटोन को हिरो चाहीए।

सम्राट हो या गरीब मुझे नायक बनानेवाली संस्था अस्तित्व में है इसका मुझे बहुत आनंद हुवा। कुछ भी विचार न करते हुये मैने शालीनी छोडकर सम्राट सिनेट को दाखल हुवा। वणकुद्रे नाम के व्यापारी ने यह संस्था शुरु की र्थी।

वाय।व्ही।राव नाम का एक दक्षीण का दिग्दर्शक उसने जानबुझकर लाया था। चित्रपट घोषीत किया गया। 'नागातेंद्र' आखीर में एक बार नायक बन गया। आझमबी नाम की गायीका नायीका के रुप में चुनी गयी। उस के और मेरे प्रेम दृश्य के चित्रण एक बगीचे में शुरु किये। मै बहुत डर गया था। अप्पन तो नायक हो गये परंतु यह

जिम्मेदारी पार कर सकेंगे की नही इस शंका से परेशान था। सतरा अठरा साल का युवा लडका मैं प्रेम संवाद करते समय भी हिंचकिचाता था।

मेरे गांने के बारे में मै निश्चींत था। नागानन्दा के संगीत दिग्दर्शक थे, वामनराव सालोर्डीकर। उन्होंने दिया हुवा गाना बैठक में बोलना चाहीये वैसा मैने अपनी भी नाज से गाया। उस समय प्ले-बॅक सिस्टीम नहीं थी। गाना संवाद के भांती दृश्य के समय गाया जाता था। दृश्य बदलते समय एक तान ठोकने की, याने नये दृश्य की जुने गाने की लय ताल जोडकर साधना। मैने गाना लिया ठोककर।

सु:खद सुरसमा।
त्यागकर कोई बिरही रंभा।
मधुगान गाये, स्थली इस।

लेकीन आये उस रंभा से प्रेमालाप करते समय मेरी जबान लडकढाती थी। उसी में एक प्रकार भी घटीत हुवा। हमारा चित्रण शुरु था उसी बगीचे में मास्टर विनायक का भी चित्रण शुरु था। वह खुद दिग्दर्शक प्रख्यात नट। उनका अभिनय सफाईदार था। हमारी संस्था के लोग उनका चित्रण देखते थे और मेरे कानों तक सुनाई दे इतने जोर से आंवाज करते थे।

यह कैसा फालतु हिरो। हिरो तो मास्टर विनायक। उस बोलने से मै और पिंछे आया। क्या करना चाहीये? कुछ सुंझ नही रहा था। मैने भी विनायक की शुटींग देखी। कितना उमदा दिखाई दे रहा था वह युवा। नही तो मै दुबला पतला, बदनपर की पतरोकी आभुषण हड्डीयों मे लगती थी। दिग्दर्शक, वाय।बी।राव उन्होंने मुझे फिराया तो दक्षीणात्य दिग्दर्शक तुटी हुई हिंदी में मुझे बोला, यह क्या हेल्थ है? तुम जरा तगडा हो जाओ। मास्टर विनायक को देखा की नही?

देखा, मगर क्या करुं मोटा हो जाने के लिये?

दिग्दर्शक ने हंस दिया, बोला, बियर पिओ, बैदा खांओ। बियर और बैदा मुझे पगार मिलता था, पच्चीस रुपये। मेरा बनपाव का रतिब ठिक था। पर दिल ने कहां अप्पन भी रसरसीत होना चाहीये, मास्टर विनायक की तरह दिखना चाहीये। मन को पक्का किया। रघुनाथ को मैने नही कहा। लक्ष्मण को पुंछा की, अप्पा की सलाह लि। एक दिन उठा और गया काले पापा के दुकानपर। ऑर्डर देते समय मै कतरा गया। विख्यात नायक होने के लिये मेरा शरीर दृष्ठपुष्ठ होना चाहीए। चित्रपट में नाम कमाने का मेरा निश्चय पक्का था। आगे की इच्छा पुर्ती के लिये मद्यपान करना आवश्यक था।

दुकान के नौकर ने भुवई से पुंछा, क्या चाहीये? मै जोर से बोला, बियर ला।

एक बियर पिने के बाद फेस आने वाला मादक पदार्थ मैने उस ग्लास को मुंह में लगाया। पुणतांब्या का कुलवंत ब्राम्हण का लडका अधर्मी हुवा। फालतुही पुणतांबे का स्मरण हुवा। घर के सामने का गणपती याद आया। चांगदेव बाबा की पालखी याद आयी। बडी मां, गोदुताई हर उनमें से किसी को भी डरने का कोई कारण नही। मुझे यशस्वी नायक होना था। और उसके लिये मुझे वह पेय लेना आवश्यक था। मैने काढा पिया वैसे वह कडवट ग्लास खाली किया। डेरींग से कहा, और एक ला।

युवा अवस्था आने के बाद भी मेरा ताल नही जम रहा था। आज तक मुझमें बेताल नही थ। अब मद्य से पहचान हुई। मांस कभी खाया नही था। वह भी खाना पडा। पुणतांबे का मै ब्राम्हण का लडका मैं। चित्रपट [सिनेमा सरीखे बहुरंगी दुनिया में आया। मोह की कतार खडी थी। मुझपर किसी का प्रभाव हो ऐसा कोई भी कोल्हापूर मे नही रहा था। भाऊ, आई, नाना सभी चले गये थे। बेरले का घर आसरा बना हुआ था। उपदेश देणे का उस घराणे का स्वभाव नही था। नायक बनने का मेरा सपना स्वप्न से सत्य में उतर गया था। लेकीन वह सत्य सपने से भी असत्य है। इसकी मुझे पुरी जानकारी हो गयी थी।

मास्टर विनायक के सामने उनके छांव तले भी खडे रहने की मेरी लायकी नही थी।

गाणे का अंग शुरु से ही था ऐसा कहना होगा। मै भोजन करता था, खाता था, पिता था वैसे गाता भी था। गाणे का शौक में कुछ स्वतंत्र अस्तित्व था ऐसा नही। कभीकभी हमारे चित्र संस्था के संगीत दिग्दर्शक श्री वामनराव सडोलीकर इनकी ओर मै जाकर बैठता था। शास्त्र से पहचान करने की कोशिश कर रहा था।

एक बार बहुत बडे कलाकार स्टुडिओ मे आये। उस्ताद अमजदखॉं तिरखवां। मै वामनराव के सामने बैठा था। 'नागानंद' सिनेमा का किरसा गीत के तर्ज पढ रहा था।

तिरखवां साहेब आये। स्नेह भाव के इस आदमी ने घर में आते ही छोटे-बडो को उसने तबिले के सामने बैठाया। वाह बडा कलाकार उस निर्जीव वाद्य को बोलता किया। जिर्ण हुई चमडी सुमधुर स्वर में बोलने लगी। मोर मोरनी नाचती है वेसे उनके हात नाचने लगे। तबले का आवाज घुमने लगा। मै पसीने से तर हुआ। खुद की पैदायिश की ताल के विश्व में उस्ताद खुद ही रंग गये थे। रंग मे आकर मुझे बोले,

गांओ बेटा गांओ।

मै क्या गा सकता था। उस्ताद के तालपर बाल गंधर्व सरीखे की वाणी पागल सी नाचे। मैं उभय दृष्टी से अशिक्षीत। लेकीन उस्ताद की आज्ञा मुझे माननी पडी। मैने मुंह खोला, गाणे लगा। उस्ताद वाद्य पर आघात कर रहे थे। तबले के बोल से लगा की आगे की तान कह रहे है। क्या गाया किसको मालुम। लेकीन गाया मै गाता रहा वे बजाते रहे।

ये भगवान क्या मीसाल दिया,

बान छाती में पंछीको लगा।

यह गीत उस समय बहुत ही प्रसिध्द हो गया था। वह मै गाणे लगा। उस्ताद के चाल पर की मुल चीज मुझे जची। वे खुद वह गाणे लगे। बडाही अदभूत बैठक जम गयी। बियर इस पेय का नशा मुझे मालुम पडा। इस बैठक का मदहोश करनेवाला था।

गाणा ही पढते रहता तो लेकीन वैसा होना नही था। कला की बेहोशी की अपेक्षा चालचलन के उच्छृंखल रुप की पसंद मुझे मेरे मन को भाने लगी।

कही तो भी उंची पहाडी पर नागानंद का आऊटडोअर शुटींग चल रही थी। कई युवती एक्स्ट्राज की तरह इधर उधर घुम रही थी। उसमें की एक मेरे पास आयी। सिनेमा का नायक हो गया। लेकीन फिर भी औरतो से बोलते समय कुछ हिचकिचा जाता था।

'रामचंद्र राव' सात जगह नखरे करती हुयी वह गोरी नटमोगरी नें कहा आज रात को मेरे घर को भोजन करने आना है।

भोजन की अपेक्षा पिने का मोह मुझे अधिक था। हम सिनेमा नट है इस का मनही मन में जागृत कर मैने उसे पुंछा, केवल भोजन के लिये?

वह हंसी, बहुत ही प्यार से हंसी। उसकी मुद्रा रंगी हुई है। आंखो के उपर की भोंये तणी हुई है, लंबी है। यह सब मुझे मालूम था। फिर भी उसका वह नखरा मुझे अच्छा लगा। वह भी प्रसन्न हुई। आंखे तिरछी कर पुंछा, और क्या चाहीये?

मैने दांये हाथ का अंगुठा पिठ की ओंर झुकाकर होंठो से भिडाया और हंस दिया। वह भी व्यवस्था हो जायेगी वह बोली। फिर आता हुं।

उपास का निमंत्रण स्विकारना जैसा उसका निमंत्रण स्विकार किया। सही याने मद्य की लत लग गयी थी। रोज शाम को बियर पिने की आदत सी लग गयी थी। मुझे मिलनेवाली तनख्वां उसके लिये अधुरी थी।

सुर्य देवता ने तडपता हुवा रंग पोंछ दिया। हमेशा की तरह शितल मुद्रा से दिल को निरोप दिया। मैने मेरे मोंह पर का ग्रिस पेंट पोंछा। बेरडेकर की ओंर मालूम नही किया। गोदूताई को बोला नही की, अप्पा काळे को भी पता लगने नही दिया। तिनो पहर के बाद रात के अंधेरे में उस अधिका के चाल में जाकर पहुंचा। घर मालूम नही था। उसने कुछ हिंट्स दी थी। वह दिख नही रहे थे। अंधेरा हो गया। होंठो को उस कडवाहट कैफ की प्यास छल रही थी। उस अंधेरे में बिजली के दिये नही थे। मै बहुतही नर्वस हुवा। खिसे में पैसे होते तो, पिछे की राह नाप लेता। काले पापा का बार नजदीक किया होता। खिसे खाली थे। मुझे बहुत प्यास लगी थी।

एक साईड से मै मुडा तो आश्चर्य क्या की, मेरी निमंत्रीका मेरी ही रांह देख रही थी। उसके हाथ में टिमटिमाता दिया था। मै आया कहते ही वह जलदी आयी। आनंद से बोली, तुम्हारी ही राह देख रही थी चलो।

मै उसके पिछेपिछे गया। जुनापुराना बाडा था। चारो ओर प्याज और लसुनकी खुशबु आती थी। उसका भी बिऱ्हाड आया। दो खोली का संसार था। एक खोली किचन की और एक खोली बैठक की। बैठक खोली में चादर बिछाई हुई थी। एक छोंटासा दिपक जल रहा था। उसके हांथ में कंदील। भोजन कक्ष में गया। मुझे लगा उसकी बुढी मां पाकसिध्दी करती होगी।

मै चादरपर बैठा। वह नाचते हुये आयी। एक आधे पॉईंट की रम की बोतल ले आयी। वह भी कोल्हापूर निर्मीत। मै प्यासा था। लेकीन रम से मुझे वास्ता नही आया था। ठिक है। कुछ तो मुझे मद्य पदार्थ चाहीये थे। मैने वो बोतल आघाशी की तरह ली।

ठहरो हं! सोडा है।

सोडा किस लिये?

वह हंसी। फिर उसनेही सारा कार्यक्रम किया। सोडा और मद्य मिक्स किया। एक प्याला मुझे दिया, एक उसने खुद के लिये लिया। हाथ में हाथ आते ही वह प्याला मैने होंठो की ओंर बढाया और गटगट पि डाला। इसका स्वाद अलग था, तामस था।

वह आंखे फाडकर देख रही थी। उसकी आंखे बहुत सुंदर थी। मै उसका ऋणी था। उसने मेरी प्यास पहचानी थी। वह पुरा करने के लिये मद्य तयार रखा था। मैने बहुत पी ली। सारा बदन बधीर सा महसुस होने लगा। भूख लगने लगी। वैसा अटकते हुये बोला खाना।

तयार मुर्गी पसंद आयेगी। मैने पिने का अध्याय बढाया था लेकीन खाने को अभी तक हाथ नही लगाया था। मैने उसे हां बोला या ना बोला मालूम नही।

वह जरासी मेरे पास आयी। मेरे पैर पर उसने हांथ रखा। आंखो में देख रही थी। उसके होंठ थरथरा नही रहे थे। आंखे अधीर से दिखाई दे रहे थे। यह अनुभव मुझे नया था। उसे क्या चाहीये यह मै समझ गया और मै घबरा गया। तरह तरह के विचार आने लगे। बडी मां की याद आयी, पिताजी याद आयी, मां की यादी आयी। मेरा सर चकरा गया। शरीर में उर्जा निर्माण हो गयी थी। फिर भी मै दुर हुवा। वह वैसेही और नजदीक आयी, और पास आयी। उसके स्वास को कुछ एहसास की बुं आयी। लगा मै मिल गया। जहां नही मिलना था वहां मिल गया। मै और दुर सरक के बैठा। वह और नजदीक आयी। फिर सरकने के लिये जगह ही नही थी। मै एक

कोपरे में आ गया। कोली के जाल में पंछी जिस समय फंसता है और थरथराता है वैसे मै भी थरथरा रहा था। ऐसे बेहोश अवस्था में भी मुझे कुछ सुझा।

खाना लाती हो ना, मैने पुंछा। अभी लाती हुं। वह उठी अंदर गयी। उसी संधी का मैने लाभ लिया। मै उठा, दरवाजे पर रखी मेरी चप्पल मैने बगल में उठाई और वहांसे निकल पडा। फिर मुडकर नही देखा। उस अंधेरे से निकला। रफतार से निकला। कैसे निकला, क्या निकला इसका मुझे कोई मालुमात नही। कही भी मै रुका नही। बस रुका तो रंकालावेशी में ही। गोदुताई के बाडे पास।

यह बात मैने किसी को बताई नही। उसने भी नही बोली। वह फिर से मिली। उसका और मेरा कार्यस्थल एक ही। मुलाकात होती ही थी। मैने उसकी ओर देखा, उसने मेरी ओर देखा। अनदेखा किया। फिर आपस में संभाषन नही हुवा। आज तो उसका नाम भी मुझे याद नही।

पाप की उलटी सिढी मिली थी। एक अनजान ने मुझे विषय वासना नजराना मुझे दिखा दिया था। पुर्व संस्कार ने मुझे इस आघात से बचाया। वह संस्कार पुराने लग रहे थे। दारु पिना कोई पाप है यह मुझे महसुस नही हुवा। मेरे आस पास के सभी आदमी वैसे ही थे। पाप के पराक्रम समझनेवाली निती को दुर्बल समझनेवाली उनके बोलचाल से संस्कार को धो डाला। उनके और मेरे अच्छी लगनेवाली बाते सब समान थी। मै यह श्रेय उनके कर्तृत्व को देना यह मुझपर अन्याय करना है। मै खुद ही दुबला था, कच्चा था, कला साधना की अपेक्षा दुसरे बातो में ही दिलचस्पी बढी। मै गानेवाला युवक गाने के शौक से एखाद गायीका के प्रेम में गीरता तो अलग। केवल किसी ने मुझे हुसकाया और मै बिघड गया और जहां नही जाना चाहीये ऐसी बस्ती का जिना भी चढ गया। वातावरण का परिणाम जिस उम्र में होना चाहीए उस उम्र का था ही। सिनेमा रोल में मैने कितने गुण हांसील किये मालुम नही। दुर्गुनही मैने पचायें। अभिनय की लालसा भी मन में ही रह गयी। शरीरपर वॉर्नीश के बांस से कई बार उलटी भी हुई। यह व्यवसाय प्रारंभ में ही नही लगने लगा। नाना अब मुंबई में नोकरी में था। उसका खत आया। मां और शकु [छोटी बहन] यहां है। काम हो गया हो तो यहां आओ। मैने कोल्हापूर छोडने का निश्चय किया। गोदुताई तथा बेरडेकर बंधु को मैने ऐसा कुछ कहा नही। मुंबई जाकर आता हुं। इतनाही प्रेम का निरोप लेकर वहां से निकला। मैने नायक का रोल किया हुवा फिल्म अभी रिलीज होने को थी। कई मोंह के बटवे बांधे मोंह मई मुंबई में आया। यहां आया तो, घरकुल के आश्रम में नाना को नोकरी लग गई थी। श्री साऊंड आज है उसी के बाजु के एक चाल उस समय उसका सामान था। मां उसके पास थी। दानापाना का सवाल मुझे छुंवा नही। लेकीन मेरा कहने के लिये मुझे कुछ करना जरुरी था। नाना का एक गायकवाड नाम का मित्र था। उसकी पहचानसे एक दिन वाडीया स्टुडीयों में पहूंचा मेरी मुलाकात किससे हुई यह अब मुझे मालुम नही। बहुत चप्पल घिसने के बाद गायकवाड की मध्यस्थी से वाडीयावालो की मुलाकात हुई थी। मेरा ध्यान लिखने को बूरा नही था। अच्छा खुबसुरत युवक था मै। लेकीन पाप का सहभागी।

पोषाख मैला, शरीर में कोट नही केवल शर्ट और पैजामा। गायकवाड ने मेरी महचान कोल्हापूर का एक हिरो की थी। मास्टर विठ्ठल, मास्टर विनायक इनके सरीखा एखाद पात्र मेरे सामने आयेगा ऐसा उस चालक को लगा होगा। मै अन्दर जाते ही वह आश्चर्य करने लगा। बैठो कहना तो थाही। उन्होने बैठो बोला। मै बैठ गया। बताने के लिए मेरे पास कोई छायाचित्र भी नही था। मेरे पास एक 'नागानन्द'का छपा हुआ पोस्टर था। उसमें एक मेरा फोटो था। वह उसने न देखते ही बाजु में रख दिया। मै उसके सामने बैठा था। ये फोटो की कोई जरुरत नही थी। बातचीत शुरु हुई।

उसने पुंछा, तुमने हिरो का रोल किया है?

जी हां।

घोडे पे चढना आता है?

नही।

उंचाईपर से कुदना?

कुदना?

हां, कुदना। रिचर्ड टॉलमेज जैसा।

नही।

मोटर सायकल चलाते हो?

सायकल चलाता हुं।

वह मुलाकात लेनेवाल साहब घुस्से में आकर कहा, 'फिर काहे के हिरो तुम'

नायक का उपरोक्त बाते मैने कभी हासील नही की। वाडीया बंधुने मुझे घर का राह दिखाई। गाल पे थप्पड खाये सरीखा मै चेहरा कर वापस आया।

नाना नाराज नही हुआ। हम बाबा को पुछेंगे वह अगला रास्ता बतायेंगे।

नाना के जीवन में बाबा यह बडे व्यक्ती थे। वह एक हरिजन वृध्द था। दोन्ही पांव से थोडाथोडा चलकर काठी के आधार पर चलता था। मै मुंबई में आया तब वह हमारे परिवार में रहते थे। नाना और मां उनकी खुप सेवा करते थे। मुझे अैसी झुठे आदमी पसंद नही आते थे लेकीन मै उनका विरोध भी नही कर सकता था।

कोण बाबा? उसे क्या मालूमात। इतने मात्र कहा, नानाने मुझे एक पोथी ही सुनाई। उसके गुरु गौरव गाथा के वजह से मुझे भी पिछले दिनो की याद आयी।

पहले कभी कभार मै छोटा या उस समय नाना ओगलेवाडी को नौकरी पर थे। वहा उनकी तबीयत बीघड गयी। उसे घबराहट सी महसुस हुई। बडे सौतेला भाई ने नंदगांव को लाया था। और मै और भाऊ नांदगांव को ही थे। नाना एकाएक पसीने से तर होता था। वह आधो से ज्यादा बेहोश होता था। डाक्टर को भी समझ में नही आ रहा था। भाऊ घबरा गये थे। नाना के बिमारी को कुछ आराम नही हो रहा था। एक समय शाम को हमारा देयक नांदगांव में आया। नाना का दु:ख उसकी नजर में आया। वह मेरे पिताजी के उम्र का पोक्त आदमी था। नाना की घबराहट देखकर भाऊ के कहा। क्या हुआ इस गंग्या के यही तो समझ में नही आर रहा है। ओगलेवाडी से आने के बाद रोज शाम को इसका ऐसा ही चल रहा है।

उस किसान ने थोडा बिचार किया। नुक्स मिले सरीख्रा होकर कहने लगा मै ले जाता हुं इसे।

कहां? भाऊ ने पुंछा।

नाशीक को।

ले जा लगे तो, भाऊ का विश्वास था। उस वाटकरेपर। वह किसान बैलगाडी से मेरे भाई को नाशिक में ले आया। चार आठ दिन से नाना वापस आया वह अच्छा होकर।

उसने कहां, किस भुत ने झपटा थ। उसका वह भूत नाशिक के देवर्षी ने निकाला। नाना की बिमारी जीसने दुरुस्त की वह देवर्षी याने यह बाबा।

बाबा अब अपने उपकृत्यो का आसरे से आया था। नाना सके पांव दबाता था। उसके शरिर को तेल लगाता। मुझे यह बिलकुल अच्छा नही लगता था। नाना की लेकीन उस गुरुमाऊली पर अपार श्रध्दा थी।

मै वाडीया की ओर से नकार लेकर आया, उस रात को नानाने बडी आवाज में बाबा को पूंछा।

'बाबा यह मेरे भाई का नौकरी क्यों नही लगती?'

गया था क्या कही नौकरी मांगने?

हां आज ही गया था।

फिर?

मालक ने नही बाला।

क्यों?

कुछ समझ में नही आर रहा?

मै बोलु आंखो की कुछ विलक्षण हलचल कर बाबा बोला, नाना ने आदर से हाथ जोडे। मां भी हात का काम छोडकर सुनने आयी।

उस लडके को एक भूत ने झपटा है। आज वह कही ता भी नौकरी मांगने गया था। तब वह भूत साथ में था। वह उन दोनो के बिच में खडा था। इसका गुण मालक को दिखा नही। बाबा के उस अजब से शोध के कारण मै चकित हो गया।

मैने उनसे पूंछ, मुझे कहां लगेगा भूत?

लगा है।

कैसे? किस कारण?

तु कहां था?

कोल्हापूरी।

काम कहा करता था?

एक फिल्म कंपनी में।

कामके पास एक वृध्द पिपल था?

मुझे याद नही।

लेकिन मुझे दिखता है। एक शाम को तु उस पेड के निचे बैठा और तुझे भूत ने झपटा। वह तेरे शरीरपर है। बाबाने बहुत ही उकसाया। लेकीन मुझे उसका एक शब्द भी पटा नही। नाना बाले 'चरण छूं बाबा के'

मैने चरण ता छुये लेकीन मुझ उसका कुछ भी पटा नही। नाना ने उस के बिनंती किया। बाबा जैसे मेरे संकट का निवारा हुआ वैसे इसका भी संकट हर करो।

बाबाने आंखे बंद की और हां के समान गर्दन का हिलाया।

उस बाबा ने फिर कुछ और किया। मेरे बिछाने के चारो ओर राख बिछाई। नाना के हाथे ताडी का पेवा बुलाया। मुझे खुप ताडी पिलायी। बाबा का यह तंत्रमंत्र मुझ अच्छा नही लगा। लेकीन उस पेय से मेरा तळीराम खुश हुआ। कोल्हापूर छोडने के बाद जबान को मादक द्रव का स्पर्श ही नही हुआ था। मैने खुप पी और बिछाने पर सो गया। बाबाने आटे की पुतली बनायी और मेरे बिछाने के चारो ओर रखा।

अब नींद खुप लगी। अपनी आवाज में उसने कहां, क्यों?

मै बोलता हुं इसलीए। यह पुतलीया अब नाचने लगेगी। वह देखकर तुझे डर लगेगा, इसकी बजाय मस्त सो जा।

मै चुप रह गया। पेट में पेय जाने के कारण मुझे नींद अच्छी लगी। सुबह नींद खुली तो कुछ गुनगुनाने लगा। बाबाने कहा की, लडके के शरीर में का भूत निकल गया। मुझे वह सब नाटक लगा। मैने वैसा कहते ही बाबा भडका। उसने बिना सोचे समझे एक कनपट पें लगायी। मै चकीत रह गया। नाना को यह बात मैने बतायी। नाना को आनंद हा गया। उसने खुष होकर पुंछा, बाबाने कनपट पे मारा तेर?

हां।

भाग्यवान है।

अं?

अरे वह कनपट में नही आशिर्वाद है। बाबा के आशिर्वाद से कुछ भी भला नही हुवा। मै बेकार रहा। बाबा लेकीन हमारे परिवार में खाता रहा। नाना उसकी नौकरी करने में ही धन्यता मानने लगा। मां को लेकीन कुछ दिनो बाद बाबा का अस्तित्व अच्छा नही लगा। नाना के डर से वह करती रही। वृध्दावस्था एवं उनके रहने का तिरस्कार आने लगा। मां की अवस्था मैने भी देखी। उसे विश्वास में लिया। हम दोनो ने निश्चय किया की, नाना सर पर बैठा हुवा यह जिंदा भूत भगाना चाहीए। हमारे कारस्थान का पता न जाने नाना को कैसा लगा। उसे बहुत बुरा लगा। वह विनम्र होकर बोला। अरे बाबा न होता तो मै भी तुम्हे नही दिखता। उसके शरीर और मन में कई देवी देवतांओ का वास है। वह खुद मुक्त है। जिद्द करता है, वह बाबा नही। उस समय उसके अंदर संचरण करनेवाला वह देवता जिद करता है।

भगवान क्या अंडे और मांस मांगता है क्या? उसके शरीरपर एक अवलीया है।

अवलीया?

हां, अवलीया, फिर -

मुझे विश्वास था, अवलीया, फिर जादुटोणा यह सब झुठ है। मै जब मुंबई आया तब हमारे घर को बाबा का शेअर खतम हो गया था। उसे भी मेरे बारे में विश्वास नही था। मै सिनेमा सृष्टी का पाणी पिया हुवा आदमी। मै क्या उसके भगवान पर विश्वास करुंगा। उसे वैसी शंका आयी थी। इसीलीये उसने कुछ तो भी भूत मेरे सरपर बैठाया था। उसे छुडाने का नाटक भी करके देखा।

मां मेरी ओर हो गयी। एक दिन मैने नाना को कह दिया, नाना तेरे इस बाबा को घर से निकाल।

उसने आश्चर्य जताकर नकार दिया। मुझे वह देखा नही जायेगा। मै वह करुंगा तु मत कर। हम हमारा देख लेंगे। तु घर में चार दिन मत आ। दोस्तो की ओंर ही रह।

नाना कुछ भी भुला नही। उसकी आंखे लेकीन भर आयी। बहुतही कष्टी स्वर में उसने कहां, मेरा क्या मै रहुंगा चार दिन बाहर, लेकीन तुम उसे दुःखाकर दुःखी होंगे।

अभी अभी तो कहां, सुख का पहाड हरियाली लाये है। जहां अस्सी वहां पिचास्सी, मैने कहां। नाना तिन-चार दिन गायब रहा। बाबा का खाना टुट गया। वह हमेशा पुंछता नाना कहां है? उसके प्रश्न की कई बार बारी होने दी। और कहा, नाना आनेवाला नही है, तुम भी इस घर में मत आओ। आहा?' बाबा ने संतप्त स्वर में कहां। मां ने गर्दन निचे झुका ली। बाबा समझने का वह समझ गया। 'फिर जोर से बोला। मुझे थोडी राख तो दो गे?

मैने मां को कहा, सारी शेगडी उस के सामने रख, जितनी लेनी है उतनी राख लेने दे। बाबा ने राख ली और हमारे सामने बिखेर दी। एक छोटेसे राख के ढिगारे पर से हाथ घुमाते हुये कुछ मंत्र बोलता रहा। दात ओंठ खाते हुये घुस्से से तन गया। आखीर में कडु जहर शब्द में गरजा। निसंतान होगा, इस घर को चिराग नही मिलेगा, वंश चलाने के लिये कोई भी नही मिलेगा।

बाबा घर के बाहर गये। लेकीन जायेंगे कहां। तिन-चार दिन वह घर के आसपासही घुमता रहा। नाना नही आया और बाबा की मुलाकात नही हुयी। हमारे सारे पडोसी ख्रिश्चन थे। उसमें से किसी ने भी उस हिंदु बैरागी की दखल नही ली।

फिर वह गया। कहां गया कुछ पता नही चला। मै मुंबई में रहा। बेकारी में रहा। हमारे घर के पास एक कुडप्या का होटल था। वहां ग्रामोफोन था। उसपर न्यु थिएटर्स की रेकॉर्ड रातभर बजती थी। मै उस होटल में जाकर बैठता था। सुनसुनकर वह गाने याद करता था। उसका नोटेशन एक वही में पेन्सील से लिखकर रखता। ऐसा आलसी तथा गतीहीन जिवन चल रहा था की, एक दिन पुणतांबे से खत आया। पिताजी बिमार गिर गये थे। उस बात सेही मेरी आंखो में पाणी आया। भाऊ को मिले बगैर चैन मिलता था। मां, बहन और मै तिनो पिताजी की ओंर गये। पुणतांबे को पिताजी की एक वृध्द चाची थी। उसके शरीर में भी जगदंबे का संचार होता था। एक बार ऐसेही स्थीती में उसने कहां, मास्तर याने मेरा दाहीना हाथ मै टुंटने नही दुंगी। मेरा उसपर भी विश्वास नही बैठा।

बाबा के दृढता का एक सात्वीक प्रकार लगा। पिताजी को मुत्रशया की परेशानी थी। पेशाब भर के रहती थी। घरगुती और बाहर के उपाय बहुत किये थे। लेकीन गुण नही आया। मुंबई के बाबा की शाप वानी मुझे याद आयी। आदमी का एक बार धीर छुंट गया तो, झुठ भी अर्थपुर्ण लगने लगता है। पिताजी को कुछ भी अच्छा नही लग रहा था। पुणतांबे मे ना जाननेवाला वैद्य और ना डॉक्टर। फिर उन्हे येवला लेकर गये। वहां एक मिशन

हॉस्पीटल था। वहां की ट्रीटमेंट शुरु की। हॉस्पीटल के पास किसी का तो भी बगीचा था। वहां बस्ती में पिताजी के लिये एक खोली भाडे से ली। पिताजी के एक दोस्त थे। अण्णासाहब सावलकर उसका नाम। वह भी साथ में थे। पिताजी की तबीयत दिन ब दिन बिघडती गयी। पेट इतना भरा हुवा की, शुध्द भी नही रहने लगी। मेरे आंखो में आंसु थम नही रहे थे। कई कई किस्से मुझे यांद आने लगे। इसी भाऊ ने मुझे बहुत प्यार दिया। इसी भाऊ ने मुझे गायन स्कुल में डाला। इसी भाऊ ने मुझे बचपन में तमाशा दिखाया। मेरे हांथो दौलत जादा करवाया। इसी भाऊ ने अवधुत वेश में घर से बाहर किया। यही भाऊ पागल के समान मेरे पिछे आये। इसी भाऊने मेरे दुध के लिये बडे भाभी को फटकारा। यही भाऊ रोती हुंयी आंखे लेकर मुझे ढुंढते हुये गोदूताई के दरवाजे तक आया। कितनी यांदे भाऊ के साथ जुडी है। लेकीन भाऊ को बोलना भी सुधर नही रहा था। एक दिन रोते रोते अण्णासाहब को पुंछा, अब मै क्या करुं?

राम, कठण समय में भगवान के सिवा कोई आधार नही होता, उसका नाम लो, उन्होने कहां।

कैसे लेना मुझे वह भी मालुम नही था।

व्यंकटेश मंत्र पढते जाओ, उन्होने कहां।

मैने बाजार में से व्यंकटेश मंत्र का किताब लाया। उस दुःख के वातावरण से दुर जाकर पेड के निचे जाकर पढा। कौनसा पारायण करने लगा?

ओ नमोजी हे रंबा - सकल तु प्रारंभा।

याद कर तुरी स्वरुप शोभा, वंदन तुझे करता हुं।

मुझ में का आंतरीक भाव एकदम उजागर हुवा। शेष याष्टी व्यंकटेश के वह स्त्रोत्र देखते देखते याद हो गया।

'क्षय अकस्मार पुष्टादी रोग, ग्रंथ पढन से दुःख दुर भोगे' यह मेरी यांचना गिरीच्या राजाने सुना नही। कान के आड में रख दिया। मै व्यंकटेश स्त्रोत्र पढ रहा था, होंठ बडबड कर रहे थे, कलेजा धकधक कर रहा था, आंखो से पानी गिर रहा था। वक्त लेकीन थम गया था। हलते न हलता था।

'राम' किसी ने आंवाज दी। भाऊ बोल रहे है। मै दौडता गया। भाऊ खटीया पर पडे हुये थे। उसने मुझे इशारे से नजदीक बुलाया। मै गया। खटीया पर बैठा रोना थम नही रहा था।

'राम' पिताजी खिन्न आवाज में बोले।

'भाऊ', मैने रोते स्वर में कहां।

मै जो बोलता हुं, सुन। बाई इस जात पर विश्वास मत रख। शरीर के सभी दरवाजे स्वच्छ रख। उपर के तिन और अंदर के तिन। भाऊ कुछ तो भी बोल रहे थे। उनके बोलने को कोई माईने थे क्या? उन्हे कुछ अनुभव आये थे क्या? मुझे वैसा भविष्य में कुछ अनुभव लेना पडेगा ऐसा उन्हे लगता था। क्या था? किसको मालुम? मरते समय इतनाही बोला और उन्होने मेरे पिठ पर हाथ रखा। वह हाथ मेरे पिठ पे से घुमा। वह घुमता घुमता थम गया। उसमें की उर्जा कम हो गयी और भाऊ गये। वृध्द चाची के मुख से जगदंबा ने सत्य बोला। उसका दाया हाथ टुट गया, जलकर खाक हो गया। उस तामसी देवर्षी के शाप से मै अनाथ हुवा क्या? किसीसे कुछ मालुम होता है। मालुम तो होता है। भाऊ ने मेरा कुछ भी नही देखा। उनकी इच्छा मेर हांथो पुरी हुयी। उन्हे सुनने को भी नहीं मिली। मेरे भाऊ गये। उनकी और मेरी मुलाकात अब असंभाव्य है।

भाऊ जाने के बाद येवला में रहने का काई मतलब नही रहा। कुछ दिन हम सभी लोग पुणतांबे रहे। मां और बडे भाईयों ने पुणतांबे के स्थावर मालमत्ता का बटवारा किया होगा। मै दुःख की छाया में ही रहता था। बार बार पिताजी की याद करता था। वक्त केवल फुलों का ही निर्माल्य करता है ऐसा नही। वह पहाडो को भी जमीन दोस्त कहता है। सागर का भी रेतीला मैदान कर देता है। मेरे दिल में से दुःख का ताजा स्वरुप वक्त के नुसार कम होने लगा। मै फिर से जीवन के रस्ते से चल रहा था।

फिर से मै मुंबई आया। फिर से नाना के घर रहने लगा। फिर से नौकरी के लिए दौडता रहा। छाच में तुर नही लगती थी। किसी ने कहा की शिवडी में एक नया सिनेमा संस्था शुरुहुई है। वहां चालक आदमी का भरती कर रहे है। वह नयी संस्था याने 'मिनर्व्हा युव्हिटोन' और वही चालक याने प्रसिध्द नायक तथा दिग्दर्शक सोहराबाजी मोदी।

सोहराबजीका रंगभूमीपर का अनुभव ही गाढा था। उनकी आर्य सुबोध नाटक मंच सारे भारत में प्रख्यात थी। चित्रपट यह रंगभूमी का यंत्रात्मक प्रकार है। उन्होने चित्रपट बनाने का फैसला किया। मैने उन्हे मिलने का मन बना लिया।

मेरे पास भी कुछ ना कुछ अनुभव था। केवल एक ही चित्रपट में नायक की भूमिका की। किसी के जरिये मिलने की जरुरत मुझे महसुस नही हुई। जरुरत महसुस हुई सिर्फ एक कोट की। इतने व्यक्ती को मिलने जाना याने वेशभूषा थोडी ठीक ठाक होनी चाहीए।

नाना की स्थिती मुझे कोट ले देने की नही थी। मैने मां को आग्रह किया। उसके पास भी उतने पैसे नही थे। जिससे वह कोट सिला दे।

मुझे याद आया मैने मां के पास कुछ सोना रखा था। पुणतांबे को थे उस समय। पाथर्डि के लोगो ने मुझे सोने का पदक दिया था। वह इनाम मुझे गाणे की वजह से मिला था। नागपूर में ऐसी सेकडो इनाम मिले थे। वह सब चांदी तथा सोने की थी। वह मां को मैने दिये थे। मां ने उसे जतन कर रखा था।

मां वह बिल्ला कहां है? मैने पूंछा।

कौणसा?

सोनेका, पाथर्डी को मुझे मिला हुआ वह।

है मेरे पास क्यों?

मुझे वह चाहिए।

क्यों चाहिए?

मोड के लिए।

क्या करेगा मोडकर?

कोट सिलाने वाला हूं।

बिल्ला मोडकर कोट?

उससे क्या होता है?

घर तोडकर मंडप बांधनेवाला हुशार दिखता है।

रहने दे वह बिल्ला दे।

मै नही दुंगी।

फिर कोट कैसा सिंयू?

अरे कुछ धंदा पाणी कर पैसे कमा और बाद में कोट सिला।

कोट के बीना धंदा और रोजगार नही मिलता।

कोट का और नौकरी का क्या संबंध?

मां को यह सब समझाना पडा। उसने वह इनाम मेरे सामने घुस्से से फेका। मै उसे शांती से उठा लिया। बाजार में उसे दिखाया उसके रोख रक्कम रु।१८ मिले। मैने आधा सुती आधा लोकरी कपडा खरिदा। एक फॅशनेबल कोट सिलाया। वह कोट पहना और निकाल शिवडी की ओर। वह दिन ग्रीष्म ऋतु के थे। उस कोट ने मेरा शरीर गरम हुआ। पसीने से तर मिनर्व्हा के महाव्दार पर पहुंचा।

वहा लाईन लगी हुई थी। मै भी एक लाईन के पिछे जाकर खडा रहा। मेरे पिछे भी कुछ उमेदवार खडे रहे। बहुतसारा तपने के बाद मुझपर बारी आई। नोकर की पसंद करने का काम खुद सोहराबजी कर रहे थे। मैने उन्हे प्रथम ही देखा। लालबुंद कांती का सफेद कडे पहना हुआ रुबाबदार आदमी देखकर मै थोडा बिचका।

सोहराबजी बोले, आवो।

मै अन्दर गया। पास में ही एक बैठक थी। उसपर एक हार्मोनियम था।

बोलो गाणा।

फिर मेरे खयाल में आया की इस परिक्षा का विषय गायन है। मै पेटी के पास बैठा खुद पेटी बजाने लगा। गाता रहा। गाने की तर्ज मैने गायी और उन्हो कहा बस ठीक है।

परिक्षा पास हुये उमेदवार एक रुम मै बैठाये जाते थे। मेरी भी खानी वहां हुई। मै उस रुम में जाकर बैठा।

एक घंटे के बाद एक एक को बुलाना शुरु हुआ। मुझपर भी बारी आयी। मै अन्दर गया। मोदी खुद के कार्यालय में आसन पर विराजमान थे। मै अन्दर जाते ही उन्होने कहां, आवाज अच्छा है। रहोगे हमारे यहां?

हां, मैने कहां।

पगार का क्या? उन्होने पूंछा।

आप बोलीए।

दरमहा पंधरा रुपये पगार देंगे।

पंधरा?

तो कितना? लगा तो दादर से शिवडी पास देंगे, तिसरे क्लांसं का। फिर हुआ काम। मैने मेरे जेब में से नागानंद का हॅंडबील निकालकर उनके सामने रखा और कहां मैने हीरो का काम किया है और आप पंधरा रुपये पर काम करो बोलते हो।

हम इतनेही दे सकते है। कबुल होतो बोलो।

नही पुरायेगा।

नही पुरायेगा तो जावो।

मै सही में पलटा और चलते चलते घर मे आया। खुद के स्वाभीमान की बात मैने मां को सुनाई। मां ने मुझे उलटी सुनाई वह दिल को लगने के स्वर में बोली। तू क्यों करेगा नौकरी? खाने को मिलता है, दो बार। नाना कमाता है और तूम क्यों करोगे कष्ट?

मां के इस प्रकार के बोल ने का मुझे घुस्सा आया। बदनपर का कोट न निकालतेही मै वापस शिवडी को गया। सोहबरावजी को मिला। वह खाना खा रहे थे। मै नम्रतासे उन्हे कहां। जब मेरी गलती हुई साहब। पंधरा रुपये में मै मेरी नोकरी करने के लिए तयार हुं।

हां लेकीन अब रेल्वे पास नही मिलेगी?

सोहराबजी ने कहां केवल दरमहा पंधरा रुपये।

कबुल है, मैने कहां।

मेरा मिनर्व्हात प्रवेश हो गया।

'सयदे हावस' नाम का सिनेमा अपना प्रथम निर्मीती मिनर्व्हाने हात में लिया। सिनेमा में यह विशेषता थी की वह रंगमंच के हिसाब से हीकरणा था। जगोजगह पर स्थल या दृश्य बदलने की बात इस सिनेमा के लिए उपयोग में नही लायी जायेगी। रंगभूमीपर चलनेवाले नाटक जैसा का तैसा चित्रीत किया जानेवाला था। परदे, प्रवेश, गायन इत्यादी रंगमंञ के रुप में ही दिखाई देणे वाले थे। खुद सोहराबजी इस में नायक की भूमिका करनेवाले थे। नायिका के लिये शामा नाम की नायिका काम करनेवाली थी।

मेरा चुनाव संगीत विभाग में हुआ। लेकीन मुझे पहला काम बताया गया था, भाला पकडकर सिधा खडे रहने का सिद्दी रक्षक का। कोल्हापूर का नायक मै, मुंबई आकर फालतू संघ में शामील हुआ। यही इस घटना का अर्थ था। एक्स्ट्रा नट का काम मुझे अपमान के सरिखा लगा। पण करता क्यां? फिर से से करणा जरुरी था। नाना ने कमाना और मै ने खाना। यह चलते रहना मुझे भी अच्छज नही लगता था।

एक बार ऐसा ही दरबार का सीन चल रहा था। मै भाला पकड कर खडा था। मुख्य रोलवाले पात्र लंबे संवाद बोल रहे थे। रंगमंचपर बहुत भीड थी। दस पांच बार प्रॅक्टीस हुई और चित्रण को प्रारंभ हुआ। वक्त रात का सुबह से बिना रुके चल रहा था। मै अपना पुतले के समान खडा आंखपे में नींद आर रही थी। चित्रण चलते समय ही कभी मुझे झपकी आयी और लडखडा कर निचे गीरा। मुख्य पात्र का संवाद ठाणठाण घंटी बजती है वैसे चल रहा था।

'कट',

मोदी सहाबने दृश्य काटा।

ओ।के।रेकॉडीस्ट चिल्लाया।

कॅमेरा का कपडा निकालकर काले कपडे से मुंह निकालकर कॅमेरामन चिल्लाया अरे साहब रिटेक करना पडेगा।

क्यों? मोदी ने कहां।

वह सिंहासन के पिछे एक पहरेदार था। शुरु में यह कहां है।

सबकी नजर मै जहां खडा था वही गडी। वह जगह खाली थी। मै नीचे गीर गया था। गीरते ही मुझे नींद आ गई थी। सहाब खुद मेरे पास आये और मुझे उठाया। मै घबरा गया। बहुत ही चल बिचल हुआ। लेकीन मोर्दी एक शब्द से भी मुझे नही बोले। उन्होने मुझे मुंह पर पानी मारने के लिए कहां। मैने वेसे किया और नींद तुट गयी। फिर से भाला पकडके खडा हो गया। फिर चित्रण को शुरुवात हो गयी। चार छे: महिने में वह सिनेमा तयार हो गया और वह साफ फेल हुआ। पर्देपर का नाटक प्रेक्षक को पसंद नही आया।

दुसरा सिनेमा निकालने का सोचा, 'आत्मरंग' इस कहानी में सन्यासी बहुत दिखाई दिये। मै सन्यासी में रंग रहा था और संगीत विभाग में भी हमाली कर रहा था। हुआ ऐसा की यह दुसरा सिनेमा भी साफ गीर गया। कंपनी ने अपने नौकरो की कपात की। माहवार पंधरा रुपये मिलनेवाली भी नोकरी जाने से मै डर गया। मै दौंडतेही मोदी साहब की ओर गया और उन्हे विनंती कर बोला सहाब मुझे मत निकालो।

सहाबने थोडा बिचार किया और पुंछा तुझे क्या आता है?

मुझे गाणा आता था वह तो मैने उन्हे शुरु में ही गाकर बताया था। मेरा अभिनय तो अभि अभि मालूम हुआ। नायक का काम करनेवाला मै उसमे छोटे से नट के गर्दी में ठीक से खडा भी नही रह सकता था। मै प्रश्नो का उत्तर क्या दुंगा। कुछ तो बोलने के लिए बोला मै हार्मोनियम बजा सकात हुं।

अच्छा तो आज से तुम म्युझीक में ही काम करो। हार्मोनियम बजाकर तुम्हाना काम। सोहबरावजी ने कहां सुर को सुर मिलावो। मेरी जगह मुझे मिली, चेहरे को रंग लगाने की किटकिटसे मुक्त होकर मै स्वर सृष्टी के आसपास आयी।

मिनर्व्हा संस्था का पुराना पेटी मास्टर बिमार रहने की वजह से निकाला गया था। उसकी पेटी मेरे हाथ में आय गयी। सप्रे मास्टर की स्कुल में गाने के साथ पेटी बाजाना भी सिख लिया था। चलनेवाले को खडा रहात आना ही चाहीए। गाणेवाले को पेटी आणी ही चाहिए। मेरा हिसाब यह ऐसा था। मुझे घंटी बजाना आता है। यह मैने कभी उनसे कहां नही था।

मैं मिनर्व्हा संस्थे का संगीत विभाग का पेटी वाला बन गया। उस समय संगीत दिग्दर्शक थे बुंदुखां।

यह बुंदुखां सहाब सभ मोदी परिवार के संगीत के गुरुजी थे। बहुत ही उंची पुरी और धीप्पाड आसामी थी। उन्हे संगीत के क्षेत्र में बहुत ही ज्ञान था। लेकीन बाकी विषयों में उतने उतरे नही थे। वे बडे शान से खुद के हाथ

की मनगट पर सोने की घडी बांधते थे। लेकीन घडी में कितने बजे यह उनको नही समझता था। वह अपनी घडी को मेरे सरीखा ही सामने रखते थे और बडे जोर से बोलते थे कितना बजे है भाई?

इस बुध्दुखां ने मुझे पहले से ही परेशान कर रखा था। पेटी बजाने का तो रहा उसने मुझे पेटी को हाथ भी नही लगाने दिया। और मुझे निम्मांकीत काम बोलते थे।

जाओ चार प्याली चाय कहके आओ।

जरा सिग्रेट ले आओ।

बनारसी पान ले आओ।

वह मुझे चपराशी कह कर काम करवाते। उसने मुझसे इस तरह का व्यवहार क्यों किया यह मै नही जान सका। आखीर मुझे मालूम हुआ की जो जगह मुझे मिली है व जगह उसके शागीर्द को मिलनी चाहीए थी। मोर्दी ने उसको मालूम न होते ही भर दी थी।

खुद संगीत दिग्दर्शक मुझपर नाराज थे। लेकीन बाकी के वाद्य बजानेवालों में मै पॉप्युलर हुआ। तब प्लेबॅक सिंगर मिक्स नही हुये थे। प्रत्यक्ष रुपसे चित्रवाणी के समय ही गाणे भी ध्वनी मुद्रीत करना पडाता था। स्टुडीओ के बाहर शुटींग रही तो हम गाणे बजानेवालो को उनके साथ जाना पडता था।

कॅमेरा के कक्ष के बाहर रहकर गाणेवाले हिरो हिरोईन को साथ करना पडता था। ऐसे समय कभी पेडपर बैठकर पेटी बजानी पडती थी। कभी हिरो पेड के डांगीपर बैठा तो हमें पडे के नीचे रहकर उसका स्वर संभालना पडता था। इस खेल में बुध्दुखां कभी नही होते थे। ऐसे समय में मै संगीत मेले में आगे रहता था। पेटी बजाता था, स्टुडीओ के आंगण में खां साहब खुद पेटी लेकर बैठते थे मै केवल गरुड की तरह चेहरा करमे खडा रहता था।

आत्मरंग यह सिनेमा खतम हुअ और बुध्दुखां कंपनी छोडकर चले गये। नये संगीत दिग्दर्शक आये हबीब खां। उस आदमी ने आने के साथ ही मुझे अपना साथीदार बना दिया। मेरी तबीयत खुष हो गयी। वह आदमी बडा ही हसमुख था। वह पतियाला का रहनेवाला था। मस्त आदमी। उसने मेरी तनखाह भी बढा दी। मुझे नये काम भी उसकी तरफ से मिले। हबीब खान ने शास्त्रीय संगीत शिक्षण की एक कक्षा भी निकाली थी। यह कक्षा भरती थी। उस कक्षा पर उसने मुझे शिक्षक की तौर पर चुना।

मै खां सहाब के पास पढता और उनके नये विद्यार्थी को प्राथमक स्वरुप की पढाई कराता।

मेरा सारादिन ही फिर संगीत के संगीत में ही जाने लगा। सुबह चार बजे मै खां सहाब के तरफ जाता। यह मुझे एक चीज जरुर कहते थे। दिन निकलनेतक उसे मै रियाज करता। खां सहाब फिर से चारपाई पर सोकर खर्राटे करते थे। सुबह उनके विद्यार्थी आते थे। छः बजे तक मै उनका पिरेड लेता था। बाद में मिनर्वा की तरफ जाता था। मिनर्व्हा की नोकरी शाम छः बजे तक होती थी। मै फिर वापस आना तो गायन कक्ष में। फिर से नऊ बजे तक अध्यापन कार्य चलता था। मुझे मद्यपान की याद आती थी।

नाना अब मुंबई में नही था। वह कही तो भी नाशिक की कायसा में नोकरी कर रहा था। मां और शकु मेरे साथ थे। मेरी मिलकीयत अभी भी बोलने सरीखी नही थी। वह बहुत ही कम थी। फिर दारु कैसे पियेंगे। इस दरम्यान मैने नया शौक लगा लिया। भांग पिना शुरु किया। अभी दादर विभाग में विजय नगर बिल्डींग है। उसके सामने एक भांगवाला भैय्या था। उससे मैने संबंध रखा था। रातको नऊ बजे गायन स्कुल से छुटा तो उसके यहां जाकर बैठता था। उस समय तक उसकी दुकानदारी खतम होनी थी। भांग का बर्तन खाली होता था। मै उसके हाथ में एक आना रखता और वह भांग का ग्लास गले में उतरता था। घर पहुंचने तक बहुत ही आनंदमयी लगता था। घर जाकर मै खाना खाता और मस्त निंद लेता था।

हबीब खां के विद्यर्थी को मैने क्या सिखाया मालूम नही पर मेरी मेहनत कसके हो गयी। मेरा सुबह का रियाज इतना थी की प्रातः वह शरिफा और उसके सारे भाडेकरु हबीब खां के रुम में इकठ्ठा हुये। शरीफा गुस्से से हबीब खां सहाब को बोली 'इस लडके का सुबह सुबह चिल्लाना बंद करो। नही तो आपको भी जगह खाली करनी पडेगी'

हबीब खां मुझे शांती से कहने लगे, 'बेटा राम वक्त मिलनेपर रियाज किया करो। औरों की नींद खराब करना अच्छा नही।'

मिनर्व्हा में एक काम करनेवाला, एक गौतम नाम का युवा मेरा जानी दोस्त बन गया। उसे मेरा शौक बिलकुल ही पसंद नही था। भांग पिना याने भाडे का शौक मान ता था। उसने और उसके साथीयों ने एक कट किया। मै घर जाने के पहलेही वह मेरे घर गये और मेरी मां को बोल दिया। राम आज भोजन के लिये घर में नही आयेगा। हम सब दोस्त खाना खाने बाहर जा रहे है।

रात को नौ बजे मै गायन स्कुल से निकलने के बाद भांग की दुकान में निकलता, उतने में यह जथ्था मुझे रास्ते में मिला। उन्होने मुझे दिल भर के भांग पिलायी। फिर वह मुझे प्लाझा सिनेमा के सामने के एक खानावल में खाना खाने आये। मैने क्या खाया? कितना खाया इसका मुझे कोई पता नही चला। होश उड गये। दिये की बिंदीया सेंकडो दिखने लगी। मेंदु पर से ताबा तुट गया था। चलते भी नही आता था, बोलते भी नही आता था। वस्तु भी पहचानमें नही आती थी। बार बार आंख बंद चालु करने लगा। दोस्तों ने मेरी मजाक उडाना शुरु किया। कोई भी इमारत की ओर उंगली बताकर मुझे कहने लगे, राम यह तेरा घर। मै पागल के समान उस दिशा में देखने

लगा। बंद दरवाजे को धडकना या किसी की गांलीया खाकर वापस आने लगा। वह हंसते रहे। यह सब सुबह तक चलता रहा। मेरी नशा उतर गयी। होश में आने के बाद मैने कसम खायी, पुरी जिंदगी में भांग को हाथ नही लगाऊंगा। मेरी भांग छुट गयी। सही में छुट गयी।

हबीब साहेब मिनर्व्हा छोडके गये। हगत नाम के कश्मीरी दिग्दर्शक आये। वह आदमी भी बहुत जिंदा दिल था। उसका संगीत का ज्ञान अपार था। उसने पुरा खाता ही नया कर दिया। अंग्रेजी वाद्यपर देसी राग बजाते आता है यह उसने बताया। कितनेही गोवा के वादक मिनर्व्हा में लाया। देसी तरीके से नोटेशन लिखने की आदत पहले से थी। लिखनेवाला संगीतकार यह एक नयी दिशा मुझे मालुम हुई। आलसी वादक इसलीए मुझसे प्यार करने लगे। संगीत विभाग में मेरा नाम लोकप्रिय हुवा। हुगन भी मुझपर प्यार करने लगा। वह मुझे लेकर मद्यपान की महफील करने लगा। उस समय मुंबई के बडे बडे होंटलो में अंग्रेजी वादक के ताफे रहते थे। मैने खुब सुना, पाश्चात्य संगीत की देसी गाने लगी तो लोकप्रिय होंगी ऐसा एक अंदाज मैने मन में बांध लिया। हुगन गाने की चाल करता था। उस की स्वर लिपी करने को कहना उस समय मै लिख लेता। फिर वह चाल मै खुद गुनगुनाता था। मेरा मुझेही कुछ नही सुझता था। थोडा बदल करके मै मेरी सुधारणा की। स्वरलिपी उस लेखन में डाल देता था। हुगन के ख्याल में नही रहता था। मै ने किया हुवा बदल वह मान्य करता था। मुझे आनंद होता था। यशोदा ने देवकी के बालक प्रेम से खिलायें वैसे वह मेरी चाल अपनी कहकर पेश करने लगा। सुजन का यह आनंद मुझे बंदीश्त रखना अच्छा नही लगता था।

हुगन के बाद मिरसाहेब नाम का एक ग्यानी गायक संगीत दिग्दर्शक कर के आया। बनारसी गायकी यह उसके बांये हाथ का खेल था। उसके सहवास में मै बहुत कुछ सिखा। उस ग्यान का पृथक्करण नही करते आयेगा। लेकीन मिरसाहबसे मुझे खुब मिला। पहिले दिग्दर्शक के समय मै चाल निर्माण करने का आंनद मेरे पहचान का हो गया था। अब मुझे मेरा वह शौक ही हो गया था। लकीरों का एक चित्र बनता है वैसे स्वरों का भी चित्र बनता है। इसकी जान हो गयी। विभीन्न दिग्दर्शक के हांथो काम करने की वजह से उस हर एक की विशेतांओं का मेरे मन पर नया संस्कार हुवा।

मिनर्व्हा के साथ ही वह अन्य चित्रपट का संगीत दिग्दर्शन कर रहा था। उस में एक चित्र स्टंट का था। उस फिल्म का काम करते समय भी वह मुझे साथ ले जाया करता था। उस फिल्म का नायक एक मराठी कवी था। भगवान पालव वह उस सिनेमा दिग्दर्शन कर रहा था। सिनेमा का नाम था, 'बहादुर किसान' भगवान खुद गाता था। मिरसाहब की स्मरणशक्ती भी काम के पुर्ती थी। उनके चाल में कुछ खुद के रंग मिलाना मुझे मुमकीन हुवा। मेरा कौनसा बदल स्विकारते और कौनसा बदल नही स्विकारते यह मुझे मालुम हुवा। मै भी सुर या चाल निर्माण कर सकता हुं। मै भी संगीत दिग्दर्शक बन सकता हुं ऐसा विश्वास मन में घर गये। वह विश्वास मुझे दिखाई नही देता था। लेकीन मन में घर कर गया था।

बहादुर किसान का आऊट डोअर शुटींग चल रही थी। भगवान गा रहा था, मै पेटी बजा रहा था, वाद्यवृंद भी संभाल रहा था। गरम मिजाज के मिरसाहेब भगवान को जगह बताते थे। भगवान कुछ मुल गायक नही था। मिरसाहब ने उसे दो-चार बांते सुनाई तो उसका आत्मविश्वास लडखडाया। उसे गाना नही जम रहा था। मिरसाहब गुस्सा हुयें। भगवान मेरे पास आया और कहने लगा गाना तुम लो। इसको जाने दो तब जमेगा। भगवान की अडचण मेरे खयाल में आ गयी। मैने मिरसाहब से कहां, भगवान आपको डरता है। आप यहां रहेंगे तो वह गां नही सकेगा। मिरसाहब को वह पट गया। अच्छा तो मै जाता हुं। तु ले ले इसका गाना। मिरसाहब गये। मैने भगवान से गित गंवाया। संगीतकार का मेल भी जान गया। गाना और चित्रण भी ठीक हुवा। भगवान और में उसी प्रसंग से दोस्त बन गये।

अब मुझे सौ-पिच्याहत्तर की कमाई होने लगी थी। दारु पिने का काम भी मैने फिर से शुरु कर दिया। चाल बढाना मुझे आयेगा यह मन में लग रहा था। लेकीन चांस आना भगवान के हाथ में है। उसे हासील करना याने प्रयत्नशिल रहना।

एक शाम भगवान मेरे पास आया और कहने लगा, एक काम करोगे अण्णा [घर में मुझे अण्णा कहते थे।

बोलो!

अपने को तामील फिल्म मिला है डेकोरेशन के लिये।

अच्छा है।

तुम म्युझीक करोगे?

जरुर।

भगवान एक नई चांस लेकर मेरे पास आया। मुझे भी वही होना था। मुझे भी गला साफ हुये सरीखा लगा। सुर मिलने का आनंद हुवा।

क्या नाम है पिक्चर का? मैने भगवान से पुंछा।

'जय कोडी'

भगवान एडी तेडी मुंह कर के बोला।

याने?

कोडी याने झेंडा बोले।
विजय का झेंडा होगा।
विजय पर चल बोलना।
भगवान ने टाली के लिये हाथ उपर किया। मैने उसकी ताली अपने हाथ पर ली।

मिनर्व्हा 'मुव्ही टोन' की नोकरी में ढाई-तिन साल निकल गये। विभीन्न संगीत दिग्दर्शको के हाथ के निचे काम करने की वजह से सुर कैसे पकडा जाता है इसका ग्यान प्राप्त हुवा। सुर ताल लगाने का काम अपने को भी करना आयेगा इतना आत्मविश्वास दिल के दिल में रंगने लगा। अप्पन संगीत नियोजक बन सकते है इस विचार तक मेरा मन बन गया था। कर्तृत्व विषयक जान के कारण वह घाट इस स्तरपर आने तक जिवन में कई घटना घटती गयी। मेरे व्यवसायीक जिवन से उसका कोई मतलब नही। लेकीन उसका निवेदन करना जरुरी है। उसके साथ बेसुर की भी मोजदाद होनी चाहीए। बरखा के साथ साथ ग्रीश्म के परिणाम का मोजमाप होना चाहीए।

कोल्हापूर के वास्तव्य से फिल्म जगत की नितीमत्ता मेरे परिचय की हो गयी। अनिर्ती यही उस जगह की निती थी। सगे साथीयों की सुचना मानकर मै दारुबाज तो बना था। मदिरा भी लेकीन आज तक बहुत ही नजदीकी नही हुयी थी। एक फालतु नायीका ने लगट करने की कोशीश की थी। मेरा पुर्व संस्कार उससे बचा पाया। आगे दिल ही चटका और शरीर मलीन हो गया। मुंबई के निवास एक अलग ही अनुभव आया। गायकवाड नाम के गृहस्थ नाना के दोस्त थे। उन्हे मिलने के लिये कई बार उनकी ओंर जाता था। वह जात से अस्पृश्य थे। वह रहते थे वह वस्ती करीबन अस्पृश्य की थी। एक बार किसी बहाने उन्होने एक युवा तरुणी से मुलाकात करा दी। वह अस्पृश्य कन्या थी। लेकीन पढी लिखी थी। मॅट्रीक पास थी। ठीक ठाक अंग काठी, बोलती आंखो की ओर लवचिकता थी। उसमें वह मुझे बहुत भा गयी। प्रथम मुलाकात में मै उसके प्रेम में गिर गया। गायकवाड को मिलने के बहाने मै बार बार उस बस्ती में जाने लगा। अधिक समय होने लगा तो भी उस बस्ती में रहने लगा। उनके पंगत में बिनधास्त भोजन करने लगा। इतनाही नही तो उनमें से कुछ लोगों की तरह फुटपाथ पर सोने भी लगा। तपस्या की बेल कली खुलने लगी। उस लडकी से मेरा बोलना हो रहा था। हंसते हंसते उसके बोलने की लकब और शुध्द शब्दोच्चार मुझे गाने के सरीखा लोभनिय लगने लगा। स्पर्श सुख भोगने का मात्र समय नहीं आया। लेकीन सहवास का आनंद मै मनसोक्त लुटता रहा।

मिनर्व्हा में काम करते समय गीत पढते पढते और दारु का पुरा हर्ष उठाते समय मेरा मन उसका ही चिंतन कर रहा था। प्रत्यक्ष मुलाकात सत्यता से भरपुर लग रहा था।

मैने निश्चय किया की, उससे शादी करने की। नही तो भी वह उम्र में आयी थी। बहु का मुख देखने के लिये पिताजी तो थे नही। बडी मां की भी मृत्यु हो गयी थी। मेरे मां का मन मेरे लिये प्रेम दे सकता है ऐसा मेरा समझ था। नाना खुद अभी तक ब्रम्हचारी था। मेरी शादी तय करना मेरा काम मुझेही करने का था। कैसे करना, किसके मध्यस्थी से करना? बोलनी करना चाहीए क्या? इस विचार में बहुत समय व्यतित हुवा। वह खुद ही हमारे घर आने लगी थी। जो मुझे लग रहा था। वही उसे लग रहा है ऐसा लगा। नाना को बोलकर गायकवाड के पास इस का जिकर करना ऐसा मुझे लगा। मेरा नही तो नाना के पहले शादी करना गलत था। और अस्पृश्य जाती के लडकी के साथ ब्राम्हण के लडके ने शादी करना यानी लोक व्यवहार के दृष्टी से गैर था। कैसा कोन जानना इतना विवेक मुझे सुस्ता गया। मै वैसे जाती के जान में भुल गया था। वह कभी का डाल दिया था। संध्या कभी पढाही नही था। मिश्र विवाह, सामाजिक सुधारणा इत्यादी शब्दो से कभी परिचय भी नही हुवा था। मुझे वह लडकी पसंद थी। उसकी संगद जीवन भर मिले ऐसी आकांक्षा मेरे सर्वांग में तथा अंतरंग में उतरी थी। मै उसे केवल पुकारता था। उसका केवल नाम लेने से मेरी जिव्हा को सुख मिलता था। 'राम' ऐसे आवाज से ही वह मुझे उत्तर देती थी। आगे का प्रश्न मुझे बोलने के लिये नही जमता था। मन की बात उससे नही कर सका। दोनो भी एक अनामीक सुख का स्वाद लेते रहे। एक रात में वह मेरे घर आयी। नाना और मां घर में कोई भी नही था। मै अकेला था। वह आयी अचानक मै घबरा गया। आ बैठ। इतना बोला। वह बैठी। हमेशा की तरह हंसी। और सहजता से बोली,

एक खुशी की बात बताने आयी तुझे।
मेरे कलेजे को लगा दो हाथ लगे हो।
कान की द्रोन दोनो हाथ से पकड कर उसका शब्द सुनने के लिए अधिर हो गया।
खंदा छोडकर मुख्य प्रवेश ब्दार तक जा रहा था।

मेरा कोट अंदर कुर्ची के टोंक में रखा हुआ था। वह उसने मेरे पीठ के भाग में फेंका था। मैने उसे उठाया। आंखो के सामने चमक आयी। दिन में ही अंधेरा सा हो गया। फिरसे बेकार होकर मै मिनर्व्हा के बाहर निकला। फिर से वापस जाने की हिम्मत मुझमे नही हुई। पार्वती की मांग करनेवाले को भस्मासुर को शिव ने जला डाला। वैसा मेरे अंदर का प्रेमी नष्ट कर डाला। फिर से मै शरीर से मुंबई नगरी के रस्ते पर आया। एकही जगह याद आयी। भगवान चालवे। उसका 'जय कोडी' पिक्चर करना ऐसी इच्छा थी। मैने उसकी ताली झेली थी। मै भगवान के यहां गया। बारा घाट का पानी पिया हुआ भगवान मेरा प्रेम प्रकरण सुनकर बहुत हंसा और उसने कहा,

'कोई बात नही अण्णा, सर समालमत तो पगडीया हजार'

प्रेम खतम हो गया था लेकिन जीवन अभी बहुत चलने का था। आगे जाना जरुरी था।

भगवान के भरोसे 'जय कोडी' सिनेमा के लिए संगीत की रचना को प्रंभ किया। वह सिनेमा निर्माण करनेवाली संस्था मुंबई में का मकरती थी। तयार हुये गीत नायीका को पढाने का जिम्मा मेरा था। फिरसे युवा विश्व में मुझे जाना पडा।

जयकोडी की नायिका रुख्मिणी थी बहुत ही रसीली। दिखने में सुदंर और गोरी थी। थोडी पृथूल शरीर की। लाल ओंठोवाली। उसके स्वर में रातराणी के शुशबु सरीखी मादकता थी। मै उसे पढाने लगा। उसे मेरी भाषा नही आती थी। मुझे उसकी भाषा नही आती थी। आज तक का प्रेम क्रिडा मेरे अंगलगट आया था। लेकिन आकर्षीत होना और आगे जाना अब हमेशा का ही हो गया था। जीते जी यह जंजाल नही जात। रुख्मिणी के काजल भरी आंखे मुझ से बोलने लगी। आंखो की भाषा अब मुझे समझने लगी थी। मै ने खुद को संभाला। बहुत ही कटाक्ष से संवारा। आंखो को आंखे मिलाना टाल दिया। रुख्मिणी हिन्दु कॉलनी में रहती थी। उसके साथ उसकी मां रहती थी। रुख्मिणी यह नायीका थी। सिनेमा की नायिका यह निर्माताओं की नायीका होती है। इसका अनुभव मुझे अभी-अभी आया था। 'जय कोडी' का निर्माता विश्वनाथ रुख्मिणी के घर के सामने के घर में रहता था। यह मुझे मालुम था। मिनर्व्हा अध्याय का फिरसे पुनरावृत्ती नही होनी चाहीए इसीलीये सजग था। स्त्रियों को आकर्षीत करने की ऐसा कौन सी विशेषता थी मै नही जानता था। वह रुख्मिणी भी मुझ पर मर गयी।

प्रलोभन को बली गिरनेवाले और सिनेमा सृष्टी ने दिया हुआ प्रसंग इस वजह से मै भी वेसा होने लगा। उस रास्ते पर जाना नही कहकर फिर से उस रास्ते को लगा था। ठेंस खाया हुआ अंधा जीवन फिर से दुसरे रास्ते की और मुडा।

बोरिवली के एक बगीचे में जयकोडी का बाह्य चित्रण चालू था। गाणे का चित्रीकरण होने की वजह से भगवान के साथ मै भी चित्रीकरण की जगह उपस्थित था। थोडी देर से भी रुख्मिणी आयी। उसने बालों में इतने फुल लगाये थे की चैत्र बेला सी दिखने लगी थी। मद्रास की महिाल वह बालो में बहुत फुल लगाती है। रुख्मिणी सरीखे सुंदर स्त्री को एखादा ही फुल अच्छा दिखता है। वह नजदीक आनेपर उससे अंग्रेजी में कहा।

बाप रे बाप कितने फुल, चेहरा तो पुरा फ्लॉवर पॉट हो गया।

तुम्हे अच्छा नही लगा। रुख्मिणी अपनी भौंये तानकर बोली। मैने ना करते मान डोली। वैसे ही उसने सारे की सारे फुल निकाल कर फेंक दिये। हा ये ठीक है। अब कितनी सुंदर दिखती हो। फुलसे भी सुंदर! मैने कहा। वह दिल से खिलखिला कर हंसी। जैसे की मेरे पसंती का ही श्रृंगार किया था।

परिणाम मुंबई के बाजारपर इसका परिणाम कैसा होगा। कहां जाये, क्या करना चाहिए ऐसी मनस्थिती में मेरी नेवरेकर से मुलाकात हो गयी। बीच में नेवरेकर मिनर्व्हा में आये थे। और उन्होने मिनर्व्हा का 'नामदेव' मराठी सिनेमा का संगीत दिग्दर्शन किया था। तब उनकी अच्छी पहचान हुई थी।

वह बोले पुणा में आता है क्या? वह नार-नारदी नाम का मराठी सिनेमा निकल रहा है। मै संगीत देणेवाला हूं। तु चल सहयोगी बनकर।

मैने हां कहा और उसके साथ पुणा पहूंचा। नाना और मां अब मुंबई में नही रहती थी। नाना कही तो भी डेहराडुन के नौकरी पर गया था। मां भी उसके साथ गयी थी। अब मुंबई में घर नही था।

मै पुणा में आया। वह नेवरेकर का सहाय्यक बनकर। संगीत नायक, दिग्दर्शक यह दोनो टिका मेरे मस्तक पर लगा और पोछा भी गया। मै फिर से अपना एक अच्छा इमानदार ही रहा।

पुणा में आने के बाद नाना का खत आया। पुना में एक लडकी है वह देख। वह मुझे बोलकर आयी है। बडे भाई के लिए लडकी देखने का प्रौढ काम मैने किया। चार दोस्तो के साथ जाकर लडकी देखी। पसंद की। नाना के पास कुछ पैसे थे। बाकी के पैसे उसने मुझे मांगा। मै नारद-नारदी के दिग्दर्शक श्री बेडेकर इमके पास से सौ रुपये उधार लिये। नाना की शादी हो गयी। मां शकु नई दुल्हन इन सभी को लेकर वह अपने नौकरी के गांव गया।

नाना की शादी होने की वजह से, मुझे रुख्मिणी की बहुत याद आने लगी। उसकी समझ में नह आनेवाले खत मै पागल की तरह बैठकर बार बार पढने लगा। एक दिन मन में क्या आया मालूम नही। मै उठा और मद्रास को जानेवाली गाडी में जो बैठा। जेब में केवल पंधरा रुपये थे।

तिसरे क्लास की जनी करके भी मद्रास पंहुचते ही पैसे खतम हुये।

रुख्मिणी का पता मेरे पास था। पैदल घूमते हुये उसके दरवाजे तक पहुंचा। रुख्मिणी वहां दिखी नही। एक काले रंग के नौकर ने कहां, 'शी हॅज गॉन टु मुकीसिल्स' याने क्या मुझे बराबर समझा नही। मैने पागल की तरह बार बार पुंछा। फिर पता चला की नाटक में काम करने के लिये किसी उपनगर में गयी है।

मैने पुंछा, कब वापस आयेगी?

उत्तर मिला चार-पांच दिन।

मै अस्वस्थ था। शरीपर पैजामा और शर्ट था। उस मजनु की अवस्था में चार दिन मद्रास में कैसे रहे यह प्रश्न मुझे सताने लगा। आते समय मै किसी को बोलकर भी नही आया। केवल भगवान पालवा को कहा था। अब क्या करना कुछ समझ में नही आ रहा था। एक अस्वच्छ हॉटेल में जाकर उतरा। भगवान को खत लिखा।

उसके उत्तर की राह देखते देखते चार दिन बीत गये। फिर से रुख्मिणी के दरवाजे पर गया। वह आयी थी। मुझे लगा वह अब हंसते हंसते आयेगी। मेरा दर्शन से मोर नाचता है वैसे आये गी। मुझपर फिर से सर्वस्व का वर्षाव करेगी। लेकीन वैसा कुछ नही हुआ। उसका नौकर चिढते हुये मुझे बोला, तुम जाओ। तुम को बाई मिलना नहीं चाहती।

क्यों? मैने पुंछा। सही तो उस नौकर को यह प्रश्न पुंछकर कोई अर्थ नही निकाला जा सकता था। वह बोले - नौकर पुरा इंग्रजी में बोलने लगा।

हां? मेरी आशा फिर से पल्लवीत हुई।

ऐसा फिरसे आना नही, नोकरने मेरे प्रेमिका के वाक्य अनुवाद करके कहा था। मै ठार हो गया। मद्रास के धुप ने मझे पुरा जला दिया था। उसी समय वहां से वापस हुआ। मुझे पिताजी के मरते समय के वाक्य याद आये। औरत जातपर विश्वास मत रख।

भाऊ को मेरा भविष्य दिखाई दिया था क्या? अब मैने कसम खायी की औरत पर विश्वास नहीं रखने का। एक भोग्य वस्तु इसके उपर उसकी लायकी नही मानी जाये।

भरी धुप में वापस आते समय मुझे किसी ने तो भी पुंछा, मैने मुडकर देखा, वह लुंगीवाला आदमी मद्रासी था। मिनर्व्हा नायिका के घर में उसे मैने देखा था। मै रुक गया। वह नजदीक आया। माथे पर सिकन चढाये हुये पुंछा, 'इधर किधर?'

रुख्मिणी की तरु आया था।

मिली?

नही।

याने तुम्हारी और उसकी बहुत दोस्ती थी। फिर ऐसा कैसा हुआ?

उसकी इच्छा नही है मुझे मिलने की। उसने मुझे दरवाजे पर से ही भगा दिया।

मैने दी जानकारी से उसे अच्छा लगा।

एखाद विद्वान के सरीखा स्वर निकालकर उसने कहां, ऐसी ही होती है यह औरते। आप शायद फंस गये।

हां।

फीर वह?

कौन?

उसने मिनर्व्हा के नायिका के बारे में पुंछा। उसी सावली भी कई दिनो से देखा नही।

इस जानकारी से वह आदमी और भी खुष हुआ। वह उस नायिका के प्रेमी में से एक था।

कहां उतरे हों? उसने पुंछा।

मैने मेरी हालत निर्लज्ज होकर सुनाई। वह दुःखी हुआ। उसने मुझे कुछ पैसे दिया। उस पैसे से मैन उस हॉटेल का बिल चुकता किया और मुंबई का तिकीट निकाली।

वापस आते समय मै बार बार सोच रहा था, स्त्री यह क्या चीज है? सगे भाई से भी मेरा संभाल करनेवाली बडी मां यह औरत ही है। किसी भी प्रकार का पारिवारीक संबंध न होते हुये भी मुझपर लाडले के समान प्या करनेवाली गोदुताई भी थी और ही। पेट का गोला होकर भी मुझसे अलग बर्ताव करनेवाली यह भी औरत ही है।

कोल्हापूर को मुझे अपने घरपर बुलाकर दारु देनेवाली वह फालतू नायीका वह भी औरत। एक बार डर डर कर उसे माडीपर चढा, वह प्रौढ थी। मै नया था। खुब घबरा गया था। उसने मेरे पीठपर हाथ रखा ओर नखरीले आवाज में कहां, तुम कुल में रहते हो क्या? मै वहां रुका नही। उसने भी उस व्यापारी की जिद्द नही की, वह गायिका कौन वह भी और ही। घंटो तक बोलते रहनेवाली वह अस्पृश्य लडकी उसे क्या मेरे गाणे ने उसे मोहिणी डाली थी। उसके दिल में भावना नही थी। फिर वह क्यों मेरे धर आती थी। उसे मेरे विषय मे कुछ अलग आकर्षण था। फिर उसने नकार क्यों दिया। [नही क्यों कहा] कितनी सहजता से बोल गयी, वह मेरी शादी तय हो गयी। वह ससुराल गयी सुख में होगी। मेरी याद उसे कभी भी नही आयी होगी। वह भी एक औरत।

वह नायिका प्रत्यक्ष मालक की उसपर मेहेरबानी, उस मद्रासी कुमार के समान कितने ही पागल उस युवती पर फिदा हुये थे। उसने मुझपर क्यों जादु किया। मालक ने मुझे हकाल दिया। उसने विरोध का एक शब्द भी खर्च नही किया होगा। वह सुख में होगी। मुझे मिलने का कष्ट भी उसने नही किया। यह भी एक औरत की ही कहानी।

यह दक्षिण की रुख्मिणी, लडकी के लिए झुठे कर्म करनेवाली उसकी मां। रुख्मिणी की मुंबई की हलचल। उसके खते में की आर्तता और मद्रास में का उसका वर्तन यह भी एक औरत की ही कहानी।

मेरे पिताजी को ऐसी ही औरते मिली थी क्या? नही तो फिर मरते समय उन्होने ऐसा क्यों कहा होता? ऐसी औरते केवल सिनेमा मेंही होगी। फिर वह अस्पृश्य लडकी, मुझे हर किसका और कुछ भी उत्तर मिला नही।

मै मद्रास को गया ही क्यों? और वापस आया वह किस लिये कुछ पता नही। मेरे सब मन ही वृत्ती मे घायल हो गया था। मुझे बार बाबर लगता था मै ही अनपढ होगा, पागल होगा। दुनिया दुनिया के सरीखी चलती रहती है।. मुझे मेरी गती तथा मेरा गांव निश्चीत करना चाहीए।

साथी को मोल नही, संगीत को सुर नही, मेरे जीयन की डो कभी सिधी होते नजर नही आती। किस सुर में गाये और किस राग की दिशा में आगे जाये कुछ भी निश्चीत नही था। तो फिर गाने को आकार कैसा आयेगा।

वासना की लत से मेरे संगीतपर कोई परिणाम नही हुआ था। यह सच है। प्यार का धागा हाथ में पकडकर दक्षिण के विजय का हासील करने के पहले मैने मुंबई में थेडे समय के लिए संगीत दिग्दर्शक की नौकरी की थी। यह नौकरी सिनेमा के बाहर की सृष्टी थी। इसका जीक्र करना यहां जरुरी है।

रेनबो नामकी एक ध्वनिमुद्रीका तयार करनेवाली संस्था थी। उस संस्था में मैने नौकरी की। दशक से चाल तयार की। उसके प्रसिध्दी के लिए योग्य ऐसा पार्श्वसंगीत दिया। गायक और गायीकाओं से वह चाल सुरुची रुपसे गाने को बाध्य किया। न ही कहा जाये फिर भी इस संगीत के काम के लिए जो अनुभव आना चाहिए था वह आया। सुप्रसिध्द संगीत दिग्दर्शक श्री नौशाद यह भी उस समय उसी संस्था में थे। मेरे सरीखा ही उद्योग करते थे। उस आदमी की बुध्दी बहुत ही चाणाक्ष थी। वह दिन मे ग्यारह ग्यारह गाणे ध्वनिमुद्रीत करता था। सराईत बावर्ची ने तडाके से पुरी तल लेंना ऐसेही वह ग्रामोफोन की तबकडी तडातड फेंकता था। मेरी गती उस मायने में कम थी। दिन में तिन गाणे रेकॉर्ड के बाद मैं दम जाता था। उस समय हमे रोज मिलता था केवल सात रुपये।

क्यों न जाने उस समय का तकाजा बेकारी सरीखा ही लगता था। उस बेकारी से निपट ने के लिए मै पुणा में आया। नारद-नारदी इस मराठी सिनेमा का सहाय्यक संगीत दिग्दर्शक हुआ। बीच में ही मद्रास की यात्रा की और जखमी दिलसे और सुरक्षीत शरीर से वापस आया।

सरस्वती सिनेटोन यह दादासहाब तोरणे की संस्था। सिनेमा नारद-नारदी दिग्दर्शक विश्राम बेडेकर, संगीत दिग्दर्शक श्री सदाशिव राव नेवरेकर और सहाय्यक मै। इस जगह पर भी मुझे काम करने की बहुत जगह मिली।

सदाशिवराव के सौजन्य से बांधी हुई कुछ चाल भी इस सिनेमा में जैसे की वैसी आयी।

सदाशिव हर चाल करते समय बडे ही आस्था से मेरा सहाय्य लिया करता। मुझे किंमत देता था।

सांज हुई, चांदनी रात आयी, ऐसी सुबोध सिनेमा की मेरी चाल अभि भी याद आती है।

'ऐसी कैसी मिशी साजनी की काटा तुझे लगेगा ग' यही उस सिनेमा की एक नखरेल तर्ज। मै आज भी बडे शौक से गाते रहता हुं। यह चाल भी मैने बनाई।

यह एक दो चाल को मैने संगीत दिया है। उस सिनेमा का हर एक गीत का पाश्वसंगीत व वाद्य मेल बिठाने का मौका मुझे मिला।

बडे जोरो से काम करने का मौका मिला। काम का कैफ भी बडा सामर्थ्यवान था। रात को पि हुई दारु दुसरे दिन साफ उतर जाती है। मेंदु में ढली हुई चाल हप्ते हप्ते आदमी को धुंद में रखती है। वाद्य अबोल हो जाते है। बैठक खत्म होती है। लेकीन स्वर शरीर में मुंगी चढतं सरीखी मस्तक में चढते ही रहती है। प्रेम दिवाना और संगीतकार इनकी अवस्था में नलदीक पास सरीखी होती है। मै कोई शायर नही पर अनुभव की सच्चाई को पुरावा रखकर छाती ठोक कर कहता, प्रित से कोई कम नही, बेहोषी संगीत की।

पुणा में मै इस उद्योग मग्नता के समय तो वासना ने मेरा पिछा छोडा बोले क्यां? नही नारद नारदी में करणेवाली में से एक ने अपने यौवन की ओंर खिंचा। प्रेम के प्रकरण में मैने इतना मार खाया था की उस आकर्षण को अपेक्षीत फल नही मिला। मेरे मनमें का प्रेम संपुष्ट में आकर बर्फ हो गया था। उर्जा की जिज्ञासा से लेकिन मात्र वह पिघला नही।

पुणा का कांम खत्म हुआ। आगे क्या? इस प्रश्न का उत्तर देणे के लिये भगवान पुना में आया। और कहने लगा, अण्णा चलो।

कहां?

मद्रास।

मैने मद्रास का धक्का खाया था। उस शहर से बहोत बे आबरु होकर तेरे कुचे से निकले हम इस शेर का सच्चा शेर होकर मेरे सामने गिरा हुआ था।

भगवान बोला, मुझे एक पिक्चर मिली है वहां।

प्रोड्युसर कौन है? मैने पुंछा।

वही।

वह ही याने?

जयकोडीवाला विश्वनाथ।

बाप रे।

क्यों?

भगवान ने प्रश्न पुंछा। मेरे आंखो के सामने के ।टी ।रुक्मिणी, उसकी मां उस रात में सारा नजारा मेरे सामने आया। मै कुछ समय चुप बैठा। व्यवसाय में ऐसे मानापमान और छोटा बडा ऐसा संभलकर नही चलना होगा। यह विवेक मुंझे मालुम पडा।

'जाऐंगे' मैने कहां।

भगवान ने कहां, एक शर्त है।

किसकी?

प्रोड्युसर की।

क्या अट है उसकी?

बुरा नही मानना।

भगवान का स्वभाव विनोद का था। लेकिन उसकी आंख्रो में अलग भाव थे। गंभीर हुआ। हलके आवाज में वह बोला। अण्णा को संगीत दिग्दर्शन देता हुं, लेकीन।

लेकीन क्या?

उसने काम करने का नही।

करने का नही?

हां।

कौणसा?

हिरोईन से प्रेम।

अरे प्रेम कोई करता है क्यां? वो तो होता है। मुझे कुद प्रेमवीर वगैरे होणे का कोई महत्वकांक्षा नही थीं। मुझे होना था यशस्वी संगीत दिग्दर्शक उस निर्माता को बोलो। ऐसे तैश में भगवान को कहां, 'मै मेरे संगीत के हिसाब से रहुंगा' बाकी बातो पर झुककर भी नही देखूंगा।

फिर हुआ?

तो तय हो गयी बात। भगवान उत्तेजीत स्वर में बोला। और हमने मद्रास की ओर प्रस्थान किया।

भगवान दक्षीण की ओर जाकर दिग्दर्शन करनेवाला था। उस सिनेमा का नाम था 'वन मी हिन्नी' उस कहानी में प्रमुख्र भूमिका थी जानवर की, हत्ती की। वह हाती मद्रास के स्टुडीओ में आना तय नही था। उसके चित्रण के लिए पुरी टीम एक जंगल में जाकर स्थाई होनेवाली थी। नगर क्या और जंगल क्या? काम मिलता है तो उसके लिए जाना जरुरी था।

हम मद्रास गये। उस विश्वनाथ से मेरा करार हो गया। करार में उसने नायिका से कोई भी हरकत करने की मर्यादा नही डाली थी। यह उसका सौजन्य था। मेरे सभी कामो का मानधन पांचसो रुपये में निश्चीत हुआ था। और हम उस जंगल की ओर मुडे।

अर्नाकुलम से पैतीस मैल पर वह जंगल था। उस टेकडी के वन प्रदेश में हमारी रहने की व्यवस्था एक ख्रिश्चन शिकारी के मकान में की गयी। उस बस्ती का नाम तोडुपडा था। उस ख्रिश्चन शिकारी का अभिधान था, डब्ल्यु। जे।जॉन। वह जॉन सहाब था काला सांवला, गड्डु, हुस्सु लेकिन बहुत ही बलवान। उडते पंछी को गोली से माने का करतब उसने कमाया। पुरे मालाबार भर में जगह-जगह उसका चाय कॉफी, वेलदोड का बगीचा थे। हम उसकेमकान में उपर रहने गये। तब उसे बहुत खुशी हुई। समधी ने दुल्हे के पक्ष का स्वागत करना चाहीए वैसा स्वागत उसने किया। अपने इस बाडे में हमें अलग अलग कमरे दिये।

ग्रीष्म ऋतु चल रहा था। शायद अप्रेल महिना होगा। हम आऊट डोअर चित्रण के जाते थे। सही तो संगीत दिग्दर्शक को चित्रण की जगह जाने की वैसे कोई आवश्यकता नही थी। लेकीन सिनेमा का दिग्दर्शक भगवान था। मेरा जान से प्यारा दोस्त। उसे सहयोग करने में मुझे बहुत आनंद मिलता था। मै उसके साथ सहाय्यक की दृष्टी से भी काम करता। कॅटमार्क मारणा, रिफ्लेक्टर्स पकडना यह उद्योग दिल से करता था। गाणे को चाल बिठाने का काम इसके साथ में चालु ही था।

हवा में कोई तर्ज बनाना मुझे पसंद नही था। गीत सामने रहने के बाद मुझे तर्ज ख्रुदबख्रुद समझती थी। हिन्दी मराठी की कहानी अलग उन भाषाओं के अक्षर मेरे पहचान के थे।

तामील तथा तेलगु के लफडे और भी कठीन। उस कवी ने आके गीत का छंद और अर्थ मुझे समझा देना तब उस गीत की तर्ज मेरे दिमाग में सरसर करती हुई जागृत होती थी।

कवीकी ओर से गीत हाथ मे आया तो मै अपने रुम रुकता था। तर्ज बनाते बैठता था। फिर भी मुझे भगवान के टीम के साथ शुटींग को जाना मुझे अच्छा लगता था। निर्माता से अलिख्रीत करार के नुसार मै बहुत ही अपने बस में होता था। कोई भी महिला की ओर तिरछी नजर से देख्रने के लिये बचता था। नायिका को जाल में फंसाने का सवाल ही पैदा नही हुआ। उसने ख्रुद ही अपने प्यार का स्थान पक्का कर लिया था। वह आते ही मै और भगवान इनके पीछे में बैठते थे। हमारे दोनो के हात अपने ही हाथ से ख्रींचकर ख्रुद के दोनो ख्रंदे पर लेते थे। मै उसे क्या फंसा सकता था। वृक्षपर का पीला हुआ फल किसी के उर्जा की राह थोडे ही देख्रती है। उस तवमर्णी देवी को तर्ज बिठाया। मद्रास जाकर वह ध्वनी मुद्रण किया। भगवान वह गीत का चित्रण करने लगा।

जॉन सहाब धनवान था। शिकारी तो था ही लेकिन बहुत ही मद्यपी भी था। वह अपने घरमेंही देशी दारु निकालता था। बाजार की दारु उसे अच्छी नही लगती थी। व्हिस्की, ब्रँडी, जिन यह असली दारु ख्रुद ही मुझे और भगवान को देता था। जंगल की रात बेहोशी से तर होती थी। तोडुपुड्या के मुक्काम में मैने जितनी चाही उतनी दारु पी ली।

मेरा दिमाग पाणबुडी के समान मद्यसागर के पेट में ही घुमते दिख्रता था।

जॉन सहाब की और हमारी दोस्ती बहुत घनिष्ट हुई। मेरे पतले मृतप्राय शरीर को अच्छा खासा आकार मिला। उस मलबारी जंगल का वनवास मेरे लिए लाभप्रद प्रतीत हुआ। मे महिने छुट्टी में, कॉलेज में पढनेवाली जॉन सहाब की चार युवा लडकीया घर आयी। सिनेमा में काम करने वाले कलाकारो के विषय में उनको आकर्षण था। वह आते से ही हम में मिक्सअप हुये। शुटींग देखने के लिये आने लगे। संवाद करने लगे। उत्साह से कई प्रश्नो की बौछार करने लगी। कॉलेज के जीवन के प्रसंगो को बतलाने लगी।

हमारी एक चौकडी थी। भगवान मै भगवान का सहाय्यक राजाराम गोलतकर और एक फोटोग्राफर अहमद उल्ला। वह चार लडकीया देखते देखते हम पर फिदा हो गयी। हरेक ने जैसे एक को चुना हो। वह चारों शुटींग की जगह हमारे लिये खाने के डबे लाने लगी। बटमोगरा के आपदमस्तक जानेवाला सर हमें भेट में देने लगे। मेरी दोस्त आनंद से पागल हुई। लेकिन मेरा साहस बढ नही रहा था। वह जॉनसहाब बहुत ही प्यारा आदमी था। मद्य के ऐन मध्य में वह मेरे खंदे पर हाथ रखता और आंखो में पानी लाकर कहता। मुझे एक बडा लडका था। वह जिन्दा होता तो मेरे इतना होता।

जॉन सहाब के शब्द तथा मेरा पुर्व प्रेम इतिहास मुझे सामने नही जाने देता था। लेकीन जॉन की एक लडकी मेरे पीछे पीछे होती थी। उसे कुछ देना था। लेकिन मुझे लेने के लिए मेरे हाथ खुले नही थे। मेरे मन को हमेशा लगता था की उस लडकी ने भी ऐसा बर्ताव नही करना चाहीए। मेरा कहना ठीक ही था। निर्स की ताकद अपने गुलामों को अपने गती से गाडी को जोतकर चला रहे थे उसे कौन क्या करेगा।

बिच में एक बार कोचीन के उस समय के राजपुत्र ने हमे खाने का न्योता दिया। जॉन सहाब के गाडी में हम गये। उनके यहां भोजन हुआ। वापस लौटते समय रात हो गी। शायद ११ बजे होंगे। अलबाई तक आये और कभी सोचा भी नही था ऐसा तुफान आया की पुंछो मत। भरी वर्षा होने लगी। बिजली की कडकडाट बहुत ही खौपनाक थी। राह के पडे तुटकर जमीन पर गिरने लगे। गाडी चलाना मुश्कील हो गया था। उस में जॉन सहाब की एक आंख कमजोर थी। उसने सामने का ठीक से दिखता नही था। हम सभी घबरा गये। लेकिन दारु के नशे में चुर जॉन सहाब बहुत ही खुषी से कहता था। धिस इज द वाईल्ड ब्युटी ऑफ मलबार।

उस भयानक निसर्ग के सौंदर्य ने हमारे शरीर मे कंपन पैदा कर दिया। एक नदी के ऐली ओर गाडी रुक गयी। सामने की नदी को महापूर आया था। उपर से बारीश हो रही थी। जंगल ही जंगल था। अब क्या करना।

जॉन सहाब बोला कांच बंद कर दो और लडको सो जाओ। बचे तो हम जायेंगे।

वह भयानक रात कैस काटी यह हम को हमारा मालूम। केवल छः मैल जाने के लिये हमे तेरा घंटे लगे। जैसे तैसे धड शरीर और तुटे हुये दिल को लेकर तोडपुडे में जाकर पहुंचे रस्ते में गीरे हुये पेड को कुल्हाडी से तोडकर बाजू में करने का काम जॉन को जगह जगह पर करना पडा। उस वयस्क की हिम्मत से हम युवा बहुत ही प्रभावीत हुये। मुझे फालतु ही लगता था की, जॉन के लडकी के स्वतंत्रता का फायदा लेना याने पागल सा लक्षण होगा।

तोडुपुडे में आते ही फिर प्रेमाध्याय को शुरुवात हुई। वह चार कन्यका हम चारों की प्रेमाराधना करने लगी। उनके स्वभाव का फायदा लेने के लिये कोई भी उद्योगी हिचकिचाता न था। लेकिन हम डर गये। उनकी दाद को किसी ने भी प्रतिदाद नही दी।

हमारी शुटींग खतम हुई। उनकी छुट्टी भी खतम हो गयी। वह चारो हमारे साथ रेल से निकली। जॉन सहाब साथ में नही था। उसने हमे बिदा किया। तब उसकी आंखे नम हो गयी थी। शब्दो में द्रवता थी।

मै और जॉन की दो नंबर की लडकी एक डबे में थे। बाकी लडकीया दुसरी ओर थी। वह जिधर ज़गह मिली उस डबे में बैठ गये। मेरे तीन दोस्त उनके आस पास थे। जॉन की वह लडकी आज बहुत ही सुंदर दिख रही थी। थोडी सी सांवली शरीर से दृष्टपुष्ठ बडीबडी आंखे, लाला रंग से रंगाये गये ओंठ, शुभ्र दांत मिनलसार हंसी। पाश्चात्य व्यक्ती ओर के कपडे, वह युवती युवावस्था से मस्त थी। प्रेम के लिए तत्पर थी। वैसे हम भीड में थे। हमारे चारो ओर बाकी प्रवासी थे। उसे लगता था। उस डब्बे में दोनोही है। लंबे बालवाली हुई अपने पानीदार आंखो से मजेदार अदाये करती वह बोली। 'राम'इस आवाज की प्यार मुझे पुर्ण् रुप में अवगत हुआ। मैने सीर्फ हुंकार दिया। वह बहुत बोली, संयम से बोली। उसको मुझसे शादी करनी चाहीए थी। मैने हां नही कही। वह युवा थी, अमीर थी। सुदृढ, सुंदर थी। मै गरीब था। अनेको ने मुझे पाला था। पहले मैने एक अस्पृश्य लडकी को खुद शादी का इजहार किया था। अब यह खिश्चन लडकी मुझे खुद शादी इजहार कर रही थी। उसकी मांग मैने तुकरा दी। इस बार मै नही फंसा। एक हुआ की अनजाने में मैने एक जीव को फंसाया। उसे निराश किया। खुद अपंग हुये व्यक्ती ने एक पंछी का पर दुःखीत किया। उसे कब्जे में रखा।

वनमोहिनी सिनेमा का शुटींग खतम कर मुंबई में आर्या जॉन के मकानपर हमने जर्ल हार्बरपर हमला हो गया यह वृत्त पढा। और मुंबई में आने के बाद युध्दवार्ता से व अखबार के कॉलम के कॉलम युध्द वार्ता से भरे हुये थे।

निसर्ग के वरदान से संपन्न दिखनेवाला वह मलबार प्रांत। वह घना जंगल एक पहाडो के निचे बसा जॉन सहाब का बंगला। उसका फेमस मद्यार्क हिरण केसमान भोली आंखो से आसपास दिखनेवाली फुलो से प्यार करनेवाली लडकीया।

मुंबई मे पहुंचने के बाद यह सब भूलना पडा। भूलते भूलते नही तो वह दिल से मिटाना पडा।

दादर तविभाग में मसालेवाले बेडेकर के मजले पर मेरी खोली थी। वहां भी मै अकेला नही था।

मेरे समान और तिनचार ब्रम्हचारी थे। हर कोई अपनी अपनी जगह नोकरी कर रहा था। पेटे को पालता था। कोई कारकुन या कोई हिशोबनीस था। तो कोई पढाई कर रहा था। एक रात मेरे सिवा यह भी सिनेमा देखने चली गयी। मै अकेला ही रुम पर था। कल क्या करणा हैं? वह सनातन गीत सादापढकर तर्ज के सीवा ताल के सीवा दिलके दिल में बोल रहा था। बहुत रात हुई लेकिन नींद नही आती थी। आधी रात में वह सारी जनता वापस आयी। आते से ही वह सोये नही। उनमें सिनेमा चढा हुआ था। उसमे के एक गाणे ने उन्हे पछाडा था। वह सभी मेरे चारो ओर जमा हुये। मै नही नही कहते पहले तो सिनेमा की कहानी सुनाई। शांताराम इस बडे दिग्दर्शक के नाम का बडप्पन किया। और फिर सभी ने एक सुर मे उस सिनेमा का ध्येयगीत गाणे को प्रारंभ किया।

अब कहां कल की बात?
देख दुर हो रही रात
चाहे उतनी पीये
रसरंग नया।
चल डुब जाये प्रेम में।

उन्होने गाणा याद किया था। उसकी तर्ज अपने इच्छा की माफक बोलते गये। क्यों क्यों यह शब्द अलग अलग शैली से गद्य में उतार ते थे। सुबह हुये तक उनका धिंगाणा शुरु रहा। क्यों कल की बात सुनते सुनते प्रत्यक्ष में कल सामने आ गया।

मै उस कलकी चिंता में था। उनको क्या सुनाया जाय इस फिराग में था।
वह हो गया था। कुछ तो भी होना चाहीए था लेकीन कोई धागा जुड नही रहा था। सिर्फ क्यो कल की बात कहकर कुछ हासील होने वाला नही था। कुद तो भी बहुत बडा कार्यक्षेत्र मिलना चाहीए था।

एक दोपहर मैं अकेला ही रुम पर था। मुंबई की धुप पसीना परेशान कर रहा था। बिछानेपर पडा पडा खुद से ही हंसता था। मुझे कुछ याद आ रहा था। उस याद के बंदर की तुलना करते समय मुझे हंसी आ रही थी। वह हंसी प्रसन्नता नही थी। खुद की बदनामी करणेवाली थी।

तोडुपुडे को जाने के पुर्व कुछ दिन हम मद्रास में रुके थे। उस विश्वनाथ नामके निर्माता के यहां हमारा मुकाम था। उसके निवास के पिछे छोटासा बगीचा था। उस उद्यान में एक लाल मुंह का बंदर था। विश्वनाथ ने उसे बडे प्यार से पाला था। वह हमेशा एक पेड के डाली पर बैठा हुआ दिखाई देता था। उस पेड को एक लंबा सा चमडे का पट्टा बंधा हुआ था। उस पट्टे का आखीर का टोक उस बंदर के कमर में बांधा हुआ था। दोपहर में विश्वनाथ का नौकर पिछे के आंगण में आता था। एक बियर की बोतल फोडकर वह एक ग्लास में भरता था। वह प्याला वह पेड के हरियाली पर जाके रखता था। उस बंदर की दृष्टी उसपर पडते ही वह बंदर चमडे का पट्टा छोडकर व निचे उतर आता था। वह बियर का प्याला बडे प्यार से पस्त करता था। फिर से वह झाड पर चढ जाता। पट्टे का बकर फिर से अपने कमर में लटकाके खुद ही अपने जगह पर बैठ जाता था। फिर उसकी अनगीतन लिला चालु होती थी। वह केवल देखने में भी मस्त लगता था। और समय व्यतित होता था।

मेरा ऐसा ही कुछ चल रहा था। उस मानव जाती के पुर्वज में और मेरे में कोई फर्क नजर नही आता था। मै भी ऐसे शौक को अपने छुडाने की कोशिश कर रहा था। और फिर किसी तो भी प्रशन के गुंथे में खो जाता। मेरे जिंदगानी में मैने कुछ भी हासील नही किया था। विश्वनाथ के बंदर के समान मैं एक पेड के दंडल पर जाकर बैठता था। जो याद आते वैसी हरकते करता था।

उस बंदर से मेरी खुद की तुलना कर हंसता था। इसी समय किसी ने दरवाजा खट खटाया। मै उठा। कडी निकाली, दरवाजा खोला। देखता तो भगवान दादा। वह मेरे लिए और नया काम लेकर आया था। उसे वह जम गया था। मैर उसके हिसाब से बहुत ही कम था।

काम मिल गया अन्ना "अपने कू" भगवान सही में मराठी आदमी। वह अपनी एक खुद की स्वतंत्र भाषा बोलता था। हिन्दी निर्माता के सर पर भी वही मंद देता था।

भगवान कौनसा कौनसा काम मिला? मैने पुंछा।
एक पिक्चर मिल गया।
कहां?
यहां मुंबई में।
किसका?
हरिश्चंद्रराव कदम।
वह सिफ्र तुझे मिला? मुझे क्या काम? मैने निराशा व्यक्त की।
क्यों?
कदम का संगीत दिग्दर्शक है हमेशा का ही।
कोण?
"शेबीन चतर्जी "

नही यार हमने कहा हरिश्चंद्रराव से म्युझिक अन्ना को मिलेगा तो हम काम करेगा। नही तो नही। उसको मानना पडा और मैने भी भगवान को माना।

भगवान को क्या धन्यवाद दुं। कुछ सुझ नही रहा था। वह अकेले को काम मिले इसके लिए नही तो मेरा भी हिस्सा तय करता था।

भगवान की कृपा से मुझे हिन्दी भाषा का प्रथम ही सिनेमा संगीत दिग्दर्शक के लिए मिला। उस सिनेमा का नाम था "सुखी जीवन" नाम में अथ था। मेरा जीवन बह रहा था। लेकीन उसको सुख की किरण कही नजर नही आ रही थी। सुखी जीवन के लिए मैरे पहलेही तर्ज चलाई। वह एक भारत विख्यात गीत को डॉ।महंमद इक्बाल इनका यह गीत था।

"सारे जहां से अच्छा हिंदोस्ता हमारा "

हरिश्चंद्रराव कदम का हिन्दी सिनेमा सँगीत योजना के लिए मेरे तरफ आया तब लगा की अब "सा" लग गया। बचत से किए हुये कर्तव्य को यशोमार्ग मिला। अब मेरे जीवन की बैठक जमे और गाने को रंग आना चाहीए।

हरिश्चंद्रराव यह कसा अ़ा आदमी था। मेरे में कुछ अलग कौशल्य है। यह उसने जान लिया था। स्टुडियो मे आये मेहमानो से वह मेरा परिचय करा देते थे। एखाद आत्मसंतुष्ट सासू माँ ने अपने नवनवेली दुल्हनपर गुणी बहु की जगह-जगह तारीफ करती है वेसे ही हरिश्चंद्रराव मेरी तारीफ करते थे। मैने रची तजै के गीतो को वह बार बार सुनाने को कहते। मुझे भी स्फूर्ती मिलती थी। प्रत्यक्ष मैने ही उत्साह में गाने लगा की मैने ही बांधी हुई तर्ज में से एखाद नई तर्ज आपही आप नये से उभर आती थी। सुनने वाला वाहवाह करता था। हरिश्चंद्रराव प्रसन्न तो होते थे लेकीन मुझमें भी उत्साह पैदा करते थे।

होते होते मेरी तर्ज का लौकीक संपुर्ण व्यवसाय में हुआ। सारे जहां से अच्छा हिंदोस्ता हमारा इस गाणे की ध्वनी मुद्रन के लिए मै खडा हुआ। बजाने वालो का जथ्था सिध्द हो गया। गायक ने स्वर जमाया। अब ध्वनीमुद्रन का कार्यक्रम को शुरु होने ही वाला था की, इतने में नवल चतर्जी, अनिल विश्वास, डी।पी।कोरगांवकर यह उस समय सभी श्रेष्ठ संगीतकार सभागृह में उपस्थित हुई। मै क्या करता हूँ यह देखने के लिए यह सब लोग आये थे। मेरा दिल थोडा दबा हुआ सा हुआ। अनिल विश्वास इस संगीत दिग्दर्शक के विषय में मेरे मन में बहुत आदर था। हिन्दी संगीत में पाश्चात्य संगीत को बेमालुम मिलाना उनके बाये हाथ का खेल था। संगीत शास्त्र को देश काल की सीमा का कोई बन्धन नही यह जानकर उन्होने मधुरता से सुनी जानेवाली तर्ज ने फिर से स्थापित किया था। हार्मोनियम का तंत्र भी उन्होने सीख लिया था। एक अर्थ से मै अनिल दादा का शार्गी था। प्रत्यक्ष भलेही न हो लेकीन उनके तर्जो ने मुझे बहुत कुद सिखाया था। मेरा गीत ध्वनीमुद्रीत होते समय अनिलदा सखीखे बडे संगीत दिग्दर्शक ने उपस्थित रहना मेरे लिए एक सुयोग की बात थी।

मै थोड डर सा गया था। लेकीन उन बडे संगीतकारों के खुले बर्ताव से थोडेही देर में मुझे आश्चर्य में डाल दिया। सारे जहां से अच्छा यह गीत संघगीत था। दस बीस चुवा युवती इस गीत का धृवपद उठाते थे। गीत की अंतिम परिक्षा शुरु हुई। सुर कैसा आता है यह देखने के लिये मै ध्वनिमुद्रक के काच बंद घर में गया। सहकारी ने तीन अंक गीणे, वाद्य मेला शुरु हो गया। गीत सुनने को आने लगा। गीन का प्रवाह धृव पद पर आ गया। और मुझे झटके सरिका लगा। संघगान में कोई गायक अलग स्वर लगा रहा था। मेरे कानों के वह अलग सा लगा। वह अलग स्वर भी प्यारा था। शास्त्र के बाह्य था। लेकीन कान को मिठा लग रहा ाा। मैने गाना रोका। दौडते ही बाहर आया, अनिलदा चतर्जी, गोरगांवकर यह सभी उस संघ गाणे में शामील हुये थे। तो वह स्वर अनिलदा का था।

अच्छा लगता है न तिव्र नीषाद? अनिलदा ने कहां। मै योजना के मुताबिक मेरे राग में वह तिव्र निषाद योजना का कोई भी इरादा नही था। अनिलदा के मुंह से वह मिठा लगता था। गाणे के प्रांत में जरीकी चमकिली रेखा और खिंची जा रही थी।

चलेगा ना? अनिलदा ने मेरी और छोटा आदमी की लगब में मुझसे पुंछा "ना दादा ना" मैरे कहां। अनिलदाने जिद्द नही की। उनकी सुचना सुंदर थी। लेकीन ग्राह्य थी ऐसा भी नही। उस स्वरुप के स्वर से गीत और भी मनोहर हो रहा था। लेकीन उस एक ही स्वर से गीत में अडथडा हो रहा था। सिनेमा यह बोल चलकर जन-कला। सुबोधता और सौंदर्य इन दोनो तत्वों का मेल मिलाप के सिवाय उसका रथ नही चल सकता था। मेरा मत यह नम्रता से अनिलदा के कानो में डाला। उन्होने भी यह मन:पुर्वक कबुल किया।

" सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा" यह गीत ध्वनी मुद्रीत हुआ। मै संगीत की दुनिया में सिनेमा सृष्टी में नवाजा गया। पुरा बचपन नागपुर में जाने की वजह से माँ की अपेक्षा मौसी का प्यार मुझे अधिक था। मराठी की अपेक्षा हिन्दी से मेरा मीलन अधिक जमता था। मै मराठी भाषीक होने पर भी अधिकतर हिन्ही में रहा। उसका फल यही है।

यह साल १९४१-४२ होगा। मै उस समय दादर को रहता था। शिवाजी पार्क के आसंमत में मै जीस वास्तु में रहता था, उसका नाम था 'नारायणदास सदन' यह मकान श्रीमती ठाकुर नाम के एक विधवा का था। मै भाडेकरु था।

नये से आयी संधी का सोना करने के लिए मैरे ईर्षासे सभी प्रतिभा लगाकर तर्ज लगाना शुरु कर दिया। तर्ज की परख्न के लिए विभीन्न वाद्य भी साथ के लिए मै संभालता था। मेंडोलीन यह मेरा अत्यंत पसंत का वाद्य था। वह हाथ तें लेकर उसके स्वर में स्वर मिलाकर मै वक्त बेवक्त गाते बैठता था।

एक सावली देखने में सुदर लडकी वह गाणा सुनने के लिए मेरे रुम के आसपास दिखाइ्र दी। उसे गाना या बोलने की भी सोय नही थी। वह घरमालक की बडी लडकी थी। यह मुझे मालुम था। उस लडकी को मै कई दिन से दखता रहा था। उसके बारे में सुन रहा था। वह बहुत हुषार है, कर्तबगार है, बुध्दीमान है ऐसा मेरा मत हो गया था। उसके साद में हुकुमत थी। चनले में आत्मविश्वास था। आंखो में एक प्रकार की चमक थी। माँ का घर वही चलाती थी। मकान की डागडुजी, परिवार में जो नही चाहीए वह, भाडेकरु की वसुली यह सभी काम वह करती थी। उसकेशादी की उम्र निकल गयी थी। छोटी बहणा शादी होकर अपने-अपने घर गयी थी। उसमें के एक का पती मेरा अच्छा दोस्त हो गया था। उसने उपनी प्रेम कथा मुझे सुनाई थी।

"प्रेम" इस शब्द का धक्का मैने खा लिया था। और फिर भी उस लडकी के बारे में मेरे दिल में कुछ अन्दर ही अन्दर चल रहा था। और कुछ बोलने की हिम्मत नही थी। मै पागल सा इस विषय में मेरी पुरी खात्री हो गयी थी। उसके हुशारी की कई कंथाए उनकेही रिश्तेदारों से सुनी थी।

एक शाम के समय मुझसे रहा नही गया। मै मेंडोलीन छेडते बैठा था। अपन-अपने मालकी के घर में रहते है यह भाव उसके आंखो में से एकाकी गायब हुये सरीका लगा। मैने पुंछा कौन है?

मै रतन!

'फिर बाहर क्यों, अन्दर आवो ना'

वह अन्दर आयी। थोडी लज्जीत हुई उस शाम के समानही सुंदरता उसके मुखपर दिखाई दी।

'मेरा एककाम था', उसने कहां।

बोलोना! मै बोला।

मुझे मेंडोलीन सिखना है। सिखाएंगे?

नही बोलनेका तो मेरे मन को लगाही नही। उलट बडे ताव से बोला 'जरुर-जरुर, आते जांओ ना रोज'

रतन ठाकुर मेरे यहां मेंडोलीन सिखने के लिए आने लगी। प्रत्यक्षरुप से वाद्य जल्दी बजाते आना चाहीए इस उद्देश से मै उसे पद बजाने का सिखने लगा। मुझे लगता है वह पद गो।म।रांगणेकर ने लिखा था। उस समय वह बहुतही लोकप्रिय था।

"यह कोण मुसाफीर आया मेरे व्दार?"

गीत में का मुसाफीर उसके दरवाजे पर आया था। मै तो उपना नायिका के घर में ही रहता था। उसे मेरे में क्या जचा वह मुझे आज भी नही कह सकता। मुझे वह अधिक पसंद आयी, वह उसके हुशारी के कारण। उसके सरीकी सहचारीणी अगर मिली तो अपना भी सुखी संसार होगा। अपना घरदार होगा। ऐसे अर्धबंबले विचारों ने मुझे घेरा था। संगीत प्रयोजन शुरु ही था और भी कुछ योजना का मनोरा मेरा मन रच रहा था। और एक शुभ क्षण में उसने मुझे बडे चतुराई से पुंछा 'अकेले कब तक रहोगे?'

पारिवारीक भविष्य के विषय में पुर्णरुपसे अंधेरे में विचरण करनेवाले मन ने उस प्रश्न से काजव के पंख मिले। अन्दर ही अन्दर कही तो भी एक प्रकाश झोत दिखने लगी। वह प्रकाश भी मेरे काम मे उजाला भरता गया।

उस समय मेरी सगी मां मेरी छोटी बहन पार सहने के लिए आनेवाला था। और मुझे नारायणदास सदन का सामान दुसरी ओर ले जाना पडा। नजदीक ही दुसरी ओर स्थानांतर किया मां और शकु मुंबई में आयी।

फुल छुपने से खुशबु छुपती नही। हमारे प्रेम का गुपीत जल्दी ही खुला। उसकी मां को मालूम हुआ। मेरी मां को पता लगा। हमारी दोनो की मुलाकात होती थी। प्रेम बढते गया। हमारा दोनो के ही मातृदेवतांओ ने उलग दी उद्योग शुरु किया। दोनो भी अपनी अपनी पाल्या की निंदा खुले रुप से करने लगे। मेरी मां को दुसरे जात की बहु नही होनी थी। उसकी मां को दरिद्री दामाद नही होना था। बहन का कही जमने के पहले ही इन दोनो ने हंगामा मचा दिया था। मेरी मां ने मुझे बहुत भला बुरा बोला। और लडकी को लेकर वह नाना के घ रचली गयी। मै मेरी यातना नही लिखता उससे उभरने की हिम्मत है मुझमे उन भगवान का मै बार बार आभारी हुं।

घुस्से से निकल गयी मेरी मां। दो माह में फिरसे आ गयी। शायद नाना से उसका झगडा हो गया होगा। मेरे शादी के बारे में फिर वह बोली नही। मैने भी उसे बताया नही। हमने विचारपुर्वक निर्णय लिया था। मेरे विचारों का मुखवटा हमेशा अविचार से भरा प्रतीत हो रहा था। (रतन ठाकुर को उसके घर में बेन कहते थे) और मै शादी करनेवाला हुं यह बात बेन का छोटा जमाई कालन को मालूम थी। वह हमारे पक्ष का था। भगवान तो मेरे साथ ही था। पाप हो या पुण्य भगवान हमेशा मेरे साथ होता था। राजा जोशी नाम का एक और मित्र हमारे साथ सामील हो गया था। उसकी भी सहानुभुती मुझे मिली थी।

इस शादी का समारंभ होने की कोई गुंजाइश नही थी। सारा मामला गुपचुप में ही निपटाना पड सकता है। मेरे संग्रह में कीचन के वांदे थे। बेन की मुखत्यारी उसके मां ने बरखास्त कर डाली थी। शादी माटुंग के "आर्यसमांज" मे करना पडेगा ऐसा मित्र मंडल ने तय किया। दिन भी निश्चीत हुआ, १९ नवम्बर १९४२।

बीच के काल में बेन और कालन इनहेने मेरी कुंडली एक बडे आदमी को दिखाई थी। जगन्माता की आराधना कर अपना प्रापंचीक जीवन अत्यंत सुख से व्यथीत करनेवाले गृहस्थ काम नाम आरोलकर था। वह टाईम्स ऑफ इंडिया के बडे औदे पर नोकरी को थे। जोतिष्य यह उनका धंदा था। लेकिन अडे हुये का हौसला बढाना उनका स्वभाव था।

मै भविष्य में बहुत बडा संगीत दिग्दर्शक बनुंगा यह आरोलकर ने कहा। बेन का उसपर बहुत विश्वास था। और क्या क्या मेरे भविष्य के बारे में क्या बताया क्या मालूम बेन का निश्चय तय था।

वह दिन आया। मै और मेरे मित्रो ने पुरा कार्यक्रम पहले ही फिक्स किया था। भगवान, राजा जोशी और कालन इतने बाराती। शादी को बत्तीस तहत्तीस रुपये से अधिक खर्च नही आनेवाला था। कुछ लेना नही था कुछ देना नही था। और मेरे पास था भी क्यां, टोपी भी नही थी। एखाद टोपी लाना जरुरी था। वह काम राजा जोशी ने स्विकारा।

उस दिन हमेशा की तरह काम पर गया। मां और शकु को इसकी शंका भी नही आयी। मेरे चेहरे पर कुछ न कुछ भाव आये होंगे जरुर। पर उनको वैसा कुछ दिखा नही।

वक्त पर टॅक्सी से दुल्हन को लाने के लिए मै उसके घर गया। मेरी कल्पना थी की वह बहुत ही अधिर होगी। हर पल उसे युग की तरह लगता होगा। सुंदरसा पेहराव कर वह चोरों की भांती हलचल कर अन्दर बाहर कर रही होगी। लेकिन प्रत्यक्ष दृश्य वह अलग ही। बिलकुल जिसकी अपेक्षा नही की जा सकती वह। मेरी दुल्हन घुटनो में गर्दन डालकर रो रही थी। क्या हुआ क्या मालुम?

"बेन", मैन आवाज दी। उसने उपर देखा। चल वक्त हो चुका वह चुपचाप, फिर जोरजोर से रोने लगी।

याने हुआ क्या?

मेरी मां।

क्या हुआ उसका?

मुझ पर घुस्सा होकर घर से चली गयी।

फिर?

मुझे डर लगता है?

कैसा?

वह अपना अच्छा बुरा न करले।

मुझे बहुत घुस्सा आया। मै उसपर घुस्सा नही हुआ। उसके जन्मदायीपर घुस्सा नही किया। घुस्सा किया मैने मेरे नसीब पर। भगवान को उद्देश से जो बोलना था वह सभी कठोर शब्द मैने उस दुल्हन को सामने रखकर कहा। आखीर में तीरछा लेकिन दबे आवाज में चिल्लाया। तुझे आणा होगा तो आ, नही तो।

बेनने अश्रु रोके, शांत हुई। ऐसी अवस्थामें भी उसके चेहरेपर हंसी आयी। बारीश में धूप गिरे ऐसा ही कुछ तो भी गीरा। मां उसका घर, उसकी सांपत्तीक स्थिती इसकी कुछ भी परवाह न करते हुये वह उठी। उसने अपना वेश बदला। मुद्रापर भाव भी बदल दिया और वह सिधी गाडी में आकर बैठ गयी।

हम माटुंगा के उस आर्य समाज मंदीर में पहुंच गये। भगवान, कालन, राजा जोशी यह सभी आये थे और फिर क्या इतनाही की मेरी शादी हुई। मंडप नही, बोहले भी नही, गौरीपुजा नही, बहन नही, बारात नही, वाजंत्री नही। कुछ भी नही। मेरी शादी हो गयी। मै विवाह बंधन में बंध गया।

उस हुशार लडकी ने मेरे में जो भी होशीयारी नही थी उसको भर निकालने के लिए हाथ सामने किया। पुरोहीत ने वैदीक मंत्र मुझे में उच्चारीत किये। धर्मेच अभेय कामेच नतिचरामि, नतिचरामी, नतिचरामी।

शादी खतम हुई। हम सभी लोग एक देशी खाणावल में जाकर भोजन किया। मै उपर से हंस रहा था। दोंस्त मेरी मजाक मस्करी कर हे थे। लेकीन अब यादों के पहाड तुट पडे थे। उसमें के मधुभक्षीका मेरे कलेजे को नोच रही थी। आज बडी मां नही थी, भाई नही था, गोदुताई को खत लिखकर बुलाना कठीन नही था। लेकिन वह मै नही कर सका। सगी मां घर में थी। उसे शादी में आना ही नही था। मुझे चाहीए थी वह बीबी मिली। बाकी सब यातना थी। दु:ख था।

शाम हो गयी सौ.चितळकर को साथ में लेकर घर में प्रवेश किया। मां घुस्से में थी। मैने और मेरी बीबीने जोडी से उसको नमस्कार किया। मेरा ह्रदय भर आया था। बोलना तो था ही। उसके चरण को स्पर्श करते समय मैने बोला मां चरण छुता हुं। शादी करके आया हुं।

पांव को किसी कीडे ने काटा हो ऐसे ही मां पिछे सरक गयी। घुस्से से बोली। मेरे क्यो पैर पडता है? जिससे शादी की है उसके ही पांव पड। मां का आशिर्वाद इस प्रकार मिला। घर में प्रवेश इस प्रकार हुआ। मेरी सुवासीनी संसार मे आयी वह इस वातावरण में।

उस दिन मे भी गती थी। दिन का भगवान समन्दर के विशालता में खो गया।

रात हुई। मुझे और मेरे पत्नी को उस घर में जगह नही थी। दोही रुम थे। एक में मेरा दोस्त राजा जोशी रहता था। दुसरे में मां और शकु।

हमने अपना बिछाना गॅलरी में बिछाया। नव विवाहीत दांपत्य की वह पहली रात इस प्रकार आयी। दोनो के दिल में आपने दिल का भार था। रात भर नींद आयी नही। एक बात हुई रात में चांद का दर्शन हुआ। चंद्र को

पुरावा रखकर उतने कठीन प्रसंग में भी हम एक दुसरे के हो गये। प्रथम मिलन की रात को आकाश में चंद्र था। अलिंगन का आनंद सही में मीठास से लदलद था।

दुसरे दिन मां घुस्से से निकल गयी। काका प्रधान नाम के एक दोस्त ने हमें जगह दी। मै और मेरी बीबी उस नये घर मे रहने गये।

हरिश्चंद्रशवका सुखी संसार चित्र स्टंट होकर भी यशस्वी हुआ। पंधरा सप्ताह चला व सिनेमा। मै यशस्वी संगीतकार के रुप मे उभर आया। इधर हमारा भी सुखी संसार शुरु हुआ। बेन ने अपने स्वयं कलागुणों से उसका चीज किया।

जोड खोली को साफ सुथरा कर बंगले को रुबरु बनाया। दिन सुख से बितने लगे। उसकी सुंदरता और चतुराई के सहवास में मेरे अन्दर की सभी यातना मिल गयी।

एक दिन जयंत देसाई इस दिग्दर्शक ने मुझे बुलाया। पत्नी का पांव गुण लाभांकीत हुआ। हर महिने तिनसौ रुपये तनख्वाह पर जयंत देसाई ने मेरा चुनाव संगीत दिग्दर्शक के रुप में किया।

करार करते समय उसने एक अडचण बतायी वह बोले तुम्हारा नाम बिलकुल मराठी लगता है।

तो क्या करें?

बदल दे।

कैसे?

शादी में दुल्हन का बदलता है। हमारी शादी में वैसे प्रसंग नही आये। शादी के बाद मेरा नाम बलदने का वक्त आया। उसका मुझे अचरज लगा। जयंत देसाई ने चुना की स्क्रीन नेम लिजिये कुछ।

मैने सोचा खुब सोचा। उस समय व्ही.शांताराम यह नाम भारतीय सीनेसृष्टी मे रुपरी परदेपर बिजली की तरह तडप रहा था। उसका यश अमाप था। मराठी में जन्म लेकर उसका नाम परे भारत में लिया जाता था। वणकुद्रे इस उच्चार दुर्लभ मराठी नाम को उसे दिया हुआ संक्षिप्त रुप मुझे अच्छा लगा। मैने जयंत देसाई को कह दिया। परदेपर मेरा नाम "सी .रामचंद्र" आना चाहिए।

मैने पुंछा मेरे जिवन में संतती योग बोलो आरालकर हंस दिये और बोले। दुनिया में असंख्य लडके होते है। वह सभी अपनी ही है। किसी के भी भाग से भागे।

यानें?

आरोलकर नही बोले। उसने लक्ष्मी का योग बोला। किर्ती का योग कहा। प्रवास के योग का कहा। परदेश में जाने के योग के विषय में कहा। लेकिन संतती के बारे में एक शब्द भी नही काह। वह बात दिल में खलती रही। मेरा भाग्य ही वैसा होगा तो भगवान क्या बतायेगा, मेरा सर।

भाग्य को आकार देनेवाले भगवान की करुणा मिले यह मुझे फालतू ही लगने लगा। उतने में जाधव नाम के मेरे एक मित्रने मुझे शिरडी साईबाबा के दर्शन के लिये चलने के बारे में पुंछा। मैने हां कह दिया। और बेन को लेकर शिरडी गया।

मै ब्राम्हण घराने का आदमी। पुणतांबे को रहनेवाला। गोदा के पानी में डुबा हुआ। मेरे घर के सामने जागृत गजानन था। पिताजी गये तब मुझे भगवान यादी अया। और उसके बाद अब मैने शिरडी में प्रवेश किया। लेकिन मुझे एक अनामिक सुगंध ने मोहित किया। वैसा सुगंध मैने कही भी अनुभव नही किया था। इस जगह से अपना कुछ तो जरुर रिश्ता है ऐसा मुझे महसुस होने लगा। साईबाबा की समाधी और उसके पास की तस्वीर देखकर मुझे आनंद हुआ। उस बुढे फकीर की आंखो में मुझे बडी मां, भाई, गोदुताई दन सब के चेहरे दिखे। हमे कोई तो भी सहला रहा है ऐसा लगने लगा। आंखे भर आई। लगा हमे आज तक कोई भी नही ऐसा लगने लगा था। अब आधार मिल गया।

'बेन बाबा के सामने नारीयल रख', मैने कहा।

बेन ने बाबा के समाधीपर हार चढाया। उद्बत्ती जलाई। नारीयल रखा। वह नारीयल सडा निकला। अन्दर के खोबरे का काला कपास हुआ था। मेरे दिल में कुछ हुआ। गर्भीणी औरत ने चढाया हुआ नारीयल सडा है। मुझे फालतू ही नाना के घर के वह बैरागी की याद आयी। उसका दुःखीत मन याद आया। मैने कुछ भी नहीं बोला। लेकिन अन्दर ही अन्दर मन में कुछ लगने लगा।

१९४३ मे मई महिने में हम साईबाबा के दर्शन के लिए शिरडी गये थे। सत्पुरुष के समाधीपर चढाया नारियल सडा निकलना इस घटना से बेन बहुत दुःखी हुई। मै भी दिल में डर गया था। लेकिन एक दो घंटे में मेरा मन ठिकाणेपर आ गया। और कहां, हम को आगे का दिखता नही है इसीलिए हम यहां अये है।

उसने हां कहकर बोला लेकिन बाबा ने यह क्या दिखाया?

क्यां?

चढाया हुआ नारीयल सडा हुआ।

तुने लगाया हुआ अर्थ बाबा के मन में थोडा हो सकता है।

मुझे वैसा लगा।

लगता वैसा होता नही।

फिर मै क्या करु?

बाबा पर विश्वास रख मृतो को संजिवनी देने का सामर्थ्य है उनमें।

मै और कुछ बोल गया। उसे हर तरह से समझाते हुये शब्दो से उसे उत्साहीत करने तथा संबारने का प्रयत्न किया। थोडा क्यों न हो लेकिन यश आते दिखाई दिया। बेन ने आंसू पोछे। उसके फिकट चेहरे पर फिर से चांदणी तैरणे लगीं।

अच्छे खासे दो तीन दिन हम शिरडी में रहे। उद-धुप के सुगंधसे भरे हुये इस श्रध्दा नगरी में मुंबई को हम भुले समान ही हो गये। मेरा संगित निर्मीती का अहंकार वहां के आडेतेडे भजन के आगे भक्त के जैसा हात जोडते रहा।

शिरडी छोडते वक्त मन प्रसन्न था। अपने उपर परमेश्वर की कृपा है इससे वह निश्चीत हो गये थे।

सडे नारीयल की कहानी बेन के दिमाग से निकल गयी थी। बाबा के तस्वीर के सामने नतमस्तक होकर हमने शिरडी से प्रस्थान किया।

हम मुंबई मे आये। मेरा संगित रचना का काम हमेशा की तरह शुरु रहा। बेन के पेट में का प्रेमांकुर दिन पर दिन बढता जा रहा था। वह और भी सुंदर दिखने लगी। उसके उस आनंद गर्भ आकृती की ओर देखते समय अैसे ही मुझे मेरी पुरानी प्रेमकहानी याद आने लगी। खुद के इबलीस रुप की बार बार हंसी आ रही थी।

छः महिने पुरे होकर सातवा माह लगते ही वह और खुबसुरत दिखाई देती थी। कैसा तो भी दुसरा आलस्य उसके अंग अंग में भरा हुआ दिखाई देता था। बहार आनेपर लदा हुआ पेड झुकता है, लजाता है देखनेवालो को वह और शोभायमान दिखता है। बेन वैसी दिखने लगी। मै उसकी बहुत देखभाल करता था। उसके मैके के लोग भी उसकी देखभाल करते थे।

मै कुछ अमीर नही हुआ था। लेकिन अब गरीबी भी नही रही थी। वह एक नामांकीत स्त्री रुग्णालय में गयी होती तो भी पैसे की कमी नही थी। मै एक शाम में उसको कहा बाई साहब, पुरंदरे, शिरोडकर ऐसे नामांकीत डॉक्टर के यहां जाओ।

क्यों? वह बोली।

पहिलीबार है। खबरदारी लेनी चाहिए।

कुछ नही महंगे डॉक्टर।

ता फिर किस दवाखाने में जायेगी तू?

जाऊंगी प्रभादेवी के उपरके दवाखाने में।

छि!

क्यों?

वह सार्वजनिक दवाखाना।

फिर क्या हुआ। मेरी बहना की जचकी वही हुई। नजर लगेगी ऐसे लउके है उन्हे।

मेरी हुशारी काम न आयी। बीबी अपने से भी हुशार है यह मुझे शादी से पहले ही मालूम था। वैसे ही उसके मैके के लागों का अनुभव मेरे सामने रखा। मै निरुत्तर हुआ। नही बोलनेपर भी आरोलकर ने किया भविष्य और बाबा के सामने फुटा हुआ खराब नारियल मुझे डर बता रहा था। मै फालतू ही बकवास किया।

बेन, पोर्तुगीज चर्च के पास एक डॉक्टर दांपत्य है।

कौण?

डॉ.सेन और मिसेस सेन।

फिर?

वह बहुत प्रसिध्द है।

उन्हे सिर्फ तेरी प्रकृती बता। जचकी के लिये लगे तो प्रभादेवी में जा।

क्या मालुम वह कैसी कबुल हो गयी। उसने अपनी प्रकृती डॉ.सौ.लिला सेन को दिखाया। उस मॅडम ने उसे दिल से जांचा वह चिंताजनक स्वर में बोली, मी.चितलकर तुम्हारा बच्चा बहुत भारी है। उसका सर बडा है। शायद सिजरीन ऑपरेशन से उसे बाहर निकालना पडेगा। घबराओ मत इन्हे अभी से हमारी ओर रखो। मै डर गया। केवल हां कह कर वहां से निकले।

बेन को मैने बार बार कहां की, बेन तु सेन के हॉस्पीटल में जाओ। बेन हुशार, बुध्दीमान, कर्तव्यशील। वह हंसकर बोली, तूम इतना घबराते क्यों हो।

ये डॉक्टर लोग पैसे निकालनेवाले होते है। छोटे का बडा करके बताते है।

ऐसा कैसा थोडा कचराते हुये बोला। डॉक्टर का शास्त्र डॉक्टर को अधिक मालूम होना चाहिए। बेन ने कहां, डॉक्टर को पैसे कैसे निकालना यह मालूम है। मै चुप हो गया। पेट मेंदर्द होने लगा वैसे ही बेन उसके मैके के परिचित प्रभादेवी अस्पताल में चली गयी। मैं अपने काम से गया। बेन अस्पताल में गयी। वह वक्त शाम का था। रातभर उसे बहुत तकलीफ हुई। वेदना और भी बढती गयी। रात में उस अस्पताल में कोई भी डॉक्टर नही था। उसके क्या हाल हुये और वहां के अनुभवी सेविकाने उनपर किस प्रकार उपचार किये होंगे कुछ भी मालुम नही।

दुसरे दिन मै साढे दस के दरम्यान भगवान के ऑफीस में बैठा था। भगवान का भाई शंकर भी था। सायं. समय न होते हुये भी चाय की चुश्की लेकर बातों में खोये थे। भगवान बार बार कह रहा था। अण्णा तुम अब बाप बनोगे। मुझे अंदर ही अंदर आनंद महसुस होता था। एक तर्ज को रचना करते समय असीम आनंद होता है। एक तर्ज से कितना आनंद मिलमा है फिर मै तो एक चलतेबोलते लडके का बांप होनेवाला था। एक नये जन्म का जनक होनेवाला था। एक अनभिज्ञ आनंद मुझे संतोष दे रहा था। एक अनामिक चिंता दिल में घर कर गयी थी। इतने में प्रभादेवी का संदेश लेकर कोई तो भी आया। आये हुये व्यक्ती ने कहा बाई की जचकी हो गयी।

मै, भगवान और शंकर उठे और अस्पताल की ओर गये। दादर से प्रभादेवी के प्रवास में मेरा गोकुल मुझे याद आाया। मै बाप हो गया इस बात से मेरा कलेजा थंडा हुआ। मै बहुत खुश हुआ। हम अस्पताल में आये। डॉक्टर के सामने आये। मुझे बेन को देखना था। मेरे अपत्य को देखना था। कृत्यकृत्य हुई रात और जल्दी ही उपर आया हुआ सुरज इन दोना का दर्शन लेना था।

डॉक्टर ने हमे रोका। बैठने को कहा। मेरी अधिरता आंखो में से राह देख रही थी। मै युंही इधरउधर देखने लगा।

डॉक्टर ने कहां, मिस्टर चितलकर बच्चा बहुत प्रयास से छुडाना पडा।

कहां है वह? मैने उत्सुकता से पुंछा।

डॉक्टर चुप रहे। कुछ देर के बाद बहुत ही शांत स्वर में उन्होने कहा बच्चा गया।

और बेन? मै चिल्लाया।

वह ठीक है।

उस अवस्था में भी मैने श्वास लिया। उठ खडा हुआ और बोला, वह मेरा बच्चा कम से कम बताओ तो मुझे।

जरुर, डॉक्टर ने कहा। वह उठे और चलने लगे। मै, भगवान और शंकर उनके पिछे पिछे गये।

एक टेबल पर बच्चे का मृतदेह सफेद कपडे में लपेटा हआ था। मेरा बच्चा मारे रक्त मांस का व पींड। वह जन्मते ही चेतनाहीन हो गया था। पियानो के सभी स्वरो पर एकदम आघात होने की वजह से कोई अबोध नाद उत्पन्न हुआ ऐसे मस्तीश्क को लगा। उमंग के चलते संयम तुट गया। मै रोने लगा। वह अस्पताल है, यह सार्वजनिक जगह है यह भूल ही गया था। वह बच्चा जिंदा होता तो सारी दुनिया देखकर आवाज किया होता। ऐसा ही मैने किया। भगवान ने मेरे पीठ पर से हाथ घुमाया। खुद की आंखे पोंछने लगा।

आरोलकर ने किया हुआ भविष्य मुझे सताने लगा। उनकी प्रसन्न खाली मुर्ती भगवान के रुप में पीठ पर से हाथ घुमाने लगी। और नाना के घर का वह गोसावी, उसने रचा हुआ राख का गोलाकार, उसका तडपना, साईबाबा के सामने फोडा हुआ खराब नारियल वह काला काला खोबरा मुझे भी असह्य होने लगे। किसी ने तो भी मेरे दोनो कान अपने हाथों से दबाये रखे। और मेरी गर्दन एक दिशा में हो गयी। एक टक मैने सामने देखा। साईबाबा की वृध्द चित्राकृती मेरी आंखों में स्पष्ट दिखी। मस्तकपर कपडा बांधे सारे जिवनमात्रा का दु:ख का परिमार्जन करनेवाला वह सत्पुष बहुत ही मंद स्पर में मुझे बोला, 'मेरी तु देख, मै तेरी देखुंगा', बस मेरी आवाज रुक गयी। आंखे साफ हो गयी।

फिर मै रोया नही। बेन को मिला। फिर भी मेरी आंखो में पानी नही आया। मेरे खुद के अर्भक का प्रेत लेकर मै निर्वीकार स्मशान में गया। निर्वीकार उसका दफन किया। साडेतेरा पौंड वजन का वह पुर्ण विकसीत देह मां की कोख से आया और भू माताके कोख में फिर से निद्राधीन हुआ।

यह सब किसलिए हुआ, किसको मालुम।

मेरे जैसे को वह कभी समझेगा नही। साईबाबा को शादय समझा होगा। लेकिन समझकर भी क्या फायदा? किस भावना से और किस विचार से मै बोला कौन जाने। मैने भगवान से कहां, 'भगवान अपना पहिला सिनेमा फ्लॉप हो गया। तत्वज्ञान का मुंह खोलता मेरी आंखो के सामने घुमने लगा। दिल से गर्दन हिलाई वह मेरी कान पकडने लगे। घुस्से से चिल्लाने लगे। अरे पत्नी का सुना और पेट का बच्चा मट्टी में मिा दिया। वह उस सेन डॉक्टर की ओर जाती तो, तेरे हांतो से गाडा गया वह बच्चा तेरा हाथ पकडकर चलते हुये पाया होता।

उपदेश का निरंतर स्वर और दिस का बेसुर चिल्लाना मुझे असह्य हुआ। मै वैसे ही निकला और स्टुडीओ में पहुंचा। अन्दर जाते ही आश्चर्य करते हुये एक परिचित स्वर ने कहा,

कमाल हो गयी।

कैसी? मैने पुंछा।

कैसी क्या राव?

बोलनेवाला व्यक्ती मेरे पहचान का था। लेकिन उस समय उसका नाम याद नही था। उसने मेरा हाथ पकडा उत्साह वर्धक हस्तांदोलन कर अर्जा से कहा, भक्तराज यह तुम्हारी पहिली फिल्म पहले ही सिनेमा ने रौप्यमहोत्सवसे अच्छा किया। और कया चाहिए, गो अहेड। मुझे नमस्कार करते हुये वह व्यक्ती जल्दी में चला गया। फिर भी वह कौन था इसका अहसास नही हुआ।

वह गया तो मुझे लगा कितनी विरोधी घटना एक ही समय में घटीत हुई। मैने संगीत दी हुई पहिले सिनेमा ने रौप्यमहोत्सव अच्छा किया था। और मैने जन्म दिया हुआ बालक उपजतेही मट्टी में गाड दिया था। इश्वर की

लीला नाट्य कहते है वह कितना सच कितना असत्य। योगायोग भी ऐसा कि मेरे पहले सिनेमा का नाम भी भक्तराज था। उसमे के सारे गीतो की सुरताल यह कह रहे थे की, इश्वर की महिमा अगाध है। उसका खेल किसी को भी समझा नही।

जो होना था वह हो चुका। मै फिर से काम मे लग गया। डॉक्टर ने कहा था पत्नी से तुम दुर रहना। साल दो साल तो भी संयम बरतो। मै तो उपभोग का लालची आदमी। विवाहीत और ब्रम्हचारी मेरे लिए ना के समान था। ना इलाज होकर मैने संगीत रचना की ओर ध्यान दिया। उस समय बेन और मै में एक ताकीद का अलग पण खुदब खुद उत्पन्न होने लगा। मेरा पिना बढ गया। सुर और सुरा में मै डुब गया।

जयंत देसाई प्रोडक्शन की फिल्म तयार होती रही। उस हर एक सिनेमा का संगीत लोकप्रिय हुआ। जबार, मनोरमा, ललकार, चंद्रगुप्त इन सभी सिनेमाने जयंत देसाई को लाभ मिला दिया। मेरे में अहंकार जागृत हुआ। अब अपने को मेहनताना अधिक मिलना चाहिए। मुझे ऐसा लगने लगा। इतने में कहा से तो भी धिमा आवाज मेरे कानो में आयी। नये फिल्म के नायक के रुप में अव्दितीय गायक, नायक कुदनलाल सैगल यह देसाई के नये सिनेमा के लिये हिरो के रुपमें आनेवाले है।

सैगल रसिको के गंले का ताबीज था। कर्ण के कवच कुडल के समान सोने का स्वर लेकर वह उपजा था। उस स्वर सम्राट के लिए तर्ज बनाने का काम मुझे मिलनेवाला है इस वार्ता से मै पागल हो गया। उस पागलपण को तुरंत ही एक थप्पड बरसी। स्टुडीओ के एक जबाबदार व्यक्ती ने मुझे कहा की, इस सिनेमा के संगीत दिग्दर्शक की जिम्मेदारी लाल महंमद नाम के किसी नये दिग्दर्शक पर सौंपी जा रही है।

कोण यह लाल महंमद? मेरा अहंकार बोला। लाल महंमद, गुलाम हैदर इस महान संगीत दिग्दर्शक का चेला। फिर दिल ने कहा काई भी होगा। मैने भी पांच सिनेमा किया। मै भी तो कुछ हुं।

मेरे में अहंकार जागृत हुआ और मै देसाई के ऑफीस में गया। मुझे जो लगता था वह बोल गया,

मेरी तनख्वाह बढनी चाहीए।

मालक ने पुंछा कितना?

एक हजार, मैने मेरी दृष्टी से बडा आकडा बताया।

कठीण है।

क्यों?

मै कामगारो की तनख्वाह उनके मर्जी से नही बढाता। मेरे दिल में जब आयेगा तब बढाता हुं।

मेरा बढाना चाहिए ऐसा नही लगता?

लगता तो है।

फिर?

तिनसो के पांचसौ करुंगा। इससे अधिक छेसौ।

मुझे हजार चाहिए।

मुमकीन ही।

क्यों?

मै तम्हे एक माह चान्स देनेवाला था।

कैसा?

सैगल के सिनेमा को संगीत देने की। ध्यान में रखना, सैगल यह सैगल है।

देसाई का कहना ठीक था। सेगल के सुवर्ण दाद से मेरी तर्ज बहुत ही मुल्यवान साबीत होनी थी। लेकिन मुझ कलाकार के अंकारने ही पछाडा था।

मै पागल के समान बडबडाया, सैकल सैकल आहे तर मी ही सी।रामचंद्र आहे। देसाई ने हंस दिया और हंसते हंसते कहा, तुम्हारा कहना क्या है।

"हजार रुपये महिना दो नही तो"

नही तो क्या?

नही तो मुझे मुक्त करो।

जयंत देसाई ने एक क्षण का भी समय न बिताते हुये कहा, जाना चाहते हो तो जाओ।

मै चुप बैठा और उन्होने ही पुंछा, कब जाते हो? आज ही की कल?

अब संभाषण बढाने में काई गुंजाईश नही थी। पिछे लेने में भी अपमान था। लाल महंमद के आगमन की चर्चा मेरे कानो मे आ गयी थी।

जयंत देसाई प्रॉडक्शन इस संस्था का मैने इस्तीफा दिया। फिर से बेकार हो गया। बेन को ऐसा करना पसंद नही आया। उसका चातुर्य मुझे फिर सतर्क करने लगा। "पारिवीक बनने के बाद ऐसा अहंकार छोड देना पडता है। मै उसकी सब बाते सुन रहा था। लेकिन मन में घुस्सा पैदा हो रहा था। शादी के पहले मेरा प्रेम उसके लिए सब कुछ था। मेरे सिवा उसे कुछ दिखाई नही देता था। शादी के बाद पांव के निचे जमीन भी उसे स्वर्ग लगती थी। अब उसके स्वभाव का काव्य खत्म हो गया था। व्यवहार यह गद्य वस्तु के काबीज में जाने इतनी

सामान्य हो गयी थी। उसे हुशारी के कारण ही मेरा प्रयत्न गया था। उसके बोलने को सहन करने के बाहर मै गया था।

वैसे बेन की कोई गलती नही थी। उसका कहना बराबर था। संसार कोई प्रेम के भार पर नही चलता। संसार चलाने के लिए पैसा लगता है। उसकी हुशारी से बच्चा गया। यह मेरा बिचार भी पागल सा था। मै उसका बाप था। लेकिन वह उसकी जन्मदात्री थी। वह बच्चा जाना ऐसा सपने में भी नही देखा जाता है। मै बहक गया था। आसीक था ही यह सच था।

अब आगे क्या? इसका बिचार भी मेरे दिमाग मे था। मार्ग दिख नही रहा था। घर में अच्छा नही लगता था। इसिलिए मैने भगवान का ऑफीस पकडा था।

एक बार दोपहर में सुप्रसिध्द हिंदी कवी प्रदिपजी खुद भगवान के ऑफीस में आये। मेरी और उनकी मुलाकात देसाई कंपनी में हुयी थी। अब उन्होने बडा नाम कमाया था। बॉम्बे टॉकिज के लिखे हुये गीत सारे हिन्दुथान में लोकप्रिय थे। वे आये तो मेरी पुछताछ के लिये। मै आगे हुवा। नमस्कार, कुशल मंगल होने को रहा वे एकदम बोले।

अण्णाजी चलो।

कहां?

फिल्मीस्थान में।

फिल्मीस्थान यह संस्था अभी अभी शुरुवात हुई थी। हिमांशू रॅाय इनके तालीम में तयार हुये शशीधर मुखर्जी यह सुविद्य गृहस्थ उस संस्था के कर्णधार थे। सफल सिनेमा प्रदर्शन करने में उनका बडा योगदान था। उनके बारे में मैने बहुत सुना था। वह बहुत ही चिकीत्सक थे। कलाकारों को अंगुठे के निचे रखकर और जैसा चाहे करवा लेते थे। ऐसे बहुत से प्रसंग उनके बारे में प्रचलीत थे। उनके साथ काम करने के लिए सभी कलाकार अधीर होते थे। यह भी सत्य था। मुझे उनके यहां काम मिलना चाहीए यह अपेक्षा थी। लेकिन मेने में से अहंकार की भावना अभी कम नही हुई थी। फिल्मीस्थान की ओर से आये प्रदीपजी से पुंछा,

'तनख्वाह क्या मिलेगी फिल्मीस्थान में?'

प्रदीपजी ने कहां, तुम चाहों सो।

एक हजार मांहवार, मेरे अहंकार के लेयलपर एक ही आंकडा बैठा थ।

ठीक है, माना। प्रदीपजी हंसते हुये बोले। फिर उसके बाद मेरा बोलना बंद हो गया। मौका खुद होकर आया था। उसे ना कहने में शहानपणा की बात नही थी। प्रदीपजी के साथ मै फिल्मीस्थान गया। श्री शशीधर मुखर्जी इन्हे मिला। मैने तनख्वाह का अपेक्षाकृत आकडा बोला। उन्होने हां कहां। करार हो गया और फिल्मीस्थान इस संस्था का संगीत दिग्दर्शक बना।

हरमाह हजार रुपये तनखाह मिलने की मेरी मनीशा पुरी हो गयी। लेकिन फिल्मीस्थान से कैसे क्या जमता यह मेरा मन बोल रहा था। फिल्मीस्तान के प्रमुख श्री शशीधर मुखर्जी इनके बारे में मैने बहुत कुछ सुन रखा था। अब उनके साथ काम करने का मौका आया। मुखर्जी इम्प्रेसीव्ह आदमी था। वह गोरा था। अपने सामने का व्क्ती अपना सेवक है ऐसा ही बर्ताव करनेवाला। यह प्रतिथ यश संपादन किया हुआ व्यवसाय में बडा प्रस्थ। उनके चारों ओर थुंक चाटनेवालो की भीड। मुखर्जी सहाब इस नाम का उच्चारण भी उसी ऐट में ही करते। सुननेवालो को लगता यह मुखर्जी याने कोई अदभूत व्यक्तीमत्व है।

मुखर्जी केपीछे विजय का लमहा थ। बॉम्बे टॉकीज के सरीखे बडे संस्था की परंपरा थी। हिमांशू राय के समान कतृत्ववान मार्गदर्शक प्रदीर्घ लाभ उनके पीछे था। कंगन, बंधन, संसार, किस्मत यह मुखर्जी महाशय की तीन अक्षरी फिल्म। 'किर्तीमान' यह तीन अक्षरी किताब आज भी जिंदा थी।

मुझे खुद को यह मुखर्जी कुछ असमान्य प्रतिभा के धनी नही लगे। वे बहुत समझदार थे इसमें कोई शंका नही। सिनेमा का टिकना कहानी केमुल पर होता है। तुरंत द्रव्यलाभ के लोभी को इस सत्य का आकलन नहीं होता है। कहानी के सुरकते पांव पर केवल तंओोका मार करते खडा करते है। और वह उसमें कुचकाम के होते है। मुखर्जी इस बात से बहुत जागृत थे। कवी प्रदीप, प्यारेलाला संतोषी, नेपाली शहीद लतीफ, सादत इनके समान प्रख्यात साहित्यकारों को उन्होने अपनी संस्था मे रखा था। रवींद्र, शरच्चंद्र जीससे निकले उनके ही हाथ के नीचे मुखर्जी का बाला वर्धमान हुआ था। साहित्यकारों की सलाह लेने की बुध्द उनके जगह थी। लेकीन कयल कला को पडकर व्यवहार की ओर आंख मीचकर रहना उनका देश नही था। लोगों को क्या चाहीए यह जानेन का उनको लगाव था। और इसिलिए वह यशस्वी हुये। उनकी संस्था काबील थी। उस संस्था से संबंध आना याने अभिमान का था।

फिल्मीस्थान का संगीत दिग्दर्शक होने की वजह से मेरी आर्थीक स्थिती भी सुधर गयी। हमेशा काम करना, नियमीत खाना, पीना नित्यक्रम शुरु हुआ। पहिला ही बच्चा जाने की वजह से थोडी निराशा थी। मनके लायक काम मिलने के बाद मै वह भूलता गया। जीवन के गले से फुलनेवाले स्वर की पहचान हो यहां तक मधुरता आने लगी।

फिल्मीस्थान का सफर नाम का सिनेमा कर रहा था। तर्ज को बहार आर रही थी। मेरा मै ही खुष था। किसी को अच्छा न बोलणेवाले मुखर्जी भी गर्दन हिलाने लगते। मेरे जीवन गीतने रिदम बराबर लगाने की इतनी

प्रगती निश्चीत रुप से की थी। हरीयाली उभरती है तभी फुल भी खिलता है। विसंगती को पागल सा निसर्ग पहले सुसंवादप्रिय ही होता है। सफर की वजह से मेरे प्रयोग स्वर संधान चालू थे। तभी मुझे आनंददायी वार्ता कान पर आयी।

सुखी हुई बेल फिर से हरीभरी हो रही थी। उसने फिर से कली पकडी थी। बेन को फिर से दिन गये थे।

झुठ बोलना मुझे अच्छा नही लगता। मुझे लडका चाहीए था। घर होकर घर को विस्मृत हुआ मेरी युवावस्था अपत्य सुख के लिये लालायीत हो रहा था।

मां और भाई मेरे से मन से ही दुर हो गयी थी। मुलभूमी से दुर कही तो भी फेंके गये बेट के समान एकाकी था। वह भी फिर से बहर जाये यह मेरी इच्छा थी। पहले अपत्य के चले जाने से मै दु:खी था। उस वैरागी का शाप अपने जन्म को चीपका है ऐसा लगता था। आरोलकर का भविष्य और श्री साईनाथ के सामने फोडा हुआ सडा नारीयल मेरे दिमाग में घर कर गया था।

जो दिन को जन्म देता है वही रात को भी उत्पन्न करता है। उस रात के सभी गुणो पर उसके अस्तित्व को नामशेष करनेवाला प्रकाशपुंज भी वही फेंकता है। किसी को भी न दिखनेवाला अन्दर का कारागीर क्या नही कर सकता।

उस समय पती का रौबरुपी आवाज निकालकर कहा, अब यह तेरे मैके का अस्पताल नही चलेगा। डॉ.शिरोडकर के यहां ही जा। बेन बिचारी ने हां कह दिया।

सातवे महिने में उसे एकाएक खुन का जाना शुरु हुआ। आरोलकर के भविष्य का फिर से याद आना स्वाभाविक था। उस संतप्त बैरागी के शब्द फिर से वह विषारी शब्द याद आये। आदमी के अज्ञान की जिज्ञासा पल पल देनेवाला विज्ञान ही अज्ञान इन्साम आधार समझकर उपयोग मे लाता है।

अथांग समंदर में सहारा मिलनेपर कछुये की पीठ ही पृथ्वी के समान लगती है।

हम डॉ.शिरोडकर के यहां गये। उन्होने बहुत दिलासा दिया। आशा की खिडकी खोलकर दुर तक देखने लगा। डॉक्टर के उपचार शुरु रहे। मेरा व्यवसाय भी शुरु रहा।

बेन अस्पताल में गयी। और नर्व्हसनेस के कारण मै मेट्रो सिनेमा में एक अंग्रेजी फिल्म देखने के लिये गया। प्रसुती गृह की प्रतिक्षा मुझे सहन न हुयी।

मै सिनेमा देख रहा था। देख काय का रहा था, देखने का नाटक कर रहा था। वह जम नही रहा था। कुछ भी मन नही लग रहा था। मध्यांतर के बीच काका प्रधान आये।

मैने कहा, क्या खबर है?

काका ने कहा घबरानेवाली कोई बात नही।

याने मैने पुंछा, तकलीफ होती है।

फिर?

डॉक्टर बोल रहे थे,

क्यां?

दो में से एक मिलेगा। पत्नी या बच्चा।

मेरे दिमाग में ऐसा आवाज महसुस हुवा की जिससे सभी दिये बुझ गये। प्रकाश की किरण नही रही। आंखो में पानी आया। मन का ताबा तुट गया।

बेन बचनी चाहिए। इतना ही मैने कहां। अस्पताल में मै गया नही। हमेशा की तरह खूब पिया भोजन किया और बिस्तरपर सो गया। मस्त नींद लगी। सुबह उठा तब वातावरण शांत लगा। मुंबई शहर की हमेशा की गडबड मन को लगी नही। यह कैसी वृत्ती थी कौण पहचाने। मन में सुख नही था। दु :ख नही था-विचार नही था वैफल्य नही थे-निराशा नही थी आशा भी नही थी।

सुबह होने के बाद शांती के साथ अस्पताल गया। वहा मालूम हुआ ऑपरेशन करना पडा बेन बची बालक तीन घंटे के बाद गया।

लडकी थी " एक नर्स ने न पुछते ही बताया। ऐसा कहा है? यह मैने क्यु पुछा क्या मालूम वह नर्स बोली ,आवो मै उसके पिछे पिछे गया।बेन के संबंधी भी मेरे साथ थे। नर्स ने उस नवजात शिशू का कलेवर बताया। आवरण दुर कर उसका पूर्ण दर्शन हो इस उद्देश से उसने बताया'। मुझे कुछ लगा नही और ना आँखो मे पानी भी आया। मै हमेशा की तरह बेन की बिस्तर पर गया। कुछभी नही बोला। उसके मस्तक पर उपरी भाग पर हाथ रखा और बाहर निकला। सिधा स्टुडीओ मे गया। शाम मे गाने का टंक था। सहयोगी वाद्यवृंद की कल्पना थी कि शायद मै नही आऊंगा। मै आया और काम में लग गया। गायिका शमशाद बेगम थी। गाणा भी आर्त भावना का ही था। हमेशा की तरह उन्हे बिदा किया। जैसे की कुछ हुआ ही नही।

फिर मिला तो डॉक्टर बोले, मि.चितळकर तुम्हे तीन चार साल सावधान रहना होगा।

माने डॉक्टर ?

पत्नी से दूर रहना होगा।

तीन चार साल ? वह और क्या इसमें का आकार बढाते हुये पुछा। डॉक्टर ने निश्चीत रुप से कह कर गर्दन को हिलाया।

मै पत्नी से दूर रहा। रहना था इस लिए रहा। मै आस्तिक था लेकिन ,विरक्त न था। जीवन के सभी आनंद मुझे लुटने में आनंद आता है ।पुण्यका मुझे आकर्षण है लेकिन पाप टालणे का सामर्थ्य नही है। पत्नी के दु:ख की वजह से मैने और कुछ नजदीक किया ।मेरा मद्य सेवन अब बढ गया था। मै मिलन का सुख काच के ओठ से मिलाने का प्रयत्न कर रहा था ।इस अनैसर्गिकता के कारण लगा हुआ ताल फिर धुट गया। जीवन गीत धुटने लगे। बहते रहा उसे प्रवाह था ।मै और मेरी प्रेमविवाहिता पत्नी इनमें एक अनामिक खाई आकार लेने लगी। मुझे वह महसुस नही हुआ ।उसे निश्चीत ही महसुस हुआ होगा। क्यो कि वह होशियार है ।बुध्दिवान है। मेरे से उसको समभु अधिक है।

मै मयकदे की राह से होकर गुजर पडा ।वरना सफर हयात का कितना दराज था।

दारु के नशे में जीन्दगी का सफर मालुम ही नही पडा ।इसी समय फिल्मीस्तान के सफर नाम के सिनेमा का संगित लोकप्रिय हो गया ।सिनेमाने तो रौप्य महोत्स अच्छा किया।

कभी याद करके
कली पार करके
चली आना हमारे अंगणा

यह गाणा तो देखते देखते सब के मुह से सुनने को मिला वह तर्ज मेरी थी। और विशेष योने गाना भी मैने गाया था।

छोटी सेठानजी तेरे फिराक मे ,हम तो हो गये बदनाम इस दुसरे गाणे ने भी लोकप्रियता सीमा पार की इस गाणे की तर्ज करते समय मे मराठी गाणे को जोडते है वैसी ही सवाई गाणे के ध्रुपद को जोड दिया था।जी जी जी यह पारम्परीक शब्द नही जोडे थे। उस शब्द के बजन का स्वर वाघ मेले से दिया था। हिन्दी तर्ज करने वाले मराठी दिग्दर्शक आखीर मराठी के ही मोडपर जाते है।ऐसे हिन्दी निर्माता की तक्रार है। मैने जानबुझकर मराठी बाज हिन्दी में कलम किया और भारत की जनता ने इस गीत को गाया। मराठी की लकब मैने हिन्दी के थाट में बिकी ,और वह पंजाबी ढंग की अपेक्षा अधिक टीकी भी। यह मै अभिमान से नही लीख रहा। सूर के साम्राज्य को सही में सीमा नही होती है। संगीत यह सारी दुनिया की भाषा है। भाषावार प्रांत के अनुसार संगीत की विशेषत: पर प्रांतरचना करने का भारत ने ठहराया होता तो सारा भारत एक प्रांत हुआ होता ।दुनिया के अन्य देश भारतसे अलग है ऐसा विलक्षण प्रश्न निर्माण हुआ होता। भारत के प्रांतो के लोकसंगीत किसी ने सुना तो संगीत की एक धारा का साक्षात्कार जरुर होगा। महाराष्ट्र में धनगर गान की टोक पंजाबी लोकगीत से मिलती है। पहाडो के लोकगीतो में सहज मिलती है ।पहाडोके गाणो की लाईने महाराष्ट्र के किसान के भलरीशी आकर मिलते है।

मैने कहां है कि मेरे जीवनगीत को रिखम मिल गया हे ।आगे का गाणा आगे।

फिल्मीस्तान ने 'शहनाई' नाम का सिनेमा निकालने का चालू था ।और मुझे विचित्र घटना मालूम पडी। वह शहनाई मेरे ओठों पर नही आने वाली थी ।मेरी थीरकती उंगलीया शहनाई पर दिखने वाली नही था। गुलाम हैदर पुरे भारत मे प्रसिध्द संगीत दिग्दर्शक उस संगीत महोत्सव के लिए निमंत्रीत किया गया था। गुलाम हैदर पुरे भारत मे प्रसिध्द था। मेरे ग्रंथ का पहिला पन्ना खुल गया था। फिर भी वह समाचार मुझे आपत्ती जनक लगा। सामने न आने वाली दिखी ।रंगी हुई मैफील से उठना मेरी साधना को अच्छा नही लगता था ।मै कुछ भी नही बोला अस्वस्थ मन से गुलाम हैदर की राह देखता रहा। संतोषी की शहनाई मेरेही हाथों में हो ऐसी मेरी जिज्ञासा थी।

गुलाम हैदर लाहोर में थे। उसके आगमन की तारीफ होती रही ।धूप और बरसात ने उनका रंग फिका कर दिया ।वह कुछ आ नही रहे थे। संस्था के प्रमुख ने मुझे बुलाया। मै रावबहादूर चुन्नीलाल इनके चेंबर में गया ।बातचीत हुई ।पिक्चर जल्दी शुरु करनी है गुलाम हैदर आये नही है।

तो ?

आप ऐसा किजीए -

फर्माइये ,

एक गाने की तर्ज फिलहाल बनाइये। बाद में वे करेंगे। ऐसा नही हो सकता, मैने निश्चय से कहां।

अगर करनी है तो पूरी पिक्चर मै करुंगा।

मै फिल्मीस्तान का नौकर हूँ। बोले वह काम करना चाहिए। यह मुझे मालूम था। फिर भी मैने पुरे एहसास से कहां।

वक्त आया तो नौकरी छोड दूंगा ।लेकिन ऐसा एखाद गाना नही कहूंगा।

चुन्नीलाल चूप हो गये। मुखर्जी ने जताया था संतोषी ने जोर देकर कहां। क्या हुआ कुछ मालूम नही। शहनाई मेरे ही हाथो में आयी। खोया हुआ दिख गया। मै मन लगाकर काम करने लगा। कुछ ना करने की उम्मीदे जागी। अंग्रेजी गीत आम जनता बोलती है। लोकप्रिय गीत की लय (सूर) शुरु हुई की पार्च्छीमात्य लोगो का झुंड का झुंड गाने लगता है। सामान्य भी संगीतमे घुलमील सकते है। हिन्दुस्तान में ऐसा क्यो न हो ? संगीत महलो की ही बपैती क्यो ? मोहल्लेके लिए संगीत क्यो निर्माण नही होना चाहिए। मीरा सुरदास की रचना और खानदानी गायको की तानबाजी की हरकत क्यो ? गाणा यह अंदर के आनंदका अनलंकृत अविष्कार है। जनसामान्य को उभरने का मौका ऐसा संगीत देणे की ताकद सिनेमा इस माध्यम में है।

सामन्य के लिए संगीत। इस मेरे ही कल्पना के पिछे मेरी राह चलने लगा ।संतोषी मेरा हमराही बना। निचली गांतरचना उसका बाये हात का खेल। हिन्दी के ग्राम भाषा का उसे अच्छा परिचय था।

हमने हात मिलाया और एक विचित्र गाने ने जन्म दिया।

मुखर्जीने हरा दिया बताये सिवा फिल्मीस्तान के किसी भी गाडी को गती नही लेते आती थी। हमारा गाना मुखर्जी को अच्छा लगेगा या नही कुछ बोलते नही आता था। हम दोनो ने वह ध्वनीमुद्रीत कर लिया। यूही आने जानेवाले कोक हमने सुनाना शुरु किया। इस गाणे की रीत जरा पश्चिम के जाती की थी। कुछ अंग्रेजी शब्द भी संतोषी ने ठोक दिये थे। गाणे का मुखवटा हिन्दुस्तान के क्रिश्चन लडकी के सरीखा हुआ था। लेकीन तर्ज का ठेका कोई भी ताल पकडे ऐसाही था। यह गाणा कई लोगों ने सुना उनके मुंह में बस गया। स्टुडिओके लोग भी इसे गुनगुनाने लगे। वैसे ही मुखर्जी महाशय जागृत हुये। उन्होने ऐसेही आवाज मे पूछा यह कहां का गाना है।

अपने पिक्चरोंका किसीने बताया।

कौनसे ?

शहनाई।

फिर एक बार मुखर्जी सहाब बोले ,अरे भाई बहुत सुना तुम्हारे गाने के बारे में। हमें भी तो सुनाओ। मुखर्जी ने गाणा सुना ,

आना मेरी जान संडेके संडे।

लोकप्रियताके नाडीपर हात रखकर बैठने वाला वह बनिया आदमी एकदम खुश नही हुआ, गाणा लेकिन चलते गया संतोषीयह व्यक्ति बहुतही विलक्षण। उसकी कहानी कविता साहित्य परिषद को अच्छी लगे न लगे जनसामान्य के मनपर एकदम मोहीनी करती थी।
और उसका ताल राग का ज्ञान भी अच्छा था। उसके मेरे सहयोग से शहनाईतले हर एक गीत तुफान लोक प्रिय हुये।

मेरे ब्राम्हणी पगडीपर नया सींबॉल लगा। सडके संडे इस गीत ने सरहद तोडी। जसके तसं संगीतकारो ने अच्छा नही कहा। अखबारो ने कुछ तो भी चमत्कारिक लिखा। कुछ भी तो चमत्कारीक लिखा, कुछ भी हो मुझे अभुतपूर्व व्यवहारिक लाभ मिला।

सी.रामचंद्र यह नाम पूरे भारत में प्रसिध्द हुआ। महीनो लगातार चलता रहा।भैस के पीठ पर बैठा हुआ लडका भी धुप में नदीकी और निकला गडरीया लडका भी गाने लगा। आना मेरी जान संडे के संडे।

शहनाई के संगित महोत्सव में लता मंगेशकर यह गायिका प्रथम मेरे परिचय की हुई। मुझे लगता है जवानी की रेल चली जाये रे। इस गाणे के समुह में आयी थी। बसंत के वातावरए में सभी गाणे वाले पंछी गाते है। जानने वाले के कान में कोकिला का स्वर आकर्षित करता है। उस स्वर के माध्यम से वह उसे ढूंढने लगता है। दिखना चाहीए ऐसी जगह पर वह बैठती नही है। पत्तोकी आड में एखाद उपशाकचार बैठकर वह अपना स्वर केकती है। केवल सुर से उस पंछी के प्रतिभाका अंदाज नही आता आंखे उसे देखने के लिए लालयित होती है। आंखो की पंनती थकते थकते एक कृष्ण रंग का पंछी हमे दिखाई देता है।मन थकु हो जाता है। इतना सा पक्षी लेकीन सारा जंगल मोहित करता है। उसके दाद की तस्वीर किसी प्रतिभावंत चित्रकार ने निकाली तो सूर्यचंद्र के पास उसको रंगो की मांग करना पडेगी। रेखां का हलकासा प्रवाह लहर कंपास मांगना पडेगा।

यह लता मंगेशकर मुझे किसीने कहा नमस्कार का लेन देन हुआ। गाना ध्वनी मुद्रीत होते ही, वह कोल्हापुर चली गयी।मेरे ख्याल में रहा वह असीम सुरेल साद। स्वरो की उची उडान आकाश से तीव्रगतीसे ताने वाली चमकीली रेषा।

स्वर्गवासी दिनानाथ की यह कन्या उस समय कोल्हापुर के हंस परिवार में थी मा. विनायक के मार्गदर्शन में अपनी कलाप्रांत की गती वीधी उसने अभी अभी शुरु की थी। उसका मेरा परिचय ऐसा खूब उस समय नही हुआ था।

जवानी की रेल चली जाय रे , गाने के सीलसीले की वजह से पहचान। उस समय भी रेल में पहचान सी हुई। औपचारिक कोल्हापूर को रहने वाली यह लडकी गाणे के लिए फिर से मुंबई आ सकती है क्या। वह काम कारती है उस संस्था से उसे परमिशन मिलेगी क्या। यह सवाल मेरे मन में आये लेकिन वह भी ऐसे ही।

शहनाई के फेमस होने से मै बडा आदमी बन गया। रसिक जानियों के खतो का अंबार लगा। सिनेमा सृष्टीने कामयाबी और लक्ष्मी यह जडवा भाई है। मेरा भाव बढेगा ऐसा सभी मेरे स्वकीयो को लगने लगा। सी. रामचंद्र इस नाम की वजह से मद्रास के लोंगो को अभिमान लगने लगा। मराठी लोगों को यह पत्ता नही था कि हिन्दी सिनेमामे कामयाबी प्राप्त करने वाला संगितकार पुणतांबे के एक ब्राम्हण का लडका था। नाम का पैठन पुजनेवाला गोदावरी ने ही उसे नहलाया। चौदासौ जीये चांगदेव के परिसर में इसकी कला अंकुरिज हुई। महाराष्ट्रीय जनता की सोला सिनेमा में काम करने वाले महाराष्ट्रीय जनता की सोला सिनेमा में काम करने वाले मराठी आदमी को भी कुल गोम मराठी याद नही आ रही थी। मराठी के बकेट मे या तो चंद्रभागा का पानी ही आयेगा। रात में सतलज का प्रकाश और थेम्स का प्रतिबिंब कैसा आयेगा। और आने देगा कौन। दिया भी तो मराठी बाणा वह किसे पसंद आयेगा।

शहनाई के कामयाबी के बाद की बात प्रसिध्द नायक दिगदर्शक गजानन जागीरदार मुझे एक बार रस्ते में मिले।मै मिन्हर्व्हामे था।तब वह भी मिनर्व्हामें थे।स्नेह करने इतना मै उस समय बडा नही था। वह उस समयभी किर्तीमान थे।

मेरा चेहरा उन्हे पहचाना सा लगा।याद को उजागर करने के बाद मेरा सरनेम भी उनको याद आया। उन्होने कहां।

ठीक है मैने कहां।

फिलहाल क्या करते हो ,

म्युजिक और क्या।

करो करो कुछ नया करो हम मराठी आदमी उसी परिदी मे घुमते है।वह देखो कोई मद्रासी संगीत दिग्दर्शक आया है ,सभी व्यवसाय आश्चर्य में डाल दिया है उसने।

कौन है।

सी.रामचंद्र जागीदार गंभीरतासे बोले। मै हंसा नही। दिल लेकिन चलबिचल हुआ। जल्दी में थे जागीरदार नीकल गये।मै देखतेही रह गया। मेरामन बोलने लगा। सगे मां को कभी पता नही चला की तू क्या है। मातृभाषा को कैसा पता होगा तेरे कामयाबी का !

१९४७ साल का मध्य होगा। मेरे जीवन गाण में का गांधार बेमालूम लगा। कानो से भी देखने वाले रसिक बहुत खुश थे।मेरें नाम का बोलबाला पुरे देश में हुआ। आर्थिक स्थिती भी अब अच्छी थी। फिर मैने एक मोटर मोल ली। वैसे वो कोई नमी नही थी। वह सेकन्ड हॅंड थी। वाच्छा नामके फिल्मीस्थान में एक रेकॉर्डीस्ट थे। उन्होने मुझे बडे प्यार से बेची।उस गाडी के लिए मैने एक सारथी चून लिया।उस सारथी का पूर्वज चाणक्य क़ी नौकरी करता था। या नही नही जानता था। उसके अतुल शक्ति के कारण उसे शरण जाणा लाजमी था। उस मोटार को उसने बुध्दिमान किया या नही उसे ही मालूम।उस निर्जीव यंत्र ने एक रित पहले से स्विकारी थी। मै बैठा की वह बंद होती थी। वह अचानक रुक गयी।मेरा बुध्दिमान ड्रावव्हर कहता था साहब उतरिये। मै निचे उतरता था। वह चाक के पास होता था। गाडी के सामने वाले भाग को देखकर फिर यह कहता कि धक्का दिजीए पिछेसे।

चलेगी ? मैने अपने अंदाज मे कहा।

जरुर चलेगी व दृढता के साथ कहता था। मै पूरीताकत से उस गाडी को ढकेलता था। फिर उस गाडी में किसी प्रकार का तडतड करके आवाज आता था चक्रधन चक्का घुमाये सरिखा करता था। फिर गाडी चालू होती थी।व चालू तो होती थी लेकिन एक मैल जाने बाद फिर बंद गीर जाती।

इस वक्त मुझे और भी एक धनिकव्यक्ति के सम उद्योग जडॉ था।

घोडे के शरियत में जुआ खेलने का। इसलिए फिर रेस को जाने के लिए मै सारा बन्दोबस्त करता था अच्छे कपडो का सूट, प्रतिबींब दिखे ऐसा चमचमीन बूट, दुर्बीन, लेकिन मेरे इस बडे जाव को वह गाडी गंगा घाट पहुंचाती थी। उसे लोटते लोटते धम होती थी। आखीर उसके चक्रधर के स्वाधीन कर देता और भाडे के गाडी से रेस मैदान पर जा पहुंचता।

छ: महा तक वह गाडी मेरे पास थी। उस काल में मैने छंमील भी प्रवास किया की नही मालूम नही।आखीर मैने वह गाडी किसी अमीर आदमी को बेच दी। उस सारथी को भी कम किया।

नई गाडी लिया शेव्हरोलेट गाडी घर में आयी। वह दिन भी महत्व का था। मेरे "शहनाई" सिनेमा का रजन महो त्सव होने वाला था। उसी दिन वह आयी।

सुबह ही मै उस गाडी में बैठ गया अब ड्रायव्हर अच्छा मिला था। सभी रिश्तेदारों के यहां गया। उनकी शुभेच्छा स्विकार की। शाम को स्टुडिओ में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। बडी मेजवाणी होनी थी अभिनंदन पर भाषण होने वाले थे। कही भी न रुकने वाले गाडीसे मै स्टुडिओ में थोडा जल्दी ही पहुंच गया। जाने के बाद जो न्युज मिली वह भयानक थी।राष्ट्रपिता का खून हुआ। प्रार्थना जगह पर ही किसी अज्ञानों ने महापुरुष को मार डाला था।वह आदमी मराठी होने की चर्चा हो रही थी।

स्वागत के लिए आये सभी हिंदी भाषीक लोगों में मुझे अच्छा नही लग रहा था।भाषण का कार्यक्रम रद्य हो गया।मुझ‍ े पहनाने वाले हार मुझतक नही पहुंचे। नरवस हुआ और वापस चला आया।

मै रहता था अत्सल मराठी ऐरियामें। पर प्रांत के लोगों ने मुझे कुछ नही बोला। लेकिन मेरे भाईयों ने मेरे बारे में अफवाह फैला दी कि महात्मा का खून हुआ और यह सिनेमावाला खुषी मना रहा था। मस्त मेजवाणी खा रहा था। नई गाडी मीली।

स्वकीयों का यह प्रचार चारो तरफ हुआ शहनाई की काम याबी बाजार में आवज कर रही थी। नाम बोलते समय मुझे याद करना पडता था इतनी फिल्म मेरे पास आयी। पैसो का तो अंबार लगा था। दारु मदालसा, द्यूत इन सबको पिछे रखकर पैसो का आना मेरे घरतक पहुच गया। पैसा जमा हुआ घर में पैसे होने से न मालूम मुझे घर छोटा नजर आने लगा। मै बडी जगह के फिराग में था। एक जगह मोल मिल रही थी। बिलकुल शिवाजी पार्क के किनारे पर पक्की बिल्डींग। एक रुम उपर का खुद के लिए निवांत था। वह मैने मोल लेने का सोचा। मेरे इस इरादे को विरोध किया मेरे पत्नीने बेनने ,वह बोली बिल्डींग मोल लेनेकी कोई जरुरत नही।

मै चिल्लाया क्यो ?

उसकी अपेक्षा पैसे ही रहने दो।

क्यो ?

काम मे आयेगें।

किसके मेरे इस सवाल से अनुत्तरित हुई। वह भी हुई होगी। उसके गुस्से को मेरे कटु शब्दोने कारण दिया था। मै बेकार का ही चीढा हुआ था।बेन नही कह रही थी इसलिए मैने वह मकान लेनाही चाहिए ऐसा मन बना लिया था। उस घर मालक से लेन देन की बात हुई। और बेन और मेरे में रोज झगडे होने लगे। उसके

बारे में एक बात मुझमे छुपी हुई भी व याने उसकी दो अपत्य भगवान को प्यारी हो गयी थी। इस में उसके लिये आरोप था डाक्टर के मुताबिक मेरे और उसमें दूरता पैदा हुई। मै एक निष्ठ नही रहा था। जीन्दगी के उर्जीत काल में विवाह हुआ। शरीर सुख को नष्ट हो गयी मेरी भूख दुसरी ओर भटकने लगी। मैने एक नयी दोस्त की थी। शायद इसी वजह से उसकें दिल में जगह कर गयी होगी। उसने एक चमत्कारिक सुचना की। उसने कहां घर लेने का होगा तो लो लेकिन।

लेकिन क्या ? उससे बोलणा याने तीरच्छा व्यवहार ही मेरा रिवाज बन गया था।

वह तुम्हारे नाम पर मत लो ,

फिर मैने घुस्से से पुछा , तेरे नाम पर लू ? बेनने उत्तर नही दिया। लेकिन मैने उसके सुचना का आशय जान लिया था। वैसे उसमें उसका कोई स्वार्थ नही था। वह और मै इतना ही संसार का विस्तार था। अच्छे दिन आने से बुराई या भी अधिक सुचने लगी। यह अनर्थ है यह उस चतुर स्त्रीने पहचाना था। मै आज घर ले लूंगा और कैसी व्यसनाधिन होकर बेच दूंगा। इसका डर उसे लगता था। मैने कामयाबी प्याला पीया था। मै थोडा ही पिछे हटुंगा। मैने वह घर लिया। मेरे नामपर लिया। उसे जख्मी किया। कीसी कारण दु :खी किया। समाज में मुझे नया मान मिल रहा था। मुझपर श्रध्दा व्यक्त करने वाले सैकडो खत रोज आ रहे थे। बाहर से प्रेम का वर्षाव हो रहा था और ऐसे समय में ही मै मेरी पत्नी से झगड रहा था। नया घट लिया लेकीन घरवाली को ही दु:खी कर गया। जहा गया सो हो गया।

घर का ताबा मिला त मुझे बहुत ही आनंद मिला। कहां पुणतांबे। कहा कुबेर नगरी मुंबापुरी। कहा गोंद काठा का आडा तेडा बंधा हुआ पिताजी के पुर्वजो का घर। और कहा यह बडा बंगला। कया था और क्या हो गया। कहा थे और कहां पहूंच गये। बचपन का पुरा इतिहास याद आया। बेन से किया झगडा अच्छा नही लगा। मेरे में कॉ उतरणे लगा। यह इमारतं मैने मेरे पैसे से लिया। यह भावना कम होती दिखाई दी। व्दारकाभाई मशिद में माथे पर चिंधी बांधा हुआ बैठा बैरागी याद आने लगा। उसके तस्वीर के आगे का धूप और अगरबत्तीसे सुगंधीत हुआ था। उस स्नीग्ध धुवे से आंखो मे पानी आया। नये इमारत का नामकरण अरते समय मुझे लगा कि देह उसका दिया है। संभालने ,सजाने का गुण उसका। बाजार में बेन ना आ पाना। कामयाबी ,शोहरत उसी का प्रसाद है। भोगने का हमने उस बंगले को नाम दिया " साईप्रसाद "।

सिरडीको गया उसी समय मेरा मन भर आया था। मेरे सरिखे अंधे व्यक्ति को वहां कुछ दिखाई दिया। तब से मै कई बार शिरडी जाकर आया। हर वक्त नया दिलासा मुझे मिला। मां की ममता टूट गयी थी।
पत्नीका प्रेम कम हो रहा था। साईबाबा का आधार कमी कम नही हुआ। यह अपनी अपनी श्रध्दा का सवाल है। मै हिन्दु ब्राम्हण हूँ।
हिन्दु का और ब्राम्हण का स्वाभिमान मेरे में ह। साईबाबा मुसलमान थे ऐसा कहते ह। मुझे मालुम नही ,भगवान का धर्मीयोंने कई नाम दिये है। धर्म आदमी का होता है, भगवान के विशालता पर कहा लेप लगायेंगे। साधू को कोणसी जात और कौनसा धर्म।

जा न पुछो साधु की पुछ लीजीए ज्ञान , ऐसा कबीर ने कहा है, साईबाबा का बचपन मैने पडा है। ज्ञान बताने की जिद्द इसमें नही। मै तो कहूंगा ज्ञान पुछने की क्या जरुरत है।

भगवान सा हर भगवान का नाम धातु की मुर्ती में आया। मैने साईबाबा को कभी देखा नही। उनकी मुर्ती देखी है
उनकी जगह देखी है। मैने कुछ अनुभव किया।अंधत्व से देखा बहरे कानो से सुना मंतिमंद को एक अदृश्य आधार मिला।
मेरी श्रध्दा उनपर हो गयी। मै पुन्यवान को आधार नही चाहीए। वही दुनियाके आधारस्तंभ है। साईबाबा की श्रध्दा से साधु नाम दिया। श्रध्दा से दिये हुये नाम को भगवान का रुप मिला।

मैने मेरे लिए जितनी नीष्ठा करनी ती मैने उस मार्ग से की। खुद की कमाई से खरीदी मिये घर को साईप्रसाद नाम दिया।

घर को भगवान का नाम देने से शांतता थोडे ही होती है। खुद की वस्तू होने से आनंद के समय साधू का स्मरण पर विस्मरण को लाने के लिए कई कारण थे कामयाबी का उन्माद ,शौक का मोह था किसी भी कोई भी कारण से मेरी बढाई करणे वाले खुप मस्करे थे। उपभोग को ही सब कुछ समझने वाले मित्र थे।मेरा खुद का कमजोर स्वभाव था। घुस्सा था लोभ भी था। साईबाबा के नाम के नीचे रहकर भी झगडा होता था। बेन अपने मर्जी से खर को सजोया करती। आने जाने वाले का स्वागत मुस्कुराकर करती थी। मै चिडचिडा हो गया था।त्रस्त हो गया था, खुद कि भूल खुद को संवारते नही आ रही थी। दुसरे ने वह दिखाई तो मुझे बारबार पुछते थे। अण्णा बात क्या है।

मै क्या पत्थर कहने वाला था।

है कुछ ऐसी ही बात , इसलिए चुप हूं, वरना क्या बात करनी नही आती यह भी बोल नही सकता था।

मै अंदर के अंदर ही परेशान था। मै मेरे हाथो सें ही पेट को चिमटा ले रहा था। मेरे इस चून रहने के स्वभावसे मेरे दोस्त भी मस्त हो गये थे।

मुझे टालने लगे।

इस सारे अशुध्द एवें कठीन समय में मेरा मित्र भगवान ही मेरा तारणहार था। वह हमेशा मेरे साथ होता था। मै घर मे रहा तो घर

के ही सरीखा ही रहता था। मै बाहर जाने पर भी वह के काई दुसरा है उस को भी घर के समान कर डालता था।

समय एकदम कामयाबी का था, प्रेम में गीरणा सह शौक मेरे मन को पहलेसे ही था। मैने प्रेम कईबार किया खुद को उसमें नही झोका। खीचा गया और गीर गया , अभी भी वैसाही हुआ। एक लडकी ने मुझे पागल बना दिया , उसका मिलना मेरे लिए एक खास बात होती थी। बेन से प्रतारणा नही करना चाहता था। लेकिन प्रत्यक्ष में यह होई जाती थी। बेन को सह समभुता था। वह इस सभी दुखो को भूलने की कोशीश करती थी। अपना पत्नीत्व कायम रखने के लिए तत्पर थी। परिस्थिती आणीबाणी की थी। मुझमें लवचिकता नहीं आ रही थी। बेन तनाव को ढील दे रही थी। फिर भी मजाक पैदा होता था।

एक रात को मैने बेन से पूछा बेन मै जाकर आता हूँ।

उसने पूछा कहो

उसका तुझे क्या ?

आखा तयार है

भोजन करने के लिए जाता हूँ

कहाँ ?

चौपाटीपर

साथ में कौंन है!

भगवान और कौन

फिर वैसा पहले बेलने का ना , पूछो करके इतना चिडना क्यो? मैने गाडी लिया और निकल गया। भगवान यह देख रहा था।

मेरी और मेरे प्रेमिका की मुलाकत आज होने वाली थी। भगवान और मै उसके यहां गये। सारी रात अंगूर की बेटी में गुजारी। भगवान सो गया था। मैने चांदनी को पीया तृप्त हो गया। वह रात आखीर की रात न हो इतना मजा उठाया। सुबह हो गयी और उस सजणी को जाता हूँ कहने के सिवा कुछ नही था। भगवान सो रहा था। असे जगाया साथ में लिया और उसके घर छोड दिया।

सुबह की हवा लेता हुआ घर पहुंचा। बेन जाग रही थी रातकर नींद नही आयी थी। उस स्थिती में भी मुझे अच्छा नही लगा। असके और मेरे पवित्र रीस्ते ने मेरे बेहोशीका एहसास दिलाया। दारु की नशा उतरी नही थी। उपभोग का आनंद मुझे थोडा उचा ले गया था। बेन ने साधे स्वर में पुछा

कहां थे रातभर छ

सही कहूं -

मेरी कसम- बेन ने गृहीनी करती है ऐसा लोभस अभिनय किया और मुझे झूटा बोना आया नही। किसकके घर गया था मैने उसे सही - सही बता दिया। क्या किया वह उसने पुछा नही पुछती तो भी वह बात न बोलणे की इतनी सावधानता थी मुझमें।

सुबह मै स्नानगृह में गया और भगवान स्वामी आगये।

नमस्ते बेनजी उसने भाभीजी को नमस्ते किया।

नसस्कार बेन बोली चाय लोगे।

लेंगे अण्णा कहां है।

स्नान कर रहे है आई हं।

बेन ने ट्रे लाया। चाय डाला दुध-शक्कर मिक्स की तयार प्याला मेरे मित्र के हाथ में हाथ में दिया। उसके दिल में लगी बात को उसने सहज ही पुछ लिया।

च्कल खाने का कार्यक्रम कहां था।

मै अन्दी टब में लेटा था। टब में का पाणी थोडा गरम था। लेकिन मेरा सभी अंग जलने सरीखा लगा। बेन ने पूछा तो कया कहना यह भगवान को पटाया हुआ था। भगवान वह नाटक बराबर करने वाला था। और मैने सही प्रकार कबका बता चुका था।

भगवान भी उत्तर मेरे कानों मे आया।

कल बहुत मजा आया बेन सचमुच।

लेकिन कहां ?

चौपाटीपर चांदणी के प्रकाश में रेत में।

और खाना कहा से मंगवाया ?

सामने के होटल से ?

कोणसे ?

व्हेनीलीज भगवान ने कह दिया। बेन कुछ बोली नही। वह गम्मत जम्मत करते रहा। तब मेरे टब मे का पानी थंडा लग रहा था। मेरा मस्तक भी थंडा गार हो गया था।

बेन किचन में गया और बहुत समय के बाद वह आयी। भगवान को देखकर मुझे हसी आयी। मै जोर जोर से हसने लगा।

अरे हसता क्यो है खामख्वां।

मैने बेन को सही प्रकार बताया यह भगवान को कहा। तब वह झटके से उठा। उसने हाथ जोडे और पीठ घुमाकर भाग गया। वह एक माह तक हमारे घर में नही आया।

धन्दो का जोर तेजी में चल रहा था, फिर भी फिल्मीस्तान को नौकरी में छोड नही रहा था। विभूती मित्रा फिरसे फिल्मीस्तान में आया। उसके फिल्म के लिए तीन गाणो का तर्ज बनायी। यह उसे पसन्द आ गयी , चौथी का और उसका कुछ जम नही रहा था। दिग्दर्शक ने दिग्दर्शन करना यह ठीक है लेकिन इसका अर्थ यह नही कि मेरे सरीखे को भी अपने चाल से चलाये। ऐसा निश्चीत ही नही। मेरी और मीत्र की अनबन हो गयी। मुखर्जीने भी उसका ही पक्ष लिया , मुझे बाहरसे २५ बुलावे आये थे। फिल्मीस्थान को मैने रामराम किया। मुक्त हुआ। भगवान को कहा , भगवान यार तू क्या देमार - टाईप की पिक्चरे ही निकालता रहेगा।

तो तुम्हारी क्या राय है, भगवान ने पूछा.कभी तो ऐक सोशल पिक्चर बनाओ माता, भगवान ने एक ही शब्द में मान्यता देदी। लेकिन एक प्रश्न पूछा ?

वजह सह की मेरे नाम फायदा तू उठा सकेगा , अपने पिक्चर पर सी रामचंद्र का नाम कब आता है? हमारे लिए तो तू अन्नासाहेब चितलकर रहा है ना आजतक ?

अब से दूँगा सी रामचंद्र नाम।

तो यह रहा खडा, भगवान एक दम उत्साहित था। हमारा भगवान याने अवलिया। उसे कहानी लिखते आती है। संगित समझता है, पाश्चात्य के नृत्य भी करते आता है। अभिनय आता है , दिग्दर्शन आता है। अष्टपैलू रुप है उसका, उसने अलबेला नाम की कहानी लीखी। मैने भी पिछे नही हारा , कवी राजेंद्र कृष्ण मेरा अच्छा दोस्त हो गया था। हिन्दी सिनेमा मैं उसके नाम को कालीदास की किमत आयी था। ,शहनाई के जरिये लता मंगेशकर का स्वर सभी तरफ गुंज रहा था। कानों की दृष्ट लगनी और ओठो की फसगत होना अैसा मीठा स्वर उसके आवाज में था उसी के ओठों में कुंठीत वह दर्दभरा स्वर अब सिनेमा के धंधे में गुंजरहा था। हवा ने उसके आवाज को जरतारी के पेहराव को पहनकर शायद व्रत ही लिया था। मेरी बहुत सी रचना हो गया था। भगवान के सिनेमा के लिए हमारा त्रीमुर्ती का गट इकठठा आये।

जीस समय भगवान का यह सिनेमा प्रदर्शन हुआ तब उसको बहुत लोकप्रियता मिली। खूद भगवान उस सिनेमा का नायक था। स्टंट सिनेमा का हि दीग्दर्शक रहे हुये यह सिनेमा संगित की लोप्रियता को पार कर गया।

धिरे से आजा रे अखियन में निदींया, आ ना रे आजा

इस गित को लाखो लागों ने गाया, सिनेमा में एखाद अंगाई गीत रखने की फॅशन सिनेमा में एखाद एखाद अंगाई गीत रखने की फशन सिनेमा व्यवसाय में होने लगी। सायगल के सो जा राजकुमारी के बाद अमर्याद लोकप्रिय हो गये कि अंगाई गीत है।

घर के आनंद की आवशकता महसुस न हो इतना आनंद मेरे तन मन पर बाहर से बरसता था। राजेंद्र कृष्ण और लता मंगेशकर इनका मिला हुआ प्रेम यह बहूत ही मायने रखता है। हम साथ मैं ही रहते थे। घर यह केवल कुछ पल के लिये बस्ती हुई थी। उस थोडे से पल में ही अनजानी व्यक्ती मेरे जीवन में आयी।

गोरा सा रंग , मध्य उचाई , शुध्द खादी पेहराव। बोलना स्पष्ट , मीठा , रहते का दंग सुसंस्कृत सा बोलते समय दोनों ओठ आगे करने की प्यार की लकब। आदमी बहुत होशियार लगा उसने खुद होकर अपना नाम बताया, मै पू. रा. भिडे मै बाहर जाने के इरादे ये था। उस समय मेरे पांव घर में ठहरते नही थ`। भीडे ने कोई तो भी योजना लायी थी। उसने वह योजना लायी थी , उसने वह योजना इतनी अच्छी तरह पेश कियाकी मै प्रभावीत हो गया। भारत के सुविख्यात शास्त्रीय गायको की गायकी ध्वनीमुद्रीत कर उसको चित्रीत करने की योजना थी। सोला मिली मोटर्स की फिल्म बताने की उनकी मनीषा या उसके लिए वह एक संस्था बना रहे थे। उससंस्था के कार्य में भी सामील हूं। ऐयी उनकी बिनती थी , न कहने के सरीखा कुछ भी नही था। शास्त्रीय संगीत से मुझे लगाव था। संगीत से उद्योग सेही मैं इतना बढा हो गया था।

उस संगितकला के लिए कुछ अच्छा कर सके ये मेरा काम था। वह समय नीकाल कर मेरे पास आये थे। भिडे भला आदमी दिखता था, उन्होने एक बडे काम को लिया था। मैने एक सुचना धीरे रे दी लताबाई इस योजना में सहकार्य करती होतो बहुत अच्छा रहेगा। कोई बिचार न करते हुये मैने उनसे कहा, यह भी आयेगी भीडे के इस कामपर मैने बहुत खयाल दिया खुद को एक हजार रुपये उन्हे दे डाला। लता के बिनती की आपकी मदत चाहीए। आपके पिताजी शास्त्रीय संगितकार थे। अगर आप कहते है तो को एतराज नही।

लताने भी एक हजार रुपये संस्था को दिये , ओमप्रकाश इस विनोदि नायक को भी एक हजार रुपये देने को कहा। संस्था खोली गयी। पदावलीके नामावली का शुभारंभ हुआ।

अध्यक्ष - लता मंगेशकर

सेक्रेटरी - सी. रामचंद्र आणि पु. रा. भिडे

लता का आवाज तो दूर-दूर तक फैला था। उसका प्रत्यक्ष दर्शन परदेपर आना चाहिए थे। यह भीडे की इच्छा थी।कार्य को प्रारंभ हुआ। हम हमारे उद्योग में थे। भिडे अपने उद्योग में गडबड में आते और मेरी सही लेकर चले जाते। लता की भी सही लेत थे। वह कहता , अपनी मिटींग्स की मिनीट्स है। मै काहे का पढता। सही करते गया। उसमें की एक सही मुझपर उलटी लता को भी बहुत मनस्ताप सहन करना पडा। वह प्रकरण योग्य समय में आयेगा।

भिडे के संस्था के आगे पिछे हमने हमारी भी एक संस्था निकाली। सिनेमा निर्माण करने वाली संस्था। ओमप्रकाश उसका भाई और मै तीन जण उसके भागीदार थे।

संस्था का नाम रखा साई प्रॉडक्शन : थोडे ही दिनों में समझ में आया कि यह नाम किसी लोभी संस्था ने लिया है। फिर हमने पागल की तरह न्यू साई अैसा नाम रख़ा। हमने प्रथम सिनेमा करने का सोचा उसका नाम था झांझर।

झांझर सिनेमा में मैने मेरे पास का अधिक पैसा नही लगाया था । लेकिन उस सिनेमाका संगित उच्च प्रति का हो इसके लिए मैने बहुत परिश्रम लिए । उस सिनेमा में आयोजित तर्ज सुंन्दर हो इसलिए मैन ताकत लगाई । अन्य और भी सीनेमा का संगीत नियोजन उस समय मै कर रहा था । उस सभी सिनेमा के निर्माताओं को " झांजर " के बारे में आकर्षण पैदा करने के लिए मैने बहुत " झांजर" के काम की ओर ख्याल दिया । फिल्मस्तान का " अनारकली " नाम का सिनेमा उस समय मै कर रहा था । भालजी पेंढारकर का " शिवाजी " का संगीत भी मेरे तरफ था । शिवाजी के निमीत्त से कोल्हापुर को बार-बार जाना पडता था ।

एक बार ऐसे ही कोल्हापुर में था । फिल्मीस्थान की एक नोटीस वहां आयी । उस नोटीस में मुझपर स्पष्ट आरोप किया था कि उनके काम की और मै भी ज्यानबुझकर ख़याल नही दे रहा हूँ । मैने मेरा लक्ष झांझर पर केन्द्रीत किया था ऐसा नही था लेकिन सबसे अधिक लक्ष उस सिनेमा के संगीत पर था । यह बराबर है । बीच में क्या हुआ यह कह नही सकता । " झाँझर" यह सीनेमा प्रकाशित हकुआ और सपशेल गीर गया । मैने हिरो की भूमिका कीया हुआ " नागानंद" सिनेमा की अवस्था हुई थी । वही अवस्था मैने निर्माण की हुई सिनेमा की भी हुई । विशेषत: यह की " अनारकली" ने कामयाबी हासील की । टीकाकार और विरोधी तथा प्रेक्षक कहने लगे । इस सिनेमा का पूरा श्रेय संगीत को जाता है । जीस सिनेमा के संगीत योजना की ओर मे ख्याल नही है ऐसी निर्माताने मुझको नोटीस दी भी । वह सीनेमा ७ मेरे संगित की वजहसे से ही चला था। चला ही नही तो बहुत चला , है कि नही मजाक।

इस अनारकली मैं एक गाणा था। जमाना यह समभोकी हम पीके आये , यह गाणा निर्माता दिग्दर्शक उसके सहकारी , चाहते खुषमस्करो को किसीको पसन्द नही आया था। वह गाणा सिनेमा से निकाल देना चाहिए उन्हे लगता था। भगवान की कृपा की यह गाणा उस सिनेमा में रखा गया। और वही बहुत लोक प्रिय हूआ । प्रेक्षक और इश्वर किसी को मालूम नही हुआ ये कहते है यह भूठा नही है।

इस सिनेमा के गाणे के बारे में एक किस्सा कहते आयेगा। यह जिन्दगी उसी की है, इस गाणे की तर्ज सभी को नई लगी। बहुतही अच्छी लगी , वह गाणा बहुत फेमस हुआ। लेकिन उस गाणे की तर्ज नई नहीं थी।

" शारदा" नाटक में की मूर्तीमंत डर मेरे सामने था। यह लाईन मैने तर्ज की तौर पर इस्तेमाल किया । मूख्य गाणे कि शब्द हिन्दी के नही थे, इसलिए वह गाणा श्रोता औ को नया भी लगा। अप्रतिम लगा।

अनारकली के काबीलीयत से मेरा भाव और बढा , " झाँझर " का काटा मेरे पैर मे टूटा या वह याद भी मुझे नही रही । मेरा यश आगे निकला। इस झांझर सिनेमा के प्रकाशक के वक्त मै इस झांझर सिनेमा के प्रकाशक के वक्त मै अमृतसर गया था। लता मेरे साथ थी ,उसकी और सुप्रसिध्द गायिका नूरजहा इनकी दोस्ती थी। लता ने अमृतसर से उसे फोन किया, वह फोन पर आयी पाकिस्तान में रहने वाली एक बडी गायीका और भारत में रहने वाली उतनी ही गायीका इनका सुख़द संवाद शुरु हुआ । उस संवाद के सभी शब्द मुझे याद आते तो मैं लिख़ डालता । वह शब्द मुझे याद आते तो मैं लिख़ डालता। वह शब्द मुझे याद नही पर , लता के उत्तर से सवाल पहचान लेता था।

मेरे सरिख़े मिडल व्यक्ती की आखें भी उन दो दोस्तो का सुख़ संवाद सुनते समय रो रही थी । आख़िर उन दोनों के संवाद ख़तम हुये। शब्द भी ख़त्म हो गये।यह इधर से किसी राग को छेडते वह उधर से अपना राग अलापते। कितनी देर तक यह चलतरा रहा, फोन पर भाषण भी कितना तो तीन मिनीट ,चार मिनीट छे मिनीट बहुत ही हुआ तो बारा मिनीट , बहुत समय हुआ तो भी उस गंधर्व कन्या का संवाद ख़त्म होने का नाम ही नही ले रहा था। टेलिफोन ऑपरेटर उन्हे रोक ने भी हिम्म नही करता था।

उन्हे अनायास ही यहजुगल बंदी सुंनने को मिली थी , वह क्यो रोकेगे।

भारत के दो तुकडे हुये । सदीयो से एकसाथ रहने वाले हिन्दु - मुसलमान न अलग अलग विचार से मुक्त हो गये। निर्वासित नामक एक नया लोक समुदाय उत्पन्न हुआ । धार्मीक स्थिती गंभीर हुई। राजकीय कटुता के दो शत्रु सामने - सामने खडे किये। बटवारे में जो हत्याकांड हुआ उसे क्या नाम

देना चाहिए किसी को सुझता नही था, उन दोनो की मुलाकात के मुल्यवान स्वर उत्तर के फलो के समान कितनी देर तक अपने कान में रखा था।

लता ने फोन रखा और मुझे कहां राम उपने को जाना है ।

कहाँ ।

दावत पर ।

किसके यहां ,

नूरजहां के यहां

लाहौर ?

जी ।

पाकीस्तान में

ना पाकिस्तान में जाना याने फासपोर्ट वगैरे भी चाहिए फिर ?

वह कहती थी हम नो मॅन्स लँडपर मिले और सही में लता और नूरजहाँ एक स्वतंत्र भूखंडपर मिले । उस जगह पर किसी का भी अधिकार नही था । अमृतसर से आगे तीस पैतीस मील पर कही तो भी वह जगह थी । भारत और पाकिस्तान इन दोन्हो देशो की सिमाए एक दुसरे को देखती थी उस जगह दोनो एक दुसरे के सामने खडे थे । बीच में एक जमीन का छोटा सा तुकडा था । एक पेड था । थोडी हरयाली थी । नुरजहाँ की गाडी पाक सिमा के अन्दर खडी रही हमारी गाडी भारतीय सीमा के अन्दर खडी रही ।

वह दो गायिका उस मुक्त भूभाग पर एक दुसरे को मिले। उन्दोने उक एक दुसरे को उलींगन किया । धर्म , दरेश , जाती , पंथ इसमेंसे कीसी को भी उस आनंद के सण में किसीको प्रवेश नही था । कलाकारो को यह सभी गौण था । वह दो कलाकारो की मुलाकात थी । दो मैत्री सहेलियों की मुलाकात थी ।

दो कला के दिवानो की मुलाकात थी। वह मुलाकात देखकर दोनो देश के सिमा रक्षक का दिल भर आया । भारतीयों के आंखो मे आंसु आये। उन दोनो आंसुओ की जात एक ही थी। धर्म एक था, आकाश एक था, भुमी एक थी।

वह प्रसंग मै जनम भर कभी नही भुंल सकता। वहां की हरियाली में हमने वनभोजन किया। नुरजहां के साथ उनके पती थे। ओर कुछ सगेसंबंधी थे। उन्होने जानबुझकर मुसलमानी पदार्थ तयार करके लाये थे। वह पदार्थ नुरजहांबाई ने लता को अपने हांथो से खिलाया। लताने भी वह खाया। वह प्रसंग बहुत ही अवर्णनीय था। कला को प्रान्त नही, कला को धर्म नही, जात नही, गोत्र नही। कला याने प्रेम, अनुराग, कलाकारो का मन ही कला के समान विशाल हुआ तो।

मेरी जिंदगी में मैने जो कुछ भी मनोहारी दृश्य देंखे उसमें नुरजहां और लता इनके प्रेम भेट का दृश्य सभी दृश्यो में अधिक मनोहर था। सुन्दर था। धर्म से मुसलमान होकर एक समउद्योगी से लता ने इतना प्यार जोडा था । और मै -

मेरी मां मुझसे दुर थी। मुझमें और उसमे एक तप का अबोला था। वह खत्म करने का प्रयत्न लताने किया था। मुझे लगता है भगवान का अलबेला सिनेमा के उद्घाटन के लिये मै भगवान, लता हम तिनो पुना आये थे। मां उस समय पुना में थी। मेरा बडा भाई नाना भी पुना में था। मै उन्हे कभी भी नही मिलता था। पुना के उस मुकाम में लता को ही एकाएक याद आयी। उसने मुझे पुंछा, 'राम' तुम्हारी मां रहती है ना यहा?

ऐसा लगता है।

लगता है तुझे मालूम नही।

मेरा उसका पटता नही।

क्यों?

मैने कई बाते बताई। मेरे जनम के वक्त मां ने जो कहा वह सब उसके कान पर डाला। वह हंसकर बोली, यह कुछ भी हुआ फिर भी वह तुम्हारी मां है। तुझे यह दुनिया दिखी वह उनके जरीयें ही।

मै भावनावश हुवा। जनम देनेवाली मां को अलग रखने में अपने ही हांथो अन्याय हुवा ऐसा मुझे दिल से लगा। मेरी मुद्रा गीर गयी। फिर भी वह बोली, अप्पन जायेंगे उनकी ओर। मै नही न बोल सका। नाना का पता लगाकर उनके घर गये। कई साल बाद मैने मां को नमस्कार किया था। वह भी प्रभावीत हुई। उसका दिल भर आया। बहुत बोलना हुवा। मां-पुत्र का व्देष दुर हुवा। फिर मै मां के लिए कुछ पैसे भेजने लगा। दिल का एक कोना मुक्त हुये सरीखा लगने लगा।

लताने हमारे बीच प्यार का सलीका लाया। वह मुझे याद आया। और कलाकार सामान्य लोंगो से विशाल मन का होगा तो यह मेरे ही सवाल को जवाब भी मिला।

१९५२ का साल। अगस्त या सितम्बर माह होगा। मेरे साई प्रसाद में रहनेवाले श्री पटनी इनके यहां एक मेहमान आये थे। पटनी ने उनका मेरा परिचय करा दिया। वह व्यक्ती व्यापारी थे। उन्होने सारी दुनिया घुम ली थी। अभी भी वह इंग्लंड या अमेरिका जानेवाले थे।

उनका नाम उदय गांधी था।

आप कभी परदेश गये ही नही क्या? उस मेहमान ने पुंछा।

मैने नही कहा।

क्यों? मेहमान ने पुंछा।

मै क्या जबाब देता। मै विदेश में क्यों नही गया इसका कारण भी मुझे कहां मालुम था।

तुम्हारे सरीखे ने जाना चाहीए। इतना पैसा कमाते हो। तो सैर करने में थोडा खर्च करो। देश विदेश का संगीत सुनोगे तो तुम्हारे संगीत में भी बढोती होगी।

मेहमान का कहना झुठा नही था। अप्पन भी सै के लिए विदेश में जाना चाहीए ऐसा लगने लगा। मै किसी की भी सुननेवाला हुं यह देखकर मेहमान फिर मेरा बहुत ही बौध्दीक लिया। किसी ने मुझे बहुत बडी बात कही। यह जल्दी पट जाये ऐसी मेरी मनोवृत्ती थी। मैने उनके पास प्रतिज्ञा ही कर डाली की मै विदेश की सैर को जाऊंगा।

इसी समय किसी काम से श्री पु।रा।भिडे मेरे यहां आये। वह जैसे व्यवहार में निपुण थे वैसे साहित्यकार थे। तत्वचिंतक थे। वैसे हस्तरेखा चिकीत्सक और ज्योतिषी भी थे। मैने मेरा हाथ उनके सामने किया और पुंछा, विदेश दौरे का योग है क्या बताओं।

भिडे ने हमेशा की तरह गंभीरता से मेरा हाथ देखा। रेखाओं का अंदाज लिया। और बडे कठीनता से बोले इस हाथ पर विदेश दौरे का योग नही है।

मै छोटे लडके सरीखा जिद्द पर अडा रहा। भाग्य ने मुझे बहुत भयभीत कर दिया था। उसी के शरीर पर पान खाकर पिचकारी माने का दिल हुआ। मै भगवान के यहां गया और उसको बताया।

भगवान हम फॉरे जायेंगे।

फॉरेन?

हां हां।

क्यों?

युं ही।

युं ही, ये क़ोई कारण हुआ क्या? लेकिन भगवान को वह जवाब समझ गया था। वह बोला, जायेंगे तो जायेंगे।

पहले कहां जायें यह भी एक सवाल ही था। फिर मै उस पटनी चाचा के उस दोस्त की ओंर गया। उसने सुझाया जपान।

हो गया, मै और भगवाम ने जपान जाने का तय किया। पापोर्ट मिलने का उद्योग शुरु हुआ। अखबारो में खबर आयी और नजाने क्यों हमे मेजवानी पर मेजवानी होने लगी। हम क्या किसी सांस्कृतीक संस्था के प्रतिनिधी के रुप में जा रहे थे की भारतीय संगीत का परचम ले जा रहे थे। वैसा कुछ भी नही था। सिनेमा के उत्सव प्रिय दोस्तो ने हमे जाने के पहले मेजवानी दी, दारु पिलाई, हार गले में डाले। पासपोर्ट भी मिल गया।

२ अक्तुंबर १९५२ इस दिन हमने हवाई जहाज से मुंबई छोडी। महात्मा गांधी का जन्मदिन था। उस दिन। हमारा हवाई जहाज कलकत्ता पहुंचा। और हम वही अटक गये। आगे का हवाई जहाज चार दिन मिला नही। भगवान कलकत्ता से परेशान हुवा। मै दिल में बोला, भिडे का भविष्य सही उतरा। भगवान ने कहां, अण्णाजी, बस हो गया टुर, चलो बंबई जाएंगे।

नही भगवान.

क्यो ? क्या हर्ज है।

अरे जिन्होने हमें पार्टी दी हम विदेश में जा रहे इसलिए वे मारेंगे यहा से वापस गये तो।

भगवान को मेरा कहना जच गया । और सींगपूर जाने वाला हवाई जहाज पाचवे दिन छुटा ।

इस हवाई जहाज के सैर में एक वाक्य बारबार हो रहा था । भगवान ख्रूप दारु पिता था। और सो जाता था , वह घोर रहा था, उसे नींद भी जल्दी आती थी । बोलते बालते ही उसने घोरना शूरु किया ।

हवाईजहाज में देश विदेश के लोग थे । भगवान की इस हरकत से हसी आती थी । भगवान जग गया और उसका घारना बंद हो गया , तो यह लोग उसकी और देखकर हसते थे । भगवान भी जवाब के ख्रातीर हसता था। मुझे वह चमत्कारिक लगता था।

तू हसता क्यो हैं। एक बार मैने पूछा भी तो क्या करु ? भगवान ने कहा

उसके इस जवाब को क्यो उत्तर दू मुढो कुछ सुभु नही रहा था। भगवान का अंग्रेजी का ज्ञान थोडासा आनस में उसकी अंग्रजी समभु लेने की काशिश होती थी । देश छोडनेपर उसका अंग्रेजी , जो उसके गले में जा बैठा । वह शायद ही गाहरा निकला , दारु के नशे में तो फाडफाड अंग्रजी बोलता था। वह फिर सही हो या गलत , वह मुझे कभी समभु नही। कारण मै उस समय पीने की अवस्था में ही था। ऐसे स्थिती में एक रात को उस सुर्योदय के देश में पहुचें । एक टोकियो शहर में पावने दों महीने रहे।

जपान देश धुमकर कभी देखा नही। एकबार फुजीयामा पर्वत के आसपास एक गरम झरने को देखने गये थे उतना ही। बाकी सभी समय टोकीयो शहर में बिताया । मनमुराद दारु पी निशागार खील उठी। गैशांची मेजवानी की नाच देखा , गाणा सुना, मजा किया।

टोकियो के पास नीको नाम का गाव है। वह उसके देवल के लिये (पगोडा) प्रसिध्द है। आजूबाजू मे सुंदर जंगल है दो तीन घंटे की सैर करके वहा पहुंच गये। मंदीर की जगह बहुत बडी , बडा आंगण और सभीकुछ स्वच्छ रखा हुआ । उस जगह वून्डेड सोल्जर्स भीक मांगते हुये देखा। एक अंधा, एक लंगडा , और एक अपंग गले में पटटी थी। " हेल्प अस , वुई आर वून्डेड इन द वॉर " । मै और भगवान हम १० येन्स निकाले और उस भिकारी की पेटी में डालतें थे। इतने मे चार पाच जपानी युवा वहा आये और बोले " डोन्ट पे देम एनिथींग सर। दीज फीलोज , दे डोन्ट वान्ट टू वर्क । वइफ हॅव वर्क् फॉर ऑल "। सही में हमें शर्म आयी उन्हे पैसे देने में ।

वापस आते समय फिलीपाइन्स मेका मनिला हवाई अडडे पर हमें थोडा रुकना पडा । हवाई जहाज बदलने का था और उसे चार पांच घंटे टाईमिया। हमारे पास अमेरिकन डॉलर्स बहुत थे । मैने भगवान को कहा।

चलो भगवान शहर में जाकर आयेंगे ।

भगवान ने कहा , रात का समय था।

हम मनिला में गये।

हमारा सारा सामान हवाई अड्डे पर ही था । कुछ जोखीम की चीजे साथ में थी । मैने एक वाघ जपान में खरेदी किया । वह मै साथ लिया था और भी कुछ वस्तुये थी । दारु की नशे में हम वह वस्तु भुले नही । सभी सामान लेकर हम हवाई अड्डे पर आ गये । हमारा अवतार बहुतही गजब का दिखता था । फेरीवाले के समान शरीरपर सब सामान था । शरीर की हलचल हो रही थी ।

उस हवाई अड्डे पर स्नानगृह के समान खोलीयों की लाईन लगी थी । हवाई अड्डे की ओर जानेवाला रस्ता उस लाईन सेही जाता था । सारी दुनिया अपने मिलकीयत की है ऐसा समझकर । हम निश्चीत लुढकते जा रहे थे । चलते चलते बोलते थे । मै सामने चलता या भगवान मेरे पिछे पिछे आता था । भगवान बोलता था अन्ना बोलो यार फॉरेन मे ट्रेव्हल करने में एक चीज बहुत जरुरी है ।

कौनसी ?

जबान, अंग्रेजी अच्छी होनी चाहिए । मै बिलकुल अनपढ महसूस करने लगा हूँ ।

ऐसा कुछ नही , मैने एम । ए । पास की है । आदत की बात है । बोलते रहने से बोली आजाती है । सुनो भगवान ? पिछेसे आवाज नही आया । भगवान चलते चलते रुक गया । किसलिये रुका मैने पिछे मुडकर देखा । भगवान था ही नही । अभी था और एकदम गायब । यह गया कहां । पागल के समान मैने चारो दिशा में देखा । दूरतक आदमी दिखते थे । लेकिन भगवान इतने दूर जायेगा ही कैसा वह तो मेरे पिछे था । अभीतक था।

दारु की नशा में मुझे जमाई आने लगी । मैने घूमलिया । अपनी राह से उलट चलने लगा । उस लाईन में खडी हूई खोलियों में दिये मल रहे है मुझे लगा । दिमाग में प्रकाश गीरा । जलपान के बाद ऐसा होता है । आदमीको बारबार स्नानगृह की ओर जाना पडता है । खुद भी अवस्था को खेखकर चार आठ कदम आगे बढा । एक रुममें से पहचान की आवाज आयी ।

नो ,नो ,नो ,नो ,नो , सर

आवाज भगवान का ही था । यहां इस जगह किससे बोल रहा है । मेरा मस्तीख्र फिरसे घूमने लगा । शरीरपर का बोझ ठीक करते हुये जल्दीसे सामने आया । और उस स्नानगृह का दरवाजा खोला । अंदर का वातावरण देख्रकर मेरी दारु उतर गयी ।

एक फिल्मलाईन अधिकारी के सामने भगवान हाथ उपर कर खडा था । उस अधिकारी का हाथ पिस्तुल पर था ।

व्हॉट्स द मॅअर मैने बोला । मैने उस अधिकारी को कहां ।

हम दोनो भारतीय है । थेट के प्रवासी है टोकीयो से निकले है । मुंबई मे जाने वाले है । उस अधिकारी ने पीस्तुलपर का हाथ नीचे लिया । मुझे उद्देश कर बोला मै इस इन्सान को बार-बार पुछता हूँ कि तूम थेट के प्रवासी हो क्या ?तो यह व्यक्ति केवल नही , नही , हां , हा ऐसाही जवाब देता है ।

फिर मेरे ख्याल में आया कि अंग्रेजी भाषा के भयसे पछाडने के कारण , भगवान चलविचल हो गया था । YES के बदले NO , NO के बदले नतक कहता था । मेने उस अधिकारी को सब समझाकर बताया फिर उसने कहां की अमेरीकन डॉलर बहूत खर्च किये है तुमने । यहां के उतारु को इतने डॉलर्स नही रख्रते आता है । तुम हवाई जहाज बदलकर जाते हो तो सवाल ही नही ।

मै और भगवान कुछ समयबाद भारत भूमिपर आये । फिर से अपने काम में लग गये ।

इतना लंबा सफर कर धड अंगसे वापस आया करके पुना गया । मां को मिला । भाई की मुलाकात ली । मुलाकात के खुषी का समय जाने के बाद मेरे प्यार करने वाले व्यक्ति ने बडी चिन्ता व्यक्त कर स्वर में बोला एक धोके का इशारा दिया । राम संभाल । मुंबई में तेरे विषय में कारस्थान चल रहा है । तुझपर विष प्रयोग भी हो सकता है ।

विष प्रयोग ? मै दचक गया । बहुत ही अचंभीत हुआ । मैने किसी का क्या बुरा किया है माने किसीने भी मेरी जान लेने तक आना ?

मुंबई के घर मे मालूम पडा । मुझे वहा इशारा दिया गया । संभालकर पुना में तुम पर विष प्रयोग हो सकता है ।

कोण कहता है । मै बडे जोर से बोला । उस चिल्लाने को जवाब मिला । एक जोतीषी आया था । उसने कुंडली देखी और भविष्य कहा ।मै ने सीर पर हाथ रख दिया । आरोलकर ने किया भविष्य सच साबीत होते जा रहा था । उस महार जोगी की शापवाणी फलते हुये नजर आ रही थी ।

प्रगतीशील दुनियाने अविश्वनीय कहकर फेकी हुई बात , मेरे प्रत्यक्ष सामने आयी थी । लेकिन यह विष प्रयोग कल्पनि बाते है ऐसा लगने लगा । पुणा घर विष प्रयोग की जगह करके मुंबई का अहसास दिलाता था । मुंबई का घर उसी घटना का मुकर्रर जगह करके पुणा में उंगली रखते थे । एक घर मां, भाई इनका और दुसरा पत्नी का । इन दोनो घरो को एक दुसरे से कितना प्यार था । यही इस भविष्य ने उजागर किया ।मुझपर विषप्रयोग किसी ने किया हि नही था । सारा वातावरण ही विषमय हो गया था ।

घर का वातावरण इतना दुषीत होणे के बावजूद भी मै अपना काम बडे जारो से कर रहा था । नये - नये प्रयोग कर रहा था । कामयाबी हासील कर रहा था । इस समय तक मैने सत्तर सिनेमा का संगित दिया था ।

एक बात सही है कि सार्वजनिक कार्यक्रम को जाने का टाल रहा था । सिनेमा व्यवसाय में खान पान के अनेक प्रसंग आते थे । उसकी ओर दुर्लक्ष करने काही मन मैने बना दिया था । ऐसे कार्यक्रम को गया तो कोई मतसम से तो कोई मेरे घर के हाल पुछता । मुझे वह नही होना था । घर की समस्या का विचार मेरे दिल में न आये इसलिए मै मद्यपान करने लगा । सिनेमा क्षेत्र में काम करने वाले ने इसका गलत अर्थ लगाया । ने कहने लगे सी । रामचंद्र बडा है । गर्विष्ठ है । सी । रामचंद्र का क्या हो गया था वही जाने । ऐसी स्थितीमे सुबह सुबह श्री पु । रा । भिडे एक बिलीफ को लेकर मेरे घर आये । उन्होने मेरे और लता मंगेशकर पर दो लाख का दावा किया था । इतनी बडी रक्कम भिडे को देंनी थी । उस दावे का पचीपढा और पसीना आ गया । मैने भिडे को दो लाख रुपये देना याने क्यो और किस चिज के । उस लता मंगेशकर के हाथ भी मैने मेरे साथ गूंथ लिये थे ।

न्यायालयकी और मेरी नजरा नजर भी इसके पूर्व कभी हुई नही थी । भिडे ने आवश्यक कर डाली । अस पू । रा । भिडे ने एक संस्था निकाली थी । शास्त्रीय गायक गायिका के संगित विषेतांओ का सचित्र संरक्षण , यह उस संस्था का उद्येश था । भिडे की यह योजना मुझे अच्छी लगी थी । लता को मैने ही इस संस्था का अध्यक्ष होने के लिए कहा था । संस्था के सदस्य केवल चार थे । श्री । पू । रा । भीडे उसकी पत्नी भी और लता , पहले - पहले श्री आबासाहेब मुजुयदारांचे नाम इस यादी में था । लेकिन वह कभी आगे नही आया । भिडे का कहना था की सभा के लिए पुणा से हमेशा आणा जमेगा नही । आबासाहब का नाम मैने बहुत बार सुना था । उनका संगित का ज्ञान भी बहुत था । उनके सरिखे व्यक्ती इस संस्था में होना आवश्यक था । आबासाहब नही आये थे ।

लता अध्यक्ष , पु . रा . भिडे संयुक्त सेक्रेटरी , सौ । भीडे सदस्य , इतनी वह संस्था थी । मै हमेशा काम में रहने वाला , पु. रा. भिडे कभी मुझे घर में मिलते, कभी स्टुडीओं में आ जाते थे । संस्था के मिटींग के गोषवारे पर मेरी सही ले जाते थे ।

वह गोषवारा या पत्र व्यवहार ....

स्वर की वजह से बहुत मीठा लगता था । मै और जाणी ने ऐसी गीत बहुत सुने कुछ की सुर को लिपीबद्य किया ।

इटली देश प्रथम । वहा बतिकान को गये । पोप का वह ऐश्वर्य देखा । उसका दरबार देखा । उसके रंगीन पोषाक से मै आकर्षित हुआ इस देश के पुतले थे । ऊंचे भाव पढ सकते है इतने आकर्षित ।

इटली के नाजीशाह मुसोलिनी को जीस जगह मारा गया वह जगह देखी । वह कैसा भागा ? लोगो ने उसका शव एखाद हिंस्य पशु के समान पेड को लटकाकर रख दिया था । वह पेड भी देखा । मुसोलोनी के अंतीम अणो का देखकर गला सुख सा गया था । सुखे हुये मस्तीक्ष में कई बिचार आये ।

लोकप्रियता याने लोकप्रियता तो भी आखीर क्या ? जीन लागो के लिए अपना जीवन समप्रित किया उस मुसोलीनी का खात्मा उन्होने ही किया । उसके भी कोई सगे होगे । वे उसके अंतिम समय में काम आये क्या । किसी विचार से मैं अस्वस्थ हुआ । सही कहा जाये तो मैं रोया । मेरे विषय में विषप्रयोग की बात यही मुझे सलाने लगी । ज्वाला मुखी ने बेचिराख किया हुआ पापे नगर देखा । उस समय भी कलजा फट गया । अच्छा खासा घर बरबाद होता है ऐसा लगा । व्हेनिस नगर भी देखा । लेकिन अस्वच्छ शहर देखा । उस नगर के रास्ते याने पाणी का प्रवाह , बोट से ही घूमना इतनी दुर्गंधी आती है । वह नजर न देखते ही लगा की कीतना घीनौता है ।

इस देश में अंग्रेजी न होने की वजह से हमें कैसा तो भी लगता था । एक बात बताता हूँ हम एक होटल में रुके वहा खान खाने के लीए मुकर्रर जगह पर जाते थे । हर समय टैक्सी के बील अलग - अलग देने पडे । कल की अपेक्षा इसे अधिक देना पडा । भाषा की अनभीज्ञता के कारण कुछ समय में नही आता था ।

कुछ समय , फ्रान्स में बिताया । वहा की टॉवर देखी । विशषत: वहा की नाईट क्लब देखे । वहा का संगीत सुनते सुनते रात गुजारी । वहा के कुछ संगीतकार की पहचान कर ली । उनके वाद्यपर भारतीय संगीत सुनाया । मुक्त संगीत की मेजवानी हुई । पॅरिसमें " कॅली बॅर्जा " इस नाटय गृह में कुछ अदभूत प्रकार देखे । एक व्हेरायटी शो के दरम्यान परदा खुला और परदे के पिछे क्या देखा ? खडी दीवार और उसपर आडे बैठे लोग । छतपर के पाल को आदमी उलटे बैठे दिखेंगे वहा । रेल्वे का बाहुटा जैसे खडे खंबेपर आडी हलचल करता है वैसी ही हालचाल

आदमी कर रहे थे। वही दृष्टीभ्रम होना चाहीए चाहीए शायद । गुरुत्वाकर्षन शक्ती के नियम से फ्रान्स कैसे छुटेगा । आश्चर्य जनक लगा प्रकाश योजना घुमता रंगमंच , अर्धनग्न न्यृत्योकी रेलचेल । यहां भी संगीत और मद्यपान का आनंद मनमुराद लुटा।

स्पेन में ही भी कुछ समय वास्तव था। कॅस्टनरस नाम का वाद्य बजाते नाचने वाली सुंदरियो का नृत्य मैने देखा । स्पॅनिश गाणे का सुर भारजीय लोक संगीत से साम्य देखकर मै दंग रह गया । उसके कुछ आलाप हमारे महाराष्ट्रीय लावनी को जोडे तो वह विदेशी है ऐसा मालूम भी नही पडेगा । गांवी औरते ऑव्यांके अंत में एक लचकता स्वर लेते है वैसा मेरे कानो को लगा।

इस देश का वृषभ युध्द जानबुझकर देखा । वह देखकर मन दुखी हुआ जो भूलताने के लिए मै सफर कर रहा था । वह दृष्य देखकर दुः ख है ऐसा लगने लगा । उस बैल को खेलनेको मजबुर करने वाले व्यक्ती सरीखा ही मै खेल रहा था ऐसा प्रतित हो रहा था। अनेक प्रलोभन को मै टकरता गया । आखीर उसे नजदीक लाता था। वह कूर खेल देखकर मरा दिल लाल बूद होता था। खुद के मनोरंजन के लिए अच्छे आदमी जमातीने उन निरपराध जानवरो का हाल देखकर मुझे बहुत बुरा लगा ।

मुछ मुकाम स्विजरलैंड में किया । इस सुंदर देश की नविनता भूगोल के व्दारा जान गया था। आंखो का आनंद या ने क्या इस देश में अनुभव करने को मिला।

एकबार स्विजरलेंड में झुरिक यहां एक हिन्दी आदमी मिला । उसने यहा के विशेषतापूर्ण विद्यालय के दर्शन कराये । कवेलू का घर , थियटर नही की प्रतिष्ठा नही । हॉटेल नही, फिर रेस्टॉरंट नही घर के बाहर खिडकी से टिकीट लेना अन्दर जाकर बैठना । अन्दर एक बडी रुम थी । दो आडे टेबल उसनर पचास सौ स्त्री पुरुष बैठे हुये थे । अधिकतर पौढ , युवा कम घरका मालक उन्हे सौम्य मद्य का ग्रहण करने को लगाता संगीत सीखने वाले उस मालक के गले मे गीटार । उसके छेडते छेडते वह गाता था। सभी ग्राहक उसका गीत एक सूर में गाते थें । रोज नया गाणा रोज नया आनंद ।

मुझे यह रिवाज अच्छा लगा अपने देश में समुह गीत का अस्तित्व ही नही अैसा लगने लगा । इसकी मुझे ऐहसास होता था । इसप्रकार के घर पर , अनौपचारीक संगीत स्कूल अपने इथर क्यो नही निकलनी चाहीए ।

इंग्लंड मे लंडन के हवाई अडडे पर आया । तब मेरा गोवेकर वादक मित्र मुझे बोला ।

अण्णा अब हम अपने लोगों में आ गये । अब अंग्रेजी सुनाई देगी । अंग्रेजी बोलते आयेगी अपने खुद के गांव में आये सरिखा खुश हुआ । पहले कि मिले व्यक्ती को उसने अंग्रेजी में पूछा यहा नजदीक पास बार कहां है।

वह आदमी बहरे सरिखा बोला तो अंग्रेजी ओनली फ्रेंच ।

वह विदेश से आया था। उसे केवल , फेच भाषा आती थी । इंग्लंड देश में सुख से अंग्रेजी बोलने का आनंद आयेगा इसलिए बहुत जॉन बहुत खुश हुआ था।
शुरु में ही वह नरवस हुआ । हम खूब हस रहे थे ।

इंग्लंड मे हम पंधरा दिन रहे । निशा , नृत्यालय , मद्य का आस्वाद लिया । शहर में मुंबई से अलग कुछ लगा नही । जो कुछ अलग था उसका आस्वाद लिया ।

दो महिने के बाद सांताक्रूझ हवाई अड्डे पर पांव रखा । और लगा की सपना खतम हो गया । घर दार में दु:ख भूल जाऊंगा एसा लगा । वह भूल नही गीरी थी । मुंबई में आया और पुराने म:नस्थितीने देखे जाल में फस गया ।

लंडन , स्पेन कैरो-स्विजरलेंड , रोम वगैरे घुमकर हिन्दुस्थान में आया लेकिन सब का सब आनंद खतम हो गया । यहा की स्थिती थी वैसी ही ऐसा कहने के बजाय और बिगड गयी थी । रेडिओं सिलोन का महत्व बढ रहा था । पी . आर . भीडे की केस चालू थी । क्या होगा ये मालूम नही था । मां व नाना का रोष मुझपर था ही । दोस्त एक-एक करके दूर जाने लगे । और बेन के साथ भी झगडा चालू ही था । फिर से जै से थे वैसे ।

यह एक एक केरके उसे दूर करना चाहिए । उनसे दूर भागते नही बनेगा । वह तुम्हारे साथ ही आयेगा रेडिओ सिलोन याने कमर्शिअल रेडिओ । इस पर फिर पिक्चर के गीत पैसे देकर बजाते आती थी । गाणा लोक प्रिय किया जा सकता था । हमेशा पैसे देकर बजाकर हॅमर करके यह रीत शुरु हो गयी था । जैसे के सीलोन रेडिओपर जाहिरात नही दी गयी तो भी गाणे व पिक्चर नही चलने वाली ऐसी भावना हो गयी थी । म्यूझिक डारेक्टर सिलोन रेडिओ पर ॲडव्हर टाईज नही हुई तो बॅकग्राऊंड मुझिक नही देते थे ।कमाल है जो आजतक किया नही वह करने का । मुझे यह नही पटता था । खुद की ही गीत सुनने के लिये रेडिओ को पैसे देना मुझे घुस्सा आता था । इस पर कोई उपाय नही , फस्ट टेशन से मैने जीतनी दारु पी और पैसा खर्चा किया । उसके आधे पैसे से भी बहुत पॉपूलर हो सकता था । लेकिन यह हो नही सकता था । मुझे इंसल्टींग लगता था ।

अभी पी। आर। भीडे ने तो कोर्ट में ही केस की थी । वह मै छोडने वाला कौन लता पर दो लाख की फेस और मै गैरन्टर। वा ! मेरे हात में यह प्रकरण नही था । कॉप्रमाईज हुआ । केस कोर्ट में थी मै और लता कोर्ट में हाजीर रहते थे । बहुत भीड होती थी । हमें दोनो को भी कुछ समझता नही था । केस का नीकाल नगने पर समझा की फालतू ही कोर्ट का टेन्शन नही लेना चाहिए । कोर्ट में सब सही समझता है । हमें दो लाख रुपये नही देने पडे । पैसे नही भरणा पडा ।

अब मां और नाना बडाभाई उनकी इच्छा मेरे पास पैसे है । इसलए और भी पैसे देना चाहिए । मै पैसे तो दे ही रहा था । उन्हे रहने के लिए घर दिया इसके सीवा एक बडी गाडी भी उनके लिए रख्री थी । फिर भी उन्हे पैसे होना था । एक दिन मां ने कहां राम तू जीतने पैसे एक सिनेमा को लेता है ना सतने मुझे दे । मैने कहां तझे जो होना वह मै लाकर दूंगा तुझे पैसे किसलिए चाहिए । बस मां का शुरु हुआ । मुझे पुछता है मेरी सुनता नही है । ना कह कर ही काम कम हो रहा है । मां का सुनना याने क्या ? मां क्या मुझे तर्ज कैसी करनी है यह सीखा रही थी । एक बार तो मां ने कमाल करदी । भगवान , मंगलभाई व मै पुणा सुबह ८ बजे घर गये और चाय मांगा । चाय आया लेकिन उसमें दुथ नही था । मैने कहा मां जरा दुध ला तो उसने कहां तू ज्यादा के पैसे नही देता है ना इसलिए दूध बचता नही है । मुझे याद है कि मै ११० - रुपये केवल दुध के लिए देता हूँ ।

बाकी उलग ।

मै ने और लता ने एक सिनेमा निकालने की सोची । उस कंपनी का नाम " सुरेल चित्र " पिक्चर का नाम " सुरीली " सिनेमा संगित मय था। सिनेमा का मुहूर्त मेरा दोस्त अनिल विश्वास इसके हाथों हुआ ।

स्वातंत्र्य वीर सावरकर हमें आशिर्वाद देने के लिए आये थे । सिनेमा भगवान के जागृती स्टुडिओं में होने वाला था । उसके पहले अलबेला व झमेला यह दो फिल्मे भगवान के लिए की थी । अब सेटींग लगाने का और शुटींग शुरु करने का तो भगवान बोला सेटिंग लगाने को पैसे दो । मै बोला भगवान तुमने मेरे अलबेला और झमेला के कुछ भी पैसे नही दिये थे । उसमें से लेलो । भगवान बोला यह नही हो सकता वह हिसाब अलग है । बहुत बेकार लगा ।

रात को हमेशा की तरह भगवान मै मंगलभाई दारु पीते समय मै ने बोला अब मै तुम्हारे सिनेमा मे म्युझिक नही दुंगा । हम सिर्फ दोस्त रहेंगे । उसने कहां म्युझिक नही तो दोस्ती नही । काम नही करोगे तो दोस्ती क्यो ? मुझे बुरा लगा । वह पहले ऐसा नही था । अब क्या हुआ । उस दिन से हमारा बोलना बंद हुआ ।

पिछली बार लंडन जाने के पहले कुछ दिन सुबह दो लडकियां मिलने को आयी । युवा, सुविद्य, सुंदर लडकिया । पूछा क्या काम है । एक ने कहा हमारी कॉलेज मे शर्यत लगी है तुम किसी को नही मिलते है । मैने बोला मै गिलुंगाही मुझे हसी आयी । उन्हे बैठने के लिये बोला और बेन को उनके लिए चाय बोला । वह जाने के बाद मैने बेन को बोला सावधान रहना इतनी युवा छोकरी मुझे मिलाने आती है ।

यू आर इन डेंजर । उस समय बेन ने सिर्फ हस दिया । मै उसे लंडन लेकर जाने वाला था । इसलिए ख्रूश थी । रात को बैठे थे उससमय बेन बोली मेर दो ऑपरेशन होने से मुझे बच्चा नही होगा । तुम्हे लडका चाहीए । " तुम दुसरी शादी करो " मै सीर्फ हस दिया बेन के मुह से शायद नियती बोल रही थी । यह हुआ भी तो बाद में झगडे ही की ।

फिल्म लाईन के किसी भी पार्टी में मै नही जाता था । और घर में भी पार्टी नही करता था । घर मे हमेशा झ-गडे का मूडा कैसी करे पार्टी । बाहर पार्टी के समय एक दुसरे कि नीकालने के सिवा कुछ नही था । सह मुझे पसंन्द नही था घुस्सा आता था । इस प्रकार से सिनेमा लाईन से मेरा संबंध छूट रहा था । मै उनमे मिक्स नही होता था । मै अकेला था । मेरे सरिखे ने अलग रहना याने पागल होना । फिर वही पिना , एकाद सिनेमा का प्रपोजल आया तो दोस्त उसमें से मेरा नाम निकाल देते थे । क्यो कि मै उन्हे रात कि कंपनी नही दे सकता था । पाणी में रहकर मच्छी यो से मिलकर नही रहता था । मै दिल में समाधान कर लेता था । अपना काम अच्छा हुआ याने बस । इसलीए मै उनकी परवाह नहीं करता था । और कुछ दिनो के बाद उन्होने मेरी परवाह करना छोड दिया था । झर के और बाहर के तनाव से कही भी मूड नही लगता था । केवल सुबह १० से ३ और शाम को ६ से ११ बजे परमीट रुम में जाकर पिता था । कभी एअर लाइन्स होस्टेल तो की बेस्ट एन्ड हॉटेल तो कभी रिटझ । मेरा एक कॅमेरा मन दोस्त भी वहा आता था । उसे काम नही रहा था । वह भी मेरे ही सरीखा । हम दोनो ही रहते थे । वह तो और भी ग्रेट । उसका कोरास रोड पर उकाउन्टट था । ३ ते ६ के दरम्यान एकाद फेरी वह मारता था । मुझे वह कैसे तो भी लगता था । जीन्दगी में सबसे ज्यादा नर्व्हस था । कभी कभी आत्महत्या कर लेना ऐसा लगता था । लेकिन दारु के सिवा मै नही रह सकता था । उस से मुझे रिलॅक्स लगता था । और दारु पिने बाद वह बिचरा मन मै नही आता था । ऐसे दिन चल रह थे ।

ऐसे ही एक दिन दिल्ली में गये थे। २५ जनवरी वहा २६-२७ तारीख्र को दिल्ली में नॅशनल प्रोग्राम होते है । रिपब्लीक दिन का वह देखने गया । मैदान के बीच में स्टेज, सामने जनता की मारी भीड । पोग्राम याने हिन्दुस्तान के सभी नेता गण, विदेश के मेहमान । इतना सुन्दर प्रोग्राम था की , पूछो मत । सहज हि आर्टीस्ट करके बिचार आया । यहां कभी तो मेरा कार्यक्रम होगा क्या ? कभी नही होगा । भगवान ने कभी तो भी मुझे चान्स देना चाहीए यहां कार्यक्रम करने का हमारे प्यारे नेता के सामने ऐसा लगा ।

कूल मिलाकर मन कि स्थिती विचित्र थी । अपना सुख्र दुख्र किसको सुनाये मुह दबाकर बुक्को का मार ऐसे ही एक बार फिर प्यार में गीर गया । कभी मजाक समझकर तो कभी सिरीसली मै अकेला आदमी ऐसा था कि उसे अकेले मे मिलने में मुझे डर नही लगता था । नही तो डर कौन क्या बोलेगा । कौन अपमान तो नही करेगा वगैरे वगैरे उस लडकी को मैने मेरे परिस्थीतीका जायजा दिया । सब मालूम हाने पर भी वह मुझे समभालती थी । इसके साथ रहने से मेरी दारु कम हुई । डर कम हुआ । काम करने का मन हुआ । महाभयंकर वह नर्व्हसनेस गया । और एक दिन हमने शादी करने का निनर्य लिया । शादी में दो अडचण थी । वहई झोली सॉल्व्ह हो गयी । एक बेन

उसकी इन डायरेक्टली परमिशन थी । वह दुसरा याने एक प्रान्त देसा था। कि उसमें ऐसा कानून नही आया था । एक दिन वह और मै सुबह के प्लेन से उधर गया। और शाम को प्लेन से वापस आया था । मेरी शादी में दोनो शादि में लोग दो हो या तीन हरेक का नसीब होता है । मैने शादी की यह दो दोस्तो को ही मालूम बाकी किसी को मालूम नही था । मैने उसे पुना में मां के पास रखा। बिचारी दो तीन साल अज्ञातवास में ही रहती थी । आज उस बात को २३ साल हो गये ।

शादी लेकिन बाकी की तकलीफ वही ।धुस्सा आने ही वाला कितनी भी मशहूर होगी फिर भी वह औरत है ।

अपने विचित्र मनस्थिती मे मद्रास के वासन साहब का पिक्चर साइन किया। उसका बुलावा आया । वह करने मद्रास गया । उन्हे मिलने पर वासन साहब बोले रामचंद्र युवर स्वीट हार्ट हॅड फोन्ड भी ॲन्ड सेड दॅट यू डोन्ट टेक राम । आय विल गिव्ह यू एनी अदर म्यूजीक डायरेक्टर ऑन युवर टर्म्स ॲन्ड कंडीशन । दुसरी अडचणे दुर हो गयी थी । लेकिन यह मुख्य अडचण मेरे कुछ पल्ले नही पड रही थी । वासन साहब ने स्वीट हार्ट कहने पर उसे मिलने से तो सभी दिन और घटनाए याद आयी । भूतकाल में गया । उसका ऐसा हुआ अरे हां जिसके साथ शादी की उसका नाम बोलने का रह गया । उसका नाम शांता । पहले जो लडकीया मुझे मिलनेको आयी थी उसमें से छोटी ।

यह प्रकारण नही पढे तो भी लींक लगेगी । वासन कहते है रामचंद्रा तुम्हारे स्वीट हार्ट का फोन आया था और उसने कहां की राम को मत लो । मै तुम्हारे लिए कही भी म्यूझीक डायरेक्टर को काम करने को कहूंगी । विथ यूवर टर्म्स मगर तुम राम को मत लो ।

अरे मै हर चित्र करते समय उसी से गीत लेना चाहिए तभी सीनेमा करुंगा मै हर निर्माता को बोलता था । वह उस समय भी ।अमीरबाई जोहराबाई शमशादबाई-यह सभी उसकी अपेक्षा अधिक नाम कमानेवाली गायीका थी । उनके गाणे न लेकर इससे गाणा लीया जाय यह मेरी अट थी ।

मै एकदम ४६-४७ साल पीछे गया । मुझे राम कहने वाली जो-जो सीता थी उसमें से यह एक सीता मेरे जीवन में ४६-४७ या ४७-४८ साल में आयी । तारीख याद नही प्रसंग याद है ।

मेरे एक गीत का रेकॉर्डींग था । वही गा रही थी । बहुत ही अच्छी गायी । अप्रतिम के सीवा दुसरा शब्द नहीं । अपनी कलाकृती कैसी हो इसका एक व्हीजन कलाकरो के सामने होता है । यह अगर जैसा का वैसा उतरा तो उसको समझता है की यही ।बस यही उसको होना था । पहलेही वह सेंडसाँग माझं आवडतं (एक्सप्रेशन) उसमें से इसने अपने मीठे स्वर से अच्छा गाया । मुझ में का कलाकार बेहोश हुआ ।

औरतो के बारे में नही तो भी मै " फिसलूही " मै उस पर जल्दी ही प्यार करने लगा । उसकी बहुत तारीफ की । खूप मस्का लगाया और बोला " तू इतना अच्छा गाणा गाती हो कि तेरा चुमा लेने का दिल करता है । " वह खूष हुई की नही मुझे मालूम नही । " लेकिन बोली तुम्हे तो मालूम है की मेरा और हुस्नलाल का प्यार है "मै केवल उसपर ही प्रेम कर सकती हूँ । अब आई ना पंचायत ? मैने वैसे ही संभलते हुये कहा " डू नॉट मिस अन्डरस्टॅंट मी " मुझे सीर्फ तेरे उस मीठे गले का पापा लेना है ।क्या गला दिया है उपर वाले ने । मेरे गाडी से वापस आते समय उसने में मेरी रिकवेस्ट मान्य की और मुझे ओब्लाइज किया । यह बोलने की बात नही । यह हमारी शुरुवात एक मजाक के तौर पर शुरुवात की और एक दिन उसके प्रेम में फस गया । बिलकुल वन सायडेड वन वे ।बाद में हुआ क्या ? मै और भगवान बॉम्बे लॅब में एक फिल्म की ट्रायल देख रहा था । मै बोला क्या हुआ ?

वह रोती हुई बोली " हुसनलाल यह झूटा आदमी है , खराब है मै तुझसेही शादी करुंगी । "

वा यह सब मुझे जैसा चाहिए था । वैसा हो रहा था । मै बोलो हां तो तेरा और उसका जमा कैसा ? वह कह रही था । एक दिन उसने कहां की आय लव यू में एक शब्द होता है यह तुझे मालूम है क्या ?

मै बोली ।

हां लव्ह ! और उसने वाक्य पुरा किया । आय लव यू ऐसी हमारी शुरुवात मैनें कहां ।

लेकिन हां आय और यू के बीच में और बहुत से शब्द हो सकते है ।किल लव्ह किस और बहुत कुछ न छापने सरीखे होते है । वह कहती है आज मैने उसकी पत्नी देखी । वह प्रग्नंट थी । और यह कहकर फिर से रोने लगी । अब बोलो , हुसनलाल की सगी औरत दिन से इसलिए इसे घुस्सा । इतनी जेलसी । मुझे यह कहकर उसकी अपेक्षा क्या तो मै उस पर प्रेम करना चाहिए । मै भी शादी शुदा था ना । लेकिन वन वे नही । बोथ वेज " दोनो तरफ आग लगी थी बराबर " बहुत प्रेम किया । गाडी , स्टुडिओ , चौपाटी सभी तरफ ।

एक दिन मै और वह खूप रंग में थे उससमय बहुत ही मशगुल होकर " हाय हुस्सु " कहां बोंबलो । हुस्सु यह हुसनलाल का शॉर्टफॉर्म । वारे मै भी । फिर भी प्रेम कर ही रहा था । मुझे कब अक्कल आयेगी ।

इश्क नाजूक मिजाज है बेहद
अक्लका भी बोझ उठा नही सकता ।

बाद में घटी हुई बात याद आती है । फिल्म लाइन में कोई भी म्युझीशियन मरा तो उस दिन के सभी रेकॉर्डींग कॅन्सल करते है । वादक और गायक कोई भी काम पर नही जाता है । ऐसा होकर भी जीस समय

हुसनलाल मरा उस दिन यह " सीता " रेकॉर्डींग को सबसे पहिले हाजीर । यही वो हुसनलाल यह जाकारी मुझे पं ।रामनारायण सुप्रसिध्द सारंगीवाले इन्होने बताई ।

अधिकतर औरते पझेसिव्ह होती है । लेकिन यह याने बहुतही । मै उसका बंदा हुआ । यह उसके ख्याल मे आते ही उसने अधिकार बजाना शुरु किया । उसकी पहिली जीद्द शराब छोडो (दारु छोड) हो गया । यहां व गलती कर बैठी । उम्रके बारा साल से मेरा एक ही मित्र है । मुझ पर घुस्सा नही खाता की मुझको छोडता नही । मै जो उसे एक्सपेक्ट करता हूँ वह मुझे देता है । कभी भी नही बोलता नही । कुछ भी एक्सपेक्ट करता नही । वह या वे कुछ भी बोलो वह याने शराब ।

हम अपने दर्द की तौहीन कर गये होते ।

अगर शराब न होती तो मर गये होते ।

समझने लगता है तब आदमी को दो बाते नही छोडती । एक दु:ख और दुसरी शराब । इन दोनो का एकत्र करना और बिनधास्त जीना । यह औरते शादी होने के बाद प्रेम जमने के बाद ठेकेदार या मास्तर के समान रौब क्यो जमाते कौन जाने । उसने दारु छोडो बोला की मै शादी होने के बाद छोडूंगा कहता था । शादी न करने का मैने तो तय कर रखा था । मेरी भावूकता इतनी फालतू है कि पूछो मत । बहुत तकलीफ हुई । ऐसे फालतू स्वभाव से मै उसके प्यार मे पागल हो गया था । उसे भी मेरे सच्चाई का विश्वास था ।

दिल्लीकी घटना याद आती है । एक सिनेमाके रिलीज के लिए मै और वह दिल्ली गये थे । रातको वहां के डीस्ट्रीब्युटर ने पार्टी रखी थी । उसे कहां चल वह बोली तूम वहां सारे दारु पियेंगे मेरी तो इच्छा है कि तू भी मत जा ।

मैने कहा अैसा कैसा । फिल्म मेरी है । पार्टी मेरे लिये है । लगे तो जल्दी आऊंगा वह बोली जादा पीयो मत । मै बोला सीर्फ दो पेग । अैसा कह कर गया । पार्टी में दो पेग का आश्वासन भूल गया । बिचार किया दो पेग और बीस पेग क्या ? बास तो उनकी ही आयेगी । खूप पीकर सुबह पाच बजे हॉटेल में आया । टॉप मूड में था । वह रोती हूई राह देख रही थी । मुझे देखकर घुस्सा भरी । मुझे भी घुस्सा आया । बोला छट अप पांव दबा और सो गया । सुबह १० बजे उठकर देखता तो वह अभी तक पाव दबा रही थी । मुझे भी बुरा लगा । फिर उसे तकलीप नही देना चाहिए ऐसा निश्चीत किया ।

उसके एक दिन बडे गुलाल अली का गाणा तय किया था । मै जाये बगैर गाणा शुरु नही करुंगी उसने कहा था । क्या करु ? मुझे थोडी देर हो गई । सबके सब रसिक मेरी राह देख रहे थे । मै पोहचते ही वह भागती आयी और नजदीक आकर भागतेही पिछे गयी । मेरे मुंह को दारु का बास आ रहा था । चिल्लाकर बोली आजका यह दिन और तू पी कर आया है । मै भी चिल्लाया खुद के पैसो से नही पीता । खुद के बाप के पैसे से भी नही पीता । यह सुनते ही मै बेशुध्द हुई ।सब तरफ बेचैनी । उसे चक्कर आने की आदत थी । उसने जल्दी से होश में आने के लिये दो चमचे व्हिस्की उसके मुंह में डाला वह विस्कीसे जल्दी होश में आयी । मुझे बोला बास आ रही है मुंह का तूंने मुझे दारु पिलाया ? मैने हां कहा उसने मुंह में हाथ डालकर ओकारी की । केवल बांससे उसके बहुत हाल होते थे । अब मुझे लोग कहते है कि वह खूप मद्य पीती है । मै बोला यह मुमकीन नही ।वह कुछ भी करेगी लेकीन दारु नही पियेंगी । उसको लगता है दारु पीने से गलत चीडा कोई भी नही । इसलिए वह यह छोडकर कोई भी गलत बात करेगी ।वह सभी बाते दारु भी अपेक्षा अच्छी है ऐसा वह समझती है ।

हमे एक दुसरे के सीवा चैन नही होती थी । सरीखा वक्त मिला तो साथ में रहते थे । एकबार बेन कटाक्ष से बोली अजी ऐसा करना था तो कही रंग रुप नाक , आंखे देखकर तो भी करना था । क्या ध्यान है । वह शब्द लगते नही थे मुझे । उलट प्रेम का कैप अधिक बडता था । मै बिलकुल मजनुके समान बोलता था । अरे , हमारी नजरो से तो देखो और सही है की वह गाते समय बहुत ही सुंदर दिखती है ।

" दिल से उतर गयी दुनिया की सूरतें सब "

"कुछ ऐसा चढ गया है कोई मेरी नजर मे "

एक बार बेन ने आक्रमक पैत्रा लिया सीता और मै मेट्रोमें पिक्चर देखनें जा रहे थे । बेन ने हमारा पीछा किया । मेट्रो के सामने मेरी गाडी रुकती नही रुकती तो बेन आगयी उसने सीता के बाल पकडकर उसने फाड ४:५ बार थोबाड में मारा । यह बहुत ही अनपेक्षित था । बस भीड जमा हुई २०० ,३०० आदमी जमा हुये । मुझे और मेरी गाडी पहचानने वाले । जो कुछ भी अबू जाने वाली थी । वह सिर्फ मेरी अैसे मामले में मै बहुत ही डरपोक था । मैने तुरंत बेन को वहा अकेले छोडकर । लेकिन इतना होकर भी मै प्रेमधुंद में से बाहर नही हो सका । उस दिन से वह सीता बेन का कैसा बदला लेते आयेगा इसकी राह देख रही थी । मेरी लालसा उसे खुद की बडी जीत लगती थी। मेट्रो वारदान के बाद मै सके घर की वह बेन को फोन करके बोलती । तेरा पती देख मेरे यहां कैसा कुत्ते के माफिक आकर बैठा है।

एक बार बेन ने आक्रमक पैत्रा लिया सीता और मै मेट्रोमें पिक्चर देखनें जा रहे थे । बेन ने हमारा पीछा किया । मेट्रो के सामने मेरी गाडी रुकती नही रुकती तो बेन आगयी उसने सीता के बाल पकडकर उसने फाड ४:५ बार थोबाड में मारा । यह बहुत ही अनपेक्षित था । बस भीड जमा हुई २०० ,३०० आदमी जमा हुये । मुझे और मेरी गाडी पहचानने वाले । जो कुछ भी अबू जाने वाली थी । वह सिर्फ मेरी अैसे मामले में मै बहुत ही डरपोक था

। मैने तुरंत बेन को वहा अकेले छोडकर । लेकिन इतना होकर भी मै प्रेमधुंद में से बाहर नही हो सका । उस दिन से वह सीता बेन का कैसा बदला लेते आयेगा इसकी राह देख रही थी । मेरी लालसा उसे खुद की बडी जीत लगती थी। मेट्रो वारदान के बाद मै सके घर की वह बेन को फोन करके बोलती । तेरा पती देख मेरे यहां कैसा कुत्ते के माफिक आकर बैठा है।

उसके स्वभाव में यह सैतानयित । कुछ कुछ बाते इस दुनिया मे विचिद्त्र हाती है । बेन पर वह ऐसा बदला लक रही थी । लेकिन यह वक्त जीस समय रेफ्रिजरेटर यह हर एक के घर में नही रहता था । उस समय उसके रेफ्रिजरेटर की जीद पकडी । मेरे पास पैसे नही थे । मै सब पैसे बेन को देता था । मै साई प्रोडक्शन का हिस्सेदार होने की वजह से मैने ओमप्रकाश को बोला की उसने कंपनी से लना और उसे रेफ्रिजरेटर लेकर देना । बात ऐसी की कंपनी में भी पैसे नही थे । ओम बहुत हुशार था । वह बेन के तरफ गया और बोला " अण्णा को मत बोलो " कंपनी को सेट लगाने के लिए पाच हजार रुपये चाहीए । बेनने कंपनी के लिए दिया और इस ओम ने बेनने दिये हुये ।

पैसे रेफ्रिजरेटर के लिए खर्च किया । और उसके लिए रेफ्रिजरेटर लें गया। ही बात ओमने पाच छ साल बाद बतायी । आज तक तो भी यह बात बेन को और उस सीता को मालूम नही थी ।

एक बार ऐसा ही मरा उससे झगडा हुआ । मै रोने लगा । उसमें ऐसा रोने सरीखा क्या है ऐसा बोलकर हसते हुये अंन्दर उसकी मंगला नाम की सहेली बैठी थी । वहा रोते समय उस सीता की मां आयी और बोली " अण्णासाहब क्यो तकलीफ उठाते है "। इस लडकी के पास केवल गला है बाकी सब दुष्ट लडकी है । वह घीर जाने को नीकली उस समय सीता बोली जाते समय मंगला को रस्ते में छोड देना । मंगल गाडी में बैठते ही मुझसे बोली "अण्णा तुम किसके लिये रोते हो " मै उसे अच्छी तरह से जानती हूँ । बाहर तूम रो रहे थे और वह हसते हसते कह रही थी देख राम कैसा रो रहा है । और फिर हसने की । उसे ऐसा भाव दिया तो उसमें उन्माद चडता है । तुम्हारे प्रेम को उसकी ओर से कभी भी दाद नी मिलेगी ।

उसकी सहेली उपदेश करती है मेरे दोस्त भगवान , ओमप्रकाश , राजेंद्रकृष्ण भी मुझे चेतावणी दे रहे थे । वे बोलते थे यह उनमें से है जो कभी ।किसी की नही होती । खुद को बरबाद मत करो । मेरा एक दोस्त शम्स लखनवी तो बोलने का सांप और औरत जहाँ मिले उनको सिर्फ मारो , प्यार व्यार झूट है ।मै मेरे सभी दोस्तो को कहता था दोस्ती रखनी हो तो उसके साथ बुरा मत बोलो और मुझे उपदेश मत करो । मै अकेला रहा तो सब याद आता था । पिताजी का भी यही शब्द की औरत पर विश्वास मत रखो , औरत से सावधान रहना । यह याद आता था । इस पर एक ही दवाई थी ।

" यह नो पूछो कि मुझे उनकी तमन्ना क्यों है,
यह सीतम होश में रहके देखा नही जाता। "

यह दु:ख होश में होकर सहा नही जाता । इसलीए पीता था । अब मै उससे दूर-दूर जा रहा था । वह थी मेरे से दूर जा रही थी ।

मै एक दिन एक लडकी को लेकर लॅब में रेकॉर्डींग के लिए गया । रेकॉर्डींग उस सीता को गाने का था । मैने उसकी और उस लडकी की पहचान करते समय कहां इस लडकी से मै शादी करने वाला हूँ । उस समय सीता चूप रही । फिर बाद में वह एक लडके को लेकर आयी । और मेरी पहचान करके बोली " यह एक प्रिन्स है । " और तू जैसा मुझे तू या वैसे ही अब मुझे यह है । बदला लेने की यह नीच रित थी ? आखीर मुझे चाहिए था वह उसने किया । मुझसे बोलना , मिलना बंद किया । देर से क्यो न हो की बात पटी ।

" न आया हमे इष्क करना न आया ।
मरे उम्रभर और मरना न आया । "

उपर का संवाद हुकआ उस समय उसने मुझे लिखा हुआ खत याद आया । मेरे राजा तेरी ठोकरो में जमाना है । तेरे हाथो में आसमान है । तू डरता क्यों है ? तू मामूली आदमी थोडा ही है । तू बहुत बडा है । मेरा राजा भी कभी छोटा हो सकता है भला! याद रखना बहादुर बनके जिओ। बुजदिल होके रहने से मौत बेहतर होती है। यह मत भुलो की तुम महाराष्ट्र की शान हो। तुम्हारी वजह से हम लोग सर उंचा करके घुम सकते है। तुम्हारा पार्श्वसंगीत दास दिन मे होना ही चाहिए। मुझे निराश मत करो, मेरे राजा। साईबाबा का नाम लेकर काम करो। तु कभी नाकामयाब नही हो सकता। तुझपर साईबाबा का पुरा आशिर्वाद है।

राजा, खत पुरा करती हुं। आगे बढो, मेरे शेर अगर वक्त मिला तो जवाब देना और यह लिखते रहना की कितना काम होता है। मेरे ओजी को नमस्कार कहना।

सिर्फ तुम्हारी,

XX

यह उसका प्रेम पत्र है की नही मजाक, मेरे कुछ दोस्त उसे क्लिओपात्रा कहते है। वह बहुत ही महत्वाकांक्षी। वह कलाकार है, कलाकार अच्छी लेकिन आदमी के नाम पर कलंक। उसपर जब से प्रेम करने लगा

तब से आज तक कही भी नया गाना करते समय वह मेरे सामने होती थी। उसके लिए मै गाना करता हुं इसका संकोच मुझे नही था। ऐसे की किस्से है।

जमाना बडे शौक से सुन रहा था।
हमी सो गये दास्तां कहते कहते।

सन १९६२, अष्टग्रह मेरी कुंडली में आठये घर मे यह आठ ग्रह इकठ्ठा। मजा आ गया। सारे सालभर में एक भी गीत रेकार्ड नही किया। बर्सो से मै गाना करता हुं। कभी कभी एक दिन में ५-५ गाना किया। लेकिन इस पुरे साल में नौ रेकॉर्डीग, पिक्चर नही। पागल होने को आया हूं।

जुहु लायन्स क्लब का मै मेंबर था। उसके चॅरिटी ड्राइव्ह के लिए बिर्ली मोतोश्री सभागृह में कार्यक्रम दे रहा था। कार्यक्रम चालू था उस समय महेंद्र कपूर मेरे पास आया और बोला, 'इमर्जन्सी डिक्लेअर हो गयी है। युध्द वार भारत की आजादी के बाद प्रथम युध्द'

एक गाना तयार था। कवी प्रदीप ने लिखा हुआ।
बिगुल बज रहा आजादी का गगन गंजता नारो से।
मिला रही आज हिन्द की मिट्टी नजर सितारो से
जनता से नेताओं से फौजो की कडी कतारो से
कहनी है एक बात हमे इस देश के पहरेदारो से
सम्भल के रहना अपने घर में छुपे हुये गद्दारो से।

उस कार्यक्रम में वह गाना इमर्जन्सयी की वजह से फीट बैठा। सभी को बहुत ही अच्छा लगा।

डिसेंबर सात को भी एक कार्यक्रम था। उसका नाम 'समरगीत' नौशाद शंकर जय किसन बर्मन और मै हम गाना देनेवाले थे। एक भी नया सिनेमा नही। लता तो मेरे साथ गाती नही थी। कार्यक्रम तो देना ही चाहिए।

अब युध्द के गाने फिल्म साप्ताहिक में आने लगे। ऐसाही साप्ताहिक पढते समय यह गाना मिल गया। आधा फटा हुआ। शुरु की लाईन थी। वारे चाऊ एन लाई तुझको शरम न आयी। भूल गया क्या वादा अपना हिन्दी चिनी भाई-भाई। उस समर संगीत के कार्यक्रम में यह एक ही गाना ऐसा था। श्रोताओं को वह बहुत पसंद आया। तीनतीन बार वन्स मोर मिला। दुसरे सब ने बोली वह लव सॉंग थी। उसका और समर गीत का कोई संबंध नही था। इसलिए वह जादा पसंद आया होगा। मैने ही यह गाना गाया था।

इसके बाद ता।२७ जानेवारी ६३ को दिल्ली को कार्यक्रम। इस समय मदन मोहन था। मेरे आदरणीय अनिल विश्वास थे। एक भी सिनेमा मेरे पास नही। दिल्ली कार्यक्रम। मेरी ॲम्बीशन २७ जनवरी को अपने चाहते नेताओं के सामने दिल्ली को कार्यकम देने की भगवान ने सुन ली। लेकिन क्या देंगे, क्या बोलेंगे। दिल में सोच रहा था। कुछ भी सुझ नही रहा था। मुझे याद आया प्रदीप की ओर गया। बोला २७ जनवरी के लिए मुझे गाना चाहीए। 'फुकट का काम होता है तो आते हो। अब क्या करना मैने उसके लिए जो किया था वह सब भूल गया। मुझे जैसा गाना चाहिए था वैसा गाना हिन्दी में एकही कवी था, प्रदीप। मै गाना उसके तरफ से लुंगा। दिलीपकुमार यह हमारे कमेटा का चीफ था। उसने कहा की पंडितजी को सीर्फ सिनेमा के गीत सुनने है। दुसरे नही। मर गया। मेरे तरफ पिक्चर नही तो गाना कहां? इसलिए प्रदीप की ओर बार-बार जाता था। उन्हे कहता था, मांडगुलकर ने देख कैसे गाने लिखे।

'बहुत हो गये दिन अब देखने का मन चाहे जितेंगे या मरेंगे' और इस देश का संरक्षक। भारत मेरा गांव सैनिक मेरा नाम। ऐसे गाने प्रदीप को मै सुनाता था। उसे चिडाता था। वह कबुल हो गया। प्रदीप याने काम में भूत है। उसने करीब करीब सौ कडवे लिखे।

लताने इस कार्यक्रम को नही आ सकती ऐसा कहा। दिलीप मुझे हमेशा बोलता, तु कहेगा तो लता मस्ट कम। मैने कहां यह नही बोल रही तो यह नही आयेगी। मै आशा भोसले से मेरा गाना लेनेवाला हूं। नहीं तो बी मेरे साथ लता गाती नही है। वह हमेशा दुसरी ओर गाती है। शी शुड सिंग देअर सॉंग्ज नॉट माईन। वह आने को तयार नही थी। दिलीप अस्वस्थ था।

एक दिन प्रदीप का फोन आया, की लता तेरा गीत गाने के लिए तयार है। अब मै उसे नही बोलूंगा नही। फिर भी प्रदीप बोला मै थोडी देर से कहता हुं। बाद में कहा उसने लता को फोन किया था। चलेगा लता और आशा दोनो ही गायेंगे। यह करीबन ता।२१ जनरी हो सकती है।

मै कोणसे गीत गानेवाला हुं करके कमेटी की ओर से चौकशी होती थी। मै बोलता था, प्रदीप अभी गीत लीख रहा है। इधर राजकपूर बोलता था, अण्णाजी आप वही गाना गाईये, वारे चाऊ एन लाई, तुमको शरम नही आयी। अब तुम्ही बोलो, पंडितजी के सामने गाना गाना है क्या मै यह गीत गांऊ? कभी नही।

प्रदीप ने गाना लिखा, ऐ मेरे वतन के लागों तुम खुब लगा लो नारा। गाना लिखने को उसको पंधरा दिन लगे। रोज रात को ७ से १ बजे तक हम घर में बैठते थे। १०० कडवे लिखे। उसमें से ५-६ चुनने का यह भी एक दिव्य था। सभी कडवे अच्छे थे। ऐसा करते करते गाना फायनल हो गया। साधारण गाना व तर्ज १८-१९ तक कंप्लीट हुयी। मै क्या गाना दुंगा करते सभी तरफ से चौकशी शुरु हुयी। किसी को कुछ मालूम नही था। सभी म्युझीक डायरेक्टर ने रिहर्सल भी शुरु किया। सिर्फ मेरी ही रिहर्सल नही हो रही थी। कोरस लडके, लडकी, म्युझ-

ीशियन इन्हे मेरे गीत की कोई जानकारी नही थी। उसमें २४ को मै और शर्मा रेकॉर्डीस्ट दिल्ली को जानेवाले थे। वहां की साऊंड सिस्टीम देखने। तारीख़ २१ को मेरा असीस्टंट जॉनी इसे बुलाकर मै गाने की आंख़ीर की ३ लाईने लीख़कर दी। यही सिर्फ म्युझीशीयन ने बजाने का। ता।२२ को कोरस को बुलाकर केवल पहिले लाईन की तर्ज बताई। शब्द नही। ता।२३ को आशा व लता को रिहर्सल को बुलाया। लता पहले आयी फिर आशा गाना लिख़कर दिया और रिहर्सल शुरु करना तो लता ने आशा को कहां तु बोलती क्यों नही की तेरी तबीयत ठिक नही। मै आ नही सकती।

आशा मुझे हॉल के बाहर ले गयी और बोली, अण्णा, लता की इच्छा नही है कि यह गाना मैने गाना चाहिए. मै दिल्ली को नही आती. मै बोला तेरा तिकीट भी निकाला है. तुम्ही पहले गानेवाली थी प्लीज आ. वह बोली मै नही आती और वह निकल गयी. बहुत बेकार लगा. आशा बहुत अच्छी लडकी है. और अच्छा गानेवाली थी. तो अब लता अकेली रह गयी. आशा ने क्यों सुना क्या मालूम! बडी बहन का मान रख़ा होगा ख़ुद की बली देकर.

गाने के शुरु के बोल है, ऐ मेरे वतन के लोगो, तुम ख़ुब लगा लो नारा. यह शुभ दिन है हम सबका लहरा लो तिरंगा प्यारा. यह गित बाद में सॅड होता है. लेकिन शुरुवात हॅपी है. शब्द की वजह से पहले हॅपी म्युझीक चाहिए. इसलिए जाने पहले दिन जॉनी को वह हॅपी म्युझिक लिख़कर दिया. रिहर्सल लेने को कहां. लता की भी ख़ास रिहर्सल नही हुई थी. उसको मैने गाना गाकर टेप करके दिया टोर एक दिन पहले दिल्ली में आ करके कहा. और ता.२४ को मै व शर्मा दिल्ली गये. प्लेन में शर्मा मुझे पुंछता है. ये XX क्यों आर रही है. मै बोला उसको ही पुंछो.

यह सब सिक्रेट रखने का कारण याने गाने में गाने की कल्पना यह बहुत बडा भाग है. उस शब्द का और तर्ज का. मेरे मतानुसार आज तक देशभक्ती के गीत याने केवल लडाई, मारो मरजाओ, मर जायेंगे इस टाईप का है. यही गाना ऐसा है की जवानोने कितना दु:ख़ झेला, बर्फ में क्या हाल हुये, किस स्थिती में लडे और उनकी तारीफ है. अब यह कल्पना ही चोरी को गयी होती तो फिर मजाक ही ख़तम हो गया था. उसके बाद तर्ज. देशभक्ती की तर्ज भी सॅड स्वरोकी हो सकती है. यह किसी को भी पटनेवाली नही थी. इसलिए सिक्रेट.

ता.२६ को लता गायी. मै अशोक हॉटेल में था. वही उतरी. वहां उसने उस दिन बहुत रिहर्सल की. कल २७ को दोपहर में ढाई बजे कार्यक्रम.

ता.२७ को सुबह बाकी सब आये. म्युझिशीयन, आर्टीस्ट, कोरस के सभी दो प्लेन्स भर कर आये.

हॅपी म्युझिक की शुरुवात क्युट से ही थी. मनोहारी फिल्म का सब से अच्छा क्ल्युटिस्ट शुरुवात करणेवाला था.

हम सभी दोपहर में १ से स्टेडियम पर थे. बरोबर २ बजकर ३० मिनट पर पंडीतजी आये. प्रोग्राम शुरु हुआ. हम ४ म्युझिक डायरेक्टर्सने एक-एक गाना पंडितजी के सामने पेश करने का कार्यक्रम था. नंबरवारी कैसी यह मुंबई मे ही चिठ्ठी निकालकर तय हो गया था. उस में मेरा चौथा याने आख़ीरी नंबर था.

लता ने पहले "आपकी नजरोने समझा व अल्ला तेरा नाम" यह दो गाने गाये.

मेरा नंबर आया. अनाऊंस हुआ. म्युझिशियन लता और मै स्टेजपर आये. मै ख़डा रहकर वन टु बोला, लेकिन म्युझीक स्टार्ट नही हो रहा था. मनोहारी भुल गया था. उसका पहला पीस है इसलिए. ऐसा पसीना आया की पुंछो मत. फिर मनोहारी को बोला, 'यु हॅव टु स्टार्ट. फिर वन टू सब बराबर शुरु हुआ. अधिक रिहर्सल नही होने की वजह से ऐसा हुवा था. म्युझिक ख़तम हुवा. बाद में,

ऐ मेरे वतन के लागों, तुम ख़ुब लगा लो नारा. यह शुभ दिन है हम सबका लहरा लो तिरंगा प्यारा.

पर मत भुलो सिमापर वीरो ने है प्राणा गवायें. यहां तक लगा की गाना जम रहा है. ऑडियन्स मन लगाकर सुनते है. इतने मे एक प्लेन से जाने लगा. मुझे याद है वहांपर बैठे ४० हजार लोगों की गर्दने उस प्लेन की और गयी. हवाई जहाज निकल गया था. मै बहुत ख़ुष हुआ. गाना जम गया यह समझा. नही तो ४० हजार पब्लीकने ८० हजार आंख़ो ने घुस्से से उपर क्यों देख़ना?

दस मिनट का गाना, इतने सारे लोगो ने बिलकुल पिनड्रॉप सायलेंस में सुना. मेरा सारा ध्यान पंडितजी की ओर था. वह पहले थोडे टेककर बैठे और तीन-चार लाईन के बाद आगे होकर बैठे. और वर्ड बाय वर्ड सुन रहे थे. आख़ीर तो,

"जय हिंद जय हिंद की सेना" कोरस कहते समय उन्होने इधर उधर देख़ा. कहिसे आवाज आ रहा था. मै ने क्या किया था. कोरस को पडदे के पिछे रख़ा था. और शर्मा को कोरस के समय में एको देने के लिए कहा था.

जनरली कोरस को स्टेज पर रख़ते है. मैने परदे के पिछे रख़ा था. इसलिए जैसे कुछ सभी भारतीय, सभी हिन्दुस्थानी कह रहे है. जय हिंद-जय हिंदवी सेना-जय हिंद-जय हिंद की सेना. न दिख़ते आवाज आ रहा था. और इफेक्ट बहुत ही सुंदर आया. जय हिंद-जय हिंदवी सेना का गाना ख़तम हो गया. तालीयों की भरमार.

पुंछो मत सभी को गाना अच्छा लगा. उस में से मेरे लाडले पंडितजी को. नौशाद, राजकपुर, दिलीपकुमार सभी ने अभिनंदन किया. मेहबुब सहाब तो बोले आपने फिल्म लाईन की नाक उंची रख़ी. जिंदगी मे का आनंद का दिन. इसकी अपेक्षा मुझमें के कलाकार की कभी तारीफ नही होगी.

सारेगम-पधनीसा कैसा सुंदर लगा था. भगवान तेरे अनंत उपकार.

बाद में इंटरवल, पंडितजी गये. फिर से कार्यक्रम था. उस समय ऑडीयन्स बहुत कम था. मुझे गाना बोलना था. पंडितजी जाने के बाद. वा चाऊ एन लाई कहने को कोई हरकत नही.

प्रोग्राम के बाद पंडितजी के घर टी पार्टी थी. मै देर से पहुंचा तो जीनेपर पंडितजी और इंदिराजी खडे थे. दोनो ने मेरा हाथ पकडा और कहा, 'आज आपने हमको रुलाया'. मै कुछ बोल नही सका. रोते हुये दुर जाकर बैठा. फोटो निकालना शुरु था. उस बडे आदमी के साथ अपना फोटो होना ऐसा हर एक को लगता था. इसलिए हर फोटो में भीड थी. मुझे भी बुलाया. मैने पंडितजी से विनंती की की, सीर्फ तुम्हारे साथ एक फोटो चाहिए। उन्होने हां कहा और फोटो निकाला। थोडी देर से हमारे माननीय यशवंतराव चव्हाण आये। उन्होने अलिंगन किया। इस में सबकुछ आ गया। फिर उनके साथ फोटो। जहां पार्टी थी उसके पास पंडितजी की स्टडी रुम, सिटींग रुम थी। डेव्हिड इब्राहिम, राम कमलानी और पंडितजी उधर गये और उन्होने मुझे उधर बुला लिया। और उधर कोई भी नही आना चाहिए ऐसा वहां के चपरासी को कहां। उनके स्टडी रुम में गया। नीचे से लेकर तो उपर तक किताब ही किताब। एक बहुत बडा टेबल, एक खुर्ची। मै किताबों की ओर देखने लगा। पंडितजी एकदम बोले, डोन्ट थिंक, आय हॅव रिड देम ऑल और हंस दिये। बाद में सिटींग रुम में गया। और वहां बहुत बडे हाथी के दांत थे। बाद में एक चायनीज कले का घोडा था। वह बताया और कहां ऐसा घोडा सिर्फ मेरे ही पास है। जो फुटा हुआ या जोडा हुआ नही है। वह मस्त हंस दिये छोटे बच्चो के समान।

पार्टी खतम होनेपर अशोक हॉटेल में सभी वापस आये। अब मुझे अकेले को ही रुम में बैठने का था। सभी दोस्तो को कहा की मुझे अकेला बैठने का है।

सभी प्रसंग आंखो के सामने आये। पहले प्रदीप, क्या सुंदर गाना लिखा। परंतु वह दिल्ली नही आया। दुसरी आशा जिनके लिये बेचारी एक ही शब्द। बाद में तारीख १२।०१।१८ ते २७।०१।६३ तक क्या हुआ? क्या नही हुआ? जीन्दगी में सभी ॲक्सीडेंट बुरा भला। लढाई घर में घर के बाहर, व्यापार में इतनाही नही मेरे मन में भी। लेकिन क्या बरोबर क्या नही, क्या बुरा कुछ मालूम नही। कुछ भी समझा नही। कुछ भी सुझ नही रहा। इसिलीए व्हिस्की पीता था। सीग्रेट पीता था। और कही तो भी देख रहा था।

बचपन से ही सभी चित्र मेरे आंखो के सामने था। बचपन में सिनेमा देखने के लिए पानवाले के यहां चोरी की। मास्तर शंकरराव सप्रे का मार खाया।

शंकरराव सप्रे ने मुझे संगीत का श्री गणेश पढाया। उनके उपकार मै कभी भूल नही सकता। लेकिन सीनेसंगीत के मेरे और भी गुरु है। अनिल विश्वास, रामचंद्र बोरल, पंकज महिलक, गोविंदराव टेंबे, मास्तर कृष्णराव, गुलाम हैदर, खेमचंद्र प्रकाश, डी।पी।कोरगांवकर, पं।अमरनाथ इन सबका सूर सुनकर मुझे बहुत कुछ मिला। मेरा संगीत क्षेत्र की कामयाबी इस बस के जरिए है। स्कुल के प्रोग्रेस बुक पर पिताजी की झुठी सही की। मां न होकर मां के समान प्यार देनेवाली गोदूताई याद आयी। मै ब्राम्हण था इसलिए हरिजन लडकी ने शादी से इन्कार किया। दुसरे लडकी के मृत्यु के दिन गाणा रेकॉर्ड किया। प्रथम ही जपान जाते समय हुई दमछाक। कई लडकियो से प्रेम किया। बहुत बार फंस गया और औरत के उपर का विश्वास उड गया। तब एक लडकीनेही मुझे सावधान किया। क्या बात है कितना टेक्नीकल जीवन था। इश्वर ने सब दिया लेकिन,

स्वर्ग का सभी चिंतन काल के लिखनेपर
कोई विश्वास से बोलेगा क्या कोई।
समय की मुल्य हमे मालूम हुआ।
भगवान वसुधा बनाये उसमें प्रत्यक्ष स्वर्ग समान।

****